

जानना चाहिये कि प्रथम बोकानेर कलकत्ता, मुंबई में हमारी पाठशाला की तरफसे, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा दूसरा भाग छपायके प्रकाशित किया है इन दोनोंमें संपूर्ण जैनलोकके वारैमास उपयोगमें आवे ऐसा पोसा पठिकमणादि संपूर्ण धर्मकृत्य, तथा जैनलोकका जन्म विवाहादि मरण पर्यंत कुलाचार, तथा जैन इतिहास है ॥ तथापी बड़ा पुस्तक है इससे ये छोटी पुस्तक पहिली चौपटी मुजब छपायके प्रकाशित करी है, इसमें सामायक सूत्रविधि, तथा राई, देवशी प्रतिक्रमणसूत्रविधि, तथा जिनमंदर जानेंकी १० त्रिक सहित पूजन करनेकी, तथा पांच शक्रस्तव देववंदन विधि है ॥ (तथा) वृद्ध अतीचार, सातेस्मरण, भक्तामर, कल्याण मंदर बडीशांत, सेत्रुंजरास, गोतमरास, परकी, चौमाशी, संवच्छरी प्रतिक्रमण, अठपहरी चउपहरी पोसादि, संपूर्ण सूत्रविधि है आशा है कि धर्मज्ञपुरुष सर्व जैन शालाओमें ग्यानवृद्धीखाते शिक्षक लडकोंको इनाममें देकर ग्यानवृद्धीकरेंगे ॥ न्यहै जो ग्यानवृद्धीकरै, करावै, करतांकी अनुमोदनाकरै, श्री जैन लक्ष्मीमोहन पाठशाला ॥ ७। श्री मो। गणिः

अथ अनुक्रमणिका प्रारंभः ।



श्रीनवकार पंचमंगल	१	वंदण वक्तियाए	१८
प्रभातसामायकविधि	१	पुस्तरवरदीवह्ने	१९
थापना पडिलेहणके १३वोल	२	सिद्धाणं बुद्धाणं	२०
स्वमासमण गुरुवन्दना	२	वेयावच्चगराणं	२१
मुहपत्ती पडिलेहणके २५ वोल	३	सुगुरु वांदणा	२२
अंगपडिलेहणके २५ वोल	४	देवसियं आलोडं	२३
करेमिभंते सामांइयं	६	आलोयण आजूणा..	२४
इरियावही	७	वंदित्तसूत्र	२६
तस्सुत्तरी करणेणं	७	अप्पुह्ठियोमि	३२
अन्नत्थू ससियेणं	८	आयरिय उवइसाए	३४
लोगस्स उज्जोयगरे	८	सकलतीर्थ नमस्कार	३५
राई प्रति क्रमणविधि	११	परसमयतिमर	३८
जयउ सामिहि २ चैत्यवंदन	११	संसार दावानल	३९
जंकिंचि, नमोत्थुणं	१२	पार्थ्वजिन स्तुति	४०
जावंतिचेइ० जावंति.	१३	अह्हाइज्जेसु	४२
उवसगगरं पासं	१४	श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन	४३
जयवीयराय	१५	सीमंधरजिन स्तवन	४४
सव्वस्सवि देवसिय	१६	सीमंधरजिन धुई	४५
३ ठामि काउसग्ग	१७	सिद्धाचलका चैत्यवंदन	

निर्माण

— १५ —

जानना चाहिये कि प्रथम लोकाने कलकला, धूपों
 हमारी पाठशाला की तरफों, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा
 दूसरा भाग छपायके प्रकाशित किया है इन दोनोंमें संपूर्ण
 जैनलोकके बारिमास उपयोगमें आने ऐसा पोसा प्रतिक्रम-
 णादि संपूर्ण धर्मकृत्य, तथा जैनलोकका जन्म विवाहादि
 मरण पर्यंत कुलाचार, तथा जैन इतिहास है ॥ तथागी बड़ा
 पुस्तक है इसमें ये छोटी पुस्तक पहिली चौपड़ी मुजब छपा-
 यके प्रकाशित करी है, इसमें सामायक सूत्रविधि, तथा राई,
 देवशी प्रतिक्रमणसूत्रविधि, तथा जिनमंदर जानेंकी १० त्रिक
 सहित पूजन करनेकी, तथा पांच शक्रस्तव देववंदन विधि है ॥
 (तथा) वृद्ध अतीचार, सातेस्मरण, भक्तामर, कल्याण मंदर
 बडीशांत, सेत्रुंजरास, गोतमरास, परकी, चौमाशी, संवच्छरी
 प्रतिक्रमण, अठपहरी चउपहरी पोसादि, संपूर्ण सूत्रविधि है
 आशा है कि धर्मज्ञपुरुष सर्व जैन शालाओमें ग्यानवृद्धीखाते
 प्रथम शिक्षक लडकोंको इनाममें देकर ग्यानवृद्धीकरेंगे ॥
 धन्य है जो ग्यानवृद्धीकरै, करावै, करतांकी अनुमोदनाकरै,
 श्री जैन लक्ष्मीमोहन पाठशाला ॥ ७। श्री मो। गणिः

॥ श्री ॥

अथ राईदेवश्यादि प्रतिक्रमण ।

सूत्रविधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राज्ञातिक सामायिक विधि प्रारंभः ॥

॥ अथ नवकार मंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं
॥ २ ॥ एमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ णमो सबझा
याणं ॥ ४ ॥ एमो लोणं सबसाहूणं ॥ ५ ॥ प
सो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सबपावप्यणामणां ॥
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सबेसिं ॥ ८ ॥ पढमं द्रवह
मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन
वखत गुण के थापनाजोकी थापना करे, तब
तरे बोल चितवे सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पला नं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहेहैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठे गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खडा हो कैं तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

॥ इष्ठामि खमासमणौ वंदिनुं जावणिजाए निसीहिआए मढएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इष्ठकार जगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहो

भोजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥ ४ ॥ ए
म गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे
देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पगी नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें
अप्पुछित्तिमि कहे पीठें खमासमण देकें इष्ठा
कारेण संदिस्सह नगवन् सामायिक लेवा मु
हपत्ति पडिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेह, पगी इष्ठं
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥
॥ अथ मुहपत्ति पडिलेहणके पच्चीश बोल लिखते हैं ॥

॥ सूत्र, अर्थ साचो सईहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व
मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहिनी ॥ ३ ॥ मिश्र
मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं, यह चार बोल मुहपत्ति
खोलती विरीयां कहणा ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग
॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें
॥ एगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म

। ज० ॥ सामायिक ठाठं ? गुरु कहे ठाण्ह ॥

॥ पीठें इठं कही खमासमण देइ थोमो जुकी
तीन नवकार गुणी इठाकारेण संदिस्सह जग
वन् पसानकरी सामायिक दंरुक उच्चरावोजी ॥
गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पठी करेमि जंते सामाइ
यं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमिजंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चरका
मि ॥ जावनियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहे
णं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि,
तस्स जंते पम्भिमामि निंदामि गरिहामि अ
प्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठें खमासमण दे केँ इठाकारेण संदिस्सह
जगवन् इरियावहियं पम्भिमामि ॥ गुरु कहे
पम्भिमह, पीठें इठं कही ॥ इठामि पम्भिमिठं
इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, सोलिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

इष्ठाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियाव
हियं पडिक्कमामि ॥ इहं इहामि पम्किमिजं ॥
॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गम
णागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क
मणे ॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कमा सं
ताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया
॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चत्तुरिंदिया
पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अग्निहया वत्तिया लेसिया
संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया
उहविया ठाणाउ छाणं संकामिया जीवियाउ वव
रोविया ॥ तस्स मिहामि दुक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायवित्त करणेणं ॥
विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं
म्माणं ॥ णिग्घायणछाए ॥ ठामि काउसग्गं

ठं कह के वली खमासमण दे कर ॥ इत्ता० ॥
 जगवन् वेसणो ठां ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इ
 ठं कह के खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज० ॥ सि
 ज्ञाय संदिस्सां ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पगी
 इठं कह के वली खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज
 ग० ॥ सिज्ञाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर ख
 मासमण दे के खडे होकर आव नवकार कहक
 र सिज्ञाय करे, तथा जो शीतकालादि होवे तो
 खमासमण दे के इत्ता० ॥ ज० ॥ पांगरणो सं
 दिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठे इठं
 कह कर खमासमण दे कर इत्ता० ॥ ज० ॥ पां
 गरणो पडिग्घां ? गुरु कहे पडिग्घाएह ॥ पीठे
 इठं कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत
 अथवा पोसासहित आवक बांदे तो “वंदामो”
 औसो कहे, और कोई दूसरो बांदे तो, सिज्ञा
 य करेह, एसें कहे ॥ इति प्रनतिकसामायिक ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमणविधिः प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे केँ इच्छा ॥ ज०
चैत्यवंदन करूं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठेँ इच्छं क
ही जयन सामि जयन सामि इत्यादि कहे
सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकल तीर्थकर नमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयन सामिहि जयन सामिहि, रिसहसेत्तुंजि
वज्जितपहु नेमिजिण, जयन वीर सच्चरि
मंरण ॥ १ ॥ नरुअठेहिं मुणिसुवय, महु
रिपासदुह दुरिय खंरण ॥ अवरविदेहिं तिठ
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणा
गय संपइय, वंदुं जिण सबेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं पढम संघयण
॥ उक्कोसन सत्तरिसन, जिणवराण विहरंत ल
भई ॥ नवकोडीहिं केवलिण, कोडि सहस्स न
व साहु संपय ॥ संपइ जिणवर वीस मुणिं, विनं
कोडीहिं वरणाण ॥ समणह कोडी सहस्स

हे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणु ॥ तिविहेण तिदंरु
विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्टि नमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म
घणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्ला
णआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे
धारेइ जो सया मणु ॥ तस्स ग्गहरोगमारी ॥
दुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठु दूरे मं
तो ॥ तुअ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरि
एसुवि जीवा ॥ पावंति न दुक्क दोहग्गं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्पहि
ए ॥ पावंतिअविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरंठा
णं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस ॥ नत्तिप्परनि
प्परेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ नवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जंगगुरु ॥ होउ ममं तुह
पनावन जयवं जवनिबेज ॥ मग्गाणु सारि
आ इछ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ ॥
गुरुजणपूआ परवकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोत
वयण सेवणा आजव मखण्डा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥
पीठें खमासमण दे कें इठा० ॥ ज० ॥ कुसुमिण
दुसुमिण राई प्रायवित्त विसोहणठं कानसग्ग
करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इठं कह कर कुसु
मिण दुसुमिण राई पायवित्त विसोहणठं करे
मिकानसग्गं ॥ अन्नठउससिएणं ॥ इत्यादिपा
ठकह कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका
चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें कान
सग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर का
नसग्ग पारिके मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्र
गट कहे, जोरात्रिमें गुण संबंधि मोटको ५

लागो होवे तो काउसंग मांहे ॥ सागरवरगं
जीरा पर्यंत चिंतवे ॥ इती संप्रदायः ॥

॥ अथ पञ्चमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥
जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र क
हिकें वांदीयें ॥ १ ॥ खमासमण देई श्रीउपाध्या
यजी मिश्र कहि के वांदीयें ॥ २ ॥ खमासमण
देइ जंगम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपू
ज्यजीका नाम ले कें वांदीयें ॥ ३ ॥ खमासमण
देइ कें सर्व साधुजीकों वांदीयें ॥ ४ ॥ इस तरे
चार खमासमणसैं पडिकमणां ठावी गोमालीयें
बैठकें मस्तक नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मु
खे देकर सबस्सविराइय इत्यादि पाठकहे, परं
तु इठाकारेणसंदिस्सह इठं इसमाफकनकहे
॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुप्पासिय दु
च्चिठिअ इठकारेणं सन्दिस्सह जगवन् इठं ॥

(१७)

तस्स मिहामि दुक्कमं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका
देवसी के ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें एमोहुणं कहके खमा होयके ॥ करेमि
जंतें सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि ॥ इत्यादि
क पाठ कहे ॥ पीठें इहामि ठामि कानसग्गं
जो मे राइउं ॥ यह पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इहामि ठामि ॥

॥ इहामि ठामि कानसग्गं ॥ जो मे देवसिउ
अइआरो कउं ॥ काइउं वाइउं माणसिउं ॥ उ
स्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुज्जा
उं ॥ दुव्विचिंतितं अणायारो ॥ अणिठिअवो अ
सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते
॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसा
याणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥
चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ वारसविहस्स सावगध
म्मस्स ॥ जं खंनिअं जं विराहिअं ॥ तस्स

ठामि दुक्कडं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकाने
राइयं कहनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सुत्तरी० ॥ अन्नव नससिएणं कह
कर चारित्रशुद्धि निमित्त चार नवकार अथवा
एक लोगस्सका कानुसग्ग करे पारि कें दर्शन
शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए
अरिहंत चेईआणं ॥ करेमि कानुस्सग्गं वंदण
वत्तिआए ॥ इत्यादि कहनां, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्का
र वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न
वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ सि
द्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥
वट्टुमाणीए ठामि कानुस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ पीठें अन्नवूकही चार नवकार (अथवा) एक
लोगस्सका कानुस्सग्ग करकें पारकें, ज्ञानाचार

शुद्धि निमित्त पुरस्करवरदी०॥ सुअस्स जगवत्तं क
रेमि काउस्सग्गं॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते है

॥ अथ पुरस्करवरदी ॥

॥ पुरस्करवरदीवट्ठे, धायइसंमे अ जंबुद्दीवे
अ ॥ नरहे खय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि
॥ १ ॥ तमतिमिर पमलविद्धंसणस्स, सुरगण
नरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडि
अ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सो
गपणासणस्स, कल्लाण पुरकलविसालसुहावह
स्स ॥ कोदेव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स, ध
म्मस्स सार सुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे
जो पयत्तं णमां जिणमए, नंदी सया संजमे ॥
देव न्नाग सुवन्न किन्नर गण स्सप्पूअ जावच्चि
ए ॥ लोगो जठ पइठितं जगमिणं, तल्लुकनच्चा
सुरं ॥ धम्मो बहूत्तं सासत्तं विजयत्तं, धम्मुत्तरं
बहूत्तं ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स जगवत्तं करेमि
काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ

कहकर अन्नदूससिएणं कहके, आठ नवकार
अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करे. काउ
स्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो
आगें लिखेंगे. पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं
॥ लोअग्ग मुवगयाणं, एमो सया सबसिद्धाणं
॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमं
संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स
वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व ना
रिंवा ॥ ३ ॥ उज्जित सेज सिहरे, दिरका नाणं
जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्ठिं, अरिठ
नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दोय
जिणवरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअठा
सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि
समाहिगराणं करेमि काठस्सग्गं ॥ अन्नबू०
॥ इति ॥ २३ ॥

पीठें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें, तीसरे
आवश्यग सूत्र वांदणां निमित्तें मुहपत्ति पडि
ले हुं! गुरु कहै पडिलेहेअ ॥ मुहपत्ति पडिलेहे.
पीठें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर ऊना हूआ आधा नीचा
नम कर, इत्तामि खमासमणो वंदिउं जावणि
जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इत
ना पाठ कहू कर नूमि प्रमार्जन करता हूआ नि
सीहि कहकें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें सं
मासा प्रमार्जन करकें उक्कड बैठकें सावे हाथमें
मुहपत्ति ले कें, सावे कानसैं ले कें जिमणा कान
पर्यंत, निल्लाड पूंजी, मुहपत्ति आगें रख कें ति
सके मध्य जागमें गुरु चरणकी कल्पना

र कें ॥ अहोकायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कनुक
नीचा नम कर मस्तकें अंजली करकें गुरु सन्मुख
दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिजो जे किलामो ॥
इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥
इत्यादि आवर्त्तन कर कें खमा होकें पीठें पगसैं
भूमि पूंजता हूआ अवग्रहसैं बाहिर निकलकें
स्वस्थान पर आवे, उहां ॥ आवस्सियाए ॥
इत्यादि पाठ सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इहामि खमासमणो वंदितं, जावणिजाए
निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मितग्गहं निसी
हि ॥ अहो कायं काय, संफासं, खमणिजो, जे
किलामो, अप्पकिलंताणं, बहु सुत्तेण जे, दि
वइक्कंतो, जत्ता जे जवणि जां च जे, खामे
खमासमणो, देवासिअं वइक्कम्मं, आवसि
पडिक्कमामि खमासमणाणं देवासिआ
आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मि

ढाए, मणदुक्कडाए वयंदुक्कडाए कायदुक्कडाए
 कोहाए, माणाए, मायाए लोनाए, सबकालि
 आए, सब मिठोवयाराए, सबधम्माइक्कमणा
 ए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कन्, तस्स
 खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
 अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें
 आवसिआए ए पद न कहनां, अने राइयें
 राइन् वइक्कंतो, तथा चन्मासीयें चन्मासीन् वइ
 क्तो, परकीयें परको वइक्कंतो, संवठरीयें संवठ
 रीन् वइक्कंतो ॥ इसीतरें पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोचं ॥

॥ इठाकारेण संदिस्सह जगवन् देवसियं
 आलोचं, इत्थं आलोएमि जो मे० ॥ इति ॥

॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संवंधि अतीचार गुरु समक्ष
 आलोवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजूणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव
विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सा
त लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेऊकाय ॥
सात लाख वाऊ काय ॥ दशलाख प्रत्येक वन
स्पतीकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पती
काय ॥ दोय लाख वेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रि
य ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता
॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचें
द्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके
चौराशि लाख जीवायोनिमें, महारे जीवें जे
कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां
नलो जाएयो होय, ते सबे मन वचन
करी मिळामि दुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अठारे पापस्थानक आलोउं ॥

। प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अ

॥ ३ ॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥

प्पसत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहं बंधं
 विद्धेए, अइ जारे जत्त पाणं बुद्धेए ॥ पढमं व
 यस्स इअारे, पडिक्कमे ० ॥ १० ॥ बीए अणुबयंमि
 परिथूलगअलिअ वयणं विरईत्तं ॥ आयरिअ
 मप्पसत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सह
 स्सा रहस्सदारे, मोसुवएसे अकूलेहे अ ॥ बी
 यवयस्स इअारे, पडिक्कमे ० ॥ १२ ॥ तइएअ
 णुबयंमि, थूलगं परदवहरणं विरईत्तं ॥ आयरि
 अ मप्पसत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ ते
 नाहडप्पजगे, तप्पमिरूवे विरुद्धं गमणे अ ॥ कू
 रुतुल्लं कूरुमाणे, पडिक्कमे ० ॥ १४ ॥ चत्तं अ
 णुबयंमि, निच्चं परदारगमणं विरईत्तं ॥ आय
 रिअ मप्पसत्ते, इत्थं पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
 अपरिग्गाहिआ इत्तर, अणंगं वीवाहं तिअं अ
 णुरागे ॥ चत्तं वयस्स इअारे, पडिक्कमे ० ॥
 ॥ १६ ॥ इत्तोअणुबए पंचमंमि, आयरिअ मप्प
 सत्तंमि ॥ परिमाणं परिद्धेए, इत्थं पमाय प्पसं

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुज्जनो रे,
 जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम
 वाधे उठाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत
 तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार ठे रे
 ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें
 सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि
 जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
 गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनै इण परिसिद्ध ॥ ज
 व जव आगम संगथी रे, देवचंज पद लीयो रे ॥ वीर
 ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रूपज समोसरथाः जला गुणजरथा रे॥
 सीधा साधु अनंतः तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याण
 क तिहां थयांः मुगत्तें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती०
 ॥१॥ अष्टापदएक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरत्तें जराव्या
 विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलोः त्रिनुवनतिजो
 रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

सोहामणोरलीयामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती०
 नयरी चंपा निरखीयें, हीये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा
 पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धें ज
 रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहा
 यें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत विंव अनेक ॥ ती० ॥ ४
 वीकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरा अ
 ठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोय
 थंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो, अर्म
 ऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दी
 क देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥
 ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोमी स्तवो रे ॥ श्रीव
 काणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा, बावन जल
 रे ॥ रुचक कुंडल चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वत
 अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती०
 ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समय
 सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो सिद्धाचल गिर जइये

॥ सुण वहेनी ए गिरनी महिमा, आदि जिनंद इम
 जाखी ॥ चरतादिक नरपतिनें आगल, इंजादिक सह
 साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इण गिरिवारिये काल अनंते
 साधु अनन्ता सीधा ॥ जनम मरणनां दुःख गोडीने,
 अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि
 सनमुख पगला चरतां, आतम शुद्ध सुजावे ॥ कोरु
 चवांरा पातक कीधा, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥
 ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेवुंजो, जोतां लागे मीठो ॥
 तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठो रे ॥
 आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगे उज्जग करस्यां ॥
 अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सु
 गंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मार
 गनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिनवर गुण
 गातां, यात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती चमती विच
 चमतां, चव सायर निसतरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव
 नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥ ए
 रथ शुभ्र जावे फरशी, करिये निरमल काया

॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज नदे ए गिरिवर लहिये, कहे इम
 केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वठल, प्रेम वणे
 चित आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
 इति सिद्धाचल स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिंहाय लि० ॥

॥ जग चूडामणिचूत, उसजो वीरो तिलोय सिरि
 तिलन ॥ एगो लोगाइचो, एगो चरक तिहुअणस्स ॥
 ॥ १ ॥ संवठरमुसन्न जिणो, ठम्मासे वध्माण जिण
 चंदो ॥ इइ विरहिया निरसणा, जए ज्ञए नवमाणेणं ॥
 ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरि
 सजणस्स ॥ इयजीयंतकराइं, एस खमा सबसाहुणं
 ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावध्माण जिण
 चंदो ॥ नवसग्ग सहस्सेहि वि, मेरु जहा वाय गुंजाहिं
 ॥ ४ ॥ ऋहो विणीय विणन, पढम गण हरो समत्त सु
 यनाणी ॥ जाणंतो वि तमठं, विम्हिय हियन सुणइ
 सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरिण इठंति
 ॥ इय गुरुजण सुह ऋणियं, कयंजलिउडेहिं सोयवं ॥

॥ १५ ॥ संवाहणस्सरणो, तइया वाणारसीइ नयरीए ॥
 कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तह
 वि य सारायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ नयरठि
 एण इक्के ए, ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिजाणसु
 बहुयाण वि, मज्जाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसे
 हिं निज्जाइ, जणेवि पुरिसो जहिंनठि ॥ १८ ॥ किं पर
 जण बहुजाणा वणाहिं, वरमप्प सरिकियं सुकयं ॥ इह
 ञरहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्ठमाणस्स ॥ किं परियत्ति
 यवेसं, विसं न मोरेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं ररकइ वेसो,
 संकइ वेसेण दिरिक्कंमि अहं ॥ नुम्मग्गेण पडंतं, ररकइ
 राया जणवत्तं य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहठि
 उ अप्पसरिक्कं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्प
 सुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आ
 विस्सइ जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए,
 सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो,
 तीनवि सीउन्ह वायविज्जाडिउ ॥ संवठ्ठरमणसीउ,

बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग
 प्पिय चिंतिण्ण, सत्तंदवुद्धिचरिण्ण ॥ कत्तो पारत्त
 हियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थक्को निरोव
 यारी, अविणीत्तं गव्वित्तं निखणामो ॥ साहुजणस्स गर
 हित्तं, जणेवि वयणिज्जयं जहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि स
 प्पुरिसा, सणंकुमारु व्वकेइ बुद्धंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
 जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तमसुर,
 विमाण वासीवि परिवडंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, सं
 सारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुरकं, सुचि
 रेण वि जस्स दुक्कमव्विहियए ॥ जं च मरणा वसाणे,
 जव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ जवएस सहस्सेहि वि,
 वोहिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जह वंजदत्तराया, उदाइ
 निवमारुत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकत्त वंचजाए, अपरिच्च
 ताइ रायजणीए ॥ जीवासकम्म कज्जिमज्ज, जरिय ज
 रातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सुट्ठक
 राइंति पावचरियाइ ॥ जयवंजा ता सासा, पच्चाणमोहु
 इणमो ते ॥ ३२ ॥ पड्विज्जज्जणदोसे, नियए तम्मं

पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवल
नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिञ्जा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिञ्जाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमा
ईणं महामुणीणं ॥ नघकार ३, करेमि जंते ३, कहिये.
अणुजाणह चिठ्ठिजा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणय
णेहि मांडिअसरीरा ॥ बहुपडिपुत्ता पोरिसी, राससंधारए
गामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं, बाहुवहाणेण वामपा सेणं ॥
कुक्कड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जाए चूमि ॥ २ ॥
संकोइय संडासं, उवट्ठंतेय काय पडिलेहा ॥ दवाइ
नवनंगं, ऊसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज
पमानं, इमस्स देहरिसमाइ रयणीए ॥ आहारं सुवहि देहं,
सबं तिविहेण वोसरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधन, कज
हा जरकाण परपरीवान ॥ अरइरई पेसुन्नं, माया मोसं
च मिळत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइं मुरकमग्ग, संसग्ग
विग्घं चूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठा
णाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्तिमे कोवि, नाहमन्नस्स कस्सवि

॥ एवं अदीण मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ ए
 गो मे सास नं अप्पाः नाणदंसणसंजुजं ॥ तेसा मे वाहि
 रा जावाः सवे संजोगजरक्का ॥ ८ ॥ संजोग मूला
 जीवेणः पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तह्मा संजोग संबंधं सवं
 तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवोः जावज्जीवं
 सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं इयसम्मत्तं
 मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं अरिहंता मंगलं
 सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं
 चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्त
 मा साहू लोगुत्तमा केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो
 ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि अरिहंते सरणं पवज्जामि
 सिद्धे सरणं पवज्जामि साहूसरणं पवज्जामि केवलि प
 न्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्ज अ
 रिहंता मज्ज देवया ॥ अरिहंता कित्ति अत्ताणं वोनिरा
 मि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्ज मिशाय मज्ज
 देवया ॥ सिद्धाय कित्ति अत्ताणं वोनिरामित्ति पावगं
 ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्ज आयरिया मज्ज देवया ॥
 आयरिया कित्ति अत्ताणं वोनिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥

पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं
 नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिञ्जा० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिञ्जाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमा
 ईणं महामुणीणं ॥ नघकार ३, करेमि जंतो ३, कहिये.
 अणुजाणह चिठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणय
 एहि मांडिअसरीरा ॥ बहुपाडिपुत्ता पोरिसी, राईसंधाराए
 ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं, बाहुवहाणेण वामपा सेणं ॥
 कुकंड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जाए चूमि ॥ २ ॥
 संकोइय संडासं, उवट्ठंतेय काय पडिलेहा ॥ दवाइ
 उवत्तगं, ऊसासनिरुज्जणाजोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज
 पमानं, इमस्स देहरिसमाइ रयणीए ॥ आहारं सुवहि देहं,
 सबं तिविहेण वोसरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधन, कल
 हा जरकाण परपरीवान ॥ अरइरई पेसुन्नं, माया मोसं
 च मिठत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इमाइं मुरकमग्ग, संसग्ग
 विग्घं नूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठा
 णाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नठ्ठिमे कोवि, नाहमन्नस्स कस्सवि

उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ देवया ॥ उवझाया
 कित्ति अत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो
 मंगलं मझ, साहूणो मझदेवया ॥ साहूणो कित्ति अत्ता
 णं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढावि दग अगणिमा
 रुय, इक्किक्केसत्त जोणि लरकानं ॥ वणपत्तेय अणंते, दस
 चउदस जोणि लरकानं ॥ १ ॥ विगळिंदिएसु दोदो, चउरो
 चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस ल
 रकाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सबजीवे, सबे जीवाखमंतु मे
 मित्ती मे सबचूएसु, वेरं मझ न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं
 आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंभिअं सम्मं ॥ तिवि
 हेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ
 खमाविअ मइखमिअ, सबहजीव निकाय ॥ सिव्हसाख
 आलो यणह, मझहवेरन जाय ॥ ५ ॥ सबे जीवाकम्म
 वसु, चउदहरज्ज जमंतु ॥ ते मइं सब खमाविया, मझ
 वितेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति राई संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सझाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां

बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निं
 दा करतां न गणो माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर व
 लंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय
 रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडा रे, कहो केम ऊजला
 होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणो अवगुणें सहु
 भरया रे, केहनां नलीया चुए केहनां नेव रे ॥ निं०
 ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं
 सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम
 बूटक्वारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको
 तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे, कृष्णपरें थे सहु
 सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीता सिंहाय लिख्यत ॥

॥ जल जलती मिलता वणी रे, जालो जाल अपा
 र रे ॥ सुजाण शीता ॥ जाणें केसू फूलिया रे ॥ जाल,
 राता खर अझार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धाज करे शीतासती
 रे जाल ॥ शाल तण पारमाण रे सु० ॥ जदभण ॥

खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० २ ॥
 स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासैं आय रे
 सु० ॥ ३ ॥ ऊजी जाणो सुराङ्गना रे लाल, अनुपम
 रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया वणां
 रे लाल, ऊजा करे हाय हाय रे सु० ॥ जस्म हुशी
 इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
 राघव बिन बांढ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही नही कोय
 रे सु० ॥ ५ ॥ तो सुऊ अगन प्रजालजो रे लाल,
 नहीं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी
 आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥
 जाणो जह जलशुं जरयो रे लाल, जीले धरम सुधीर
 रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह
 सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ शीता धीजे ऊतरी रे लाल,
 साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको
 थया रे लाल, सगले थया ऊरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्म
 ण राम खुशी थया रे लाल, शीता शील सुरंग रे ॥
 सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जश जेहनो रे लाल, अविचल

मान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
 इति प्रतिक्रमण सिंझाय सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ मंगलीक सरणा लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरीजे हो ॥ नवियण मंगलीक सर
 णा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ न० ॥ दोल
 तनो दातार ॥ हियडे राखीजे हो ॥ न० ॥ १ ॥
 अरिहंत सिध साधां तणोहो ॥ न० ॥ केवलि जाण्यो
 धर्म ॥ ए चारुं जपता थकां हो ॥ न० ॥ दूटे आतुं कर्म
 ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ न० ॥ ए चा
 रू मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कहा हो ॥ न० ॥ ए
 चारुं तहतीक ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो
 ॥ न० ॥ समरुं वारंवार ॥ गामे नगरे चालतां हो ॥
 ॥ न० ॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥ ४ ॥ माकण
 साकण भूतना हो ॥ न० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी
 दुसमन चोरटा हो ॥ न० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हि० ॥
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते वणी हो ॥ न० ॥ जे ध्यावे
 नर नार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥ न० ॥ सरणाको

आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥
 ॥ ज० ॥ नेमो नही आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख
 सही हो ॥ ज० ॥ वाजा तणो संयोग ॥ हि० ॥ निशि
 दिन याहुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उधार ॥
 कमी नही कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ योही जगमें सार
 ॥ हि० ॥ ८ ॥ मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वर
 ते कोरु कल्याण ॥ शुद्ध मने करी समरता हो ॥ ज० ॥
 निश्चेपद निरवाण ॥ हि० ॥ ९ ॥ ए सरणाने ध्यावतां
 हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी किरती
 कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥ १० ॥
 संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पाली सेहर सुखकारा
 चौथमत्त इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गो
 पाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलीक सरणा ॥ ॐ ॥

॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥

॥ कल्याणमन्दिर सुदारमवद्यजेदि । जीता जय
 प्रदमनिन्दित मंहपद्मं । संसारसागरानिमज्जदशेषजंतु ।
 पोतायमानमग्निनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयं सुर

गुरुर्गोरिमांबुराशेः । स्तोत्रं सुविस्त्रुतमति न विनुर्विधातुं ।
 तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो । स्तस्याहमेष किल
 संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युगं ॥) सामान्यतोपि
 तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश ज्वल्यधी
 शाः । दृष्टोपि कोशिकशिथु र्यदिवादिवांधो । रूपं प्ररु
 पयति किं किलवर्म रश्मेः ॥ ३ ॥ मोहहृया दनुजवन्न
 पि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव ह्यमेत ।
 कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन ज
 लधे ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथ ज
 राशयोपि । कर्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकरस्य । बाजो
 पि किं ननिजबाहु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति
 स्वधियांबुराशिः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणा
 स्तवेश । वक्तुं कथं ज्वति तेषु ममावकाशः, जातातदेव
 मसमीक्षित कारितेयं । जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षि
 णोपि ॥ ६ ॥ आस्ताम चिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामा
 पिपाति ज्वतो रजगंति । तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदा
 वे । प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिजोपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि

त्वयिविज्ञो शिथलीभवन्ति । जंतोः कृणेन निवन्नाऽपि
 कर्मबन्धाः । सद्यन्नुजङ्गममया इवमध्य जाग । मभ्या
 गते वनाशिखान्निचंदनस्य ॥८॥ मुच्यन्त एव मनुजाः
 सहसा जिनेन्द्र । रोद्रे रूपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि । गौ
 स्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रै । चो रैरिवाशुपशवः
 प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वन्तारको जिनकथं भविनां
 तएव । त्वामुग्रहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्ग्राहति स्तरति
 यज्जल मेषनूना मन्तर्गतस्यमस्तः सकिलानुज्ञावः ॥१०॥
 यस्मिन्नहर प्रभृतयोपि हतप्रज्ञावा । सोपित्वया रतिपतिः
 कृपितः कृणेनः । विध्यापिता हुतनुजः पयसाथ येन ।
 पीतं न किं तदपि दुर्धरवान्वेन ॥ ११ ॥ स्वामिण तुल्य
 गरिमाणमपि प्रपन्ना । स्त्वांजन्तवः कथमहो हृदये दधा
 नाः । जन्मोदधिं लघुतरन्त्यतिलाववेन । चित्यो न हन्त
 महतां यदिवा प्रज्ञाव ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो
 प्रथमं निरस्तो । ध्वस्तास्तदावतकथं किलकर्मचौराः ।
 प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरापिलोके । नीलद्रुमानि
 विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो

जिन सदा परमात्मरूप । मन्वेषयन्ति हृदयां बुजकोश
 देशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य । दहस्य संज्ञ
 विपदं ननु कर्णिकाया ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश ज्वतो
 ज्विनः कृणेन । देहं विहाय परमात्मदशां ब्रजन्ति । ती
 ब्रानलाद्रुपलज्जाव मुपास्यलोके । चामीकरत्वमचिरा
 दिवधातुजेदाः ॥ १५ ॥ अन्तं सदैव जिन यस्य विज्ञा
 व्यसेत्वं । ज्वयै कथं तदपि नाशयसे शरीरं । एतत्स्वरूप
 मथ मध्यविवर्त्तिनोहि । यद्विग्रहं प्रसमयन्ति महानुज्जा
 वाः ॥ १६ ॥ आत्मामनीषिज्जिस्यं त्वदज्ञेदबुद्ध्या । ध्या
 तोजिनेन्द्रज्वतीहः ज्वत्प्रज्ञावः । पानीयमप्यमृतमि
 त्यनु चिन्त्यमानं । किं नामनो विषविकार मपाकरोति
 ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि । नूनं विज्ञो
 हरिहरादि धियाप्रपन्नाः । किंकाचकामलिज्जिरी शसि
 तोपि शंखो । नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण ॥ १८ ॥
 धर्म्मोपदेशसमये सविधानुज्ञावा । दास्तांजनोज्वति
 ते तरुण्यशोक । अभ्युज्जते दिनपतौ समहीरुहोपि ।
 किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं

विज्ञो कथमवाङ्मुखवृत्तमेव । विष्वक्पतत्यविरलासुर
 पुष्पवृष्टिः । त्वज्ञोचरे सुमनसां यदिवासुनीश, गच्छन्ति
 नूनमधएवाहि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गञ्जीरहृदयो
 दधिसंज्ञवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पी
 त्वायतः परमसंमदसंगजाजो । ज्ञव्याव्रजन्ति तरसाप्य
 जरामरत्वं ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पत
 न्तो । मन्ये वदन्ति सुचयः सुरचामरौघाः । यस्मै नतिं
 विदधते सुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्धगतयः खलु शुद्धजा
 वाः ॥ २२ ॥ श्यामं गञ्जीरगिर मुज्ज्वलहेमरत्न । सिंहा
 सनस्थमिह ज्ञव्य शिखंभिन्स्तां । आलोकयन्ति रत्नसेन
 नदन्तमुच्चैः । श्रामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥
 उज्ज्वता तव शति द्युतिमं रुजेन । लुप्तवद हविश्शोक त
 र्व्वचूव । सानिध्यतोपि यदिवा तव वीतराग । निरा
 गतां ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ ज्ञो ज्ञो प्रमाद
 मवधूय ज्ञजध्वमेन । मागत्य निर्द्वितीपुरी प्रति नार्थवा
 हं । एतन्निवेदयति देव जगद्व्रयाय । मन्ये नदन्नज्ञि
 नन्नः सुरकुण्डिले ॥ २५ ॥ उद्योति तेषु ज्ञवता नु

नेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता
 कलापकलितो वसितातपत्र । व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुव
 मभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेनप्रपूरित जगत्त्रय पिम्बितेन ।
 कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हेम रजत
 प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणजगवन्नजितोविज्ञासि ॥ २७ ॥
 दिव्यस्रजो जिन नमत् त्रिदशाधिपाना । सुत्सृज्यरत्नर
 चितानपि मौलिवंधान् । पादौ श्रयंति जवतो यदिवा
 परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वं
 नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो
 निजपृष्ठजगन् । युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव ।
 चित्रंविज्ञो यदसिकर्म विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरो
 पि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाह्वर प्रकृतिरप्य लिपिः
 त्वमीश । अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानंत्वयि
 स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्ज्ञार संचृतन ज्ञांसि
 ज्ञांसिरोपा । दुत्यापितानि कमठेन शठेन यानि । ठाया
 पेतै स्तवननाथ हता हताशो । ग्रस्तस्त्वमी ज्ञि स्यमेव
 मण्डुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जर्जदूर्जित वनोव मदभ्रजीम ।

भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्त मथदु
 स्तरवारिदध्रे । तेनैवतस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंरु । प्रालंबचृद्भयदवक्र
 विनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिज्वंत मपीरितोयः । सोस्या
 ज्वत्प्रतिज्वं ज्वदुःखहेतु ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव जुव
 नाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधितान्यकृत्याः
 जत्तयुखसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तवविजो
 जुवि जन्मज्जाजः ॥ ३४ ॥ आस्मिणपार ज्ववारिनिधौ
 सुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आकर्णिते तु
 तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्भिषधरी सविधंसमेति ॥
 जन्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया माहित मी
 हित दानदहं । तेनेह जन्मनि सुनीश पराजवानां ।
 जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥ नूनं न
 मोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वविजो सकृदपि प्रविलो
 कितोसि । मर्मा विधौ विधुरयंति हिमामनर्थाः ! प्रोद्य
 त्प्रबंधगतयः कथमन्यथै ते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपि म
 द्वितोपि निरीक्षतोपि । नूनं नचेतसि मया वि

ऋत्तया ! जातोस्मि तेन जनवांधवदुःखपात्रं । यस्मात्
 क्रियाः प्रतिफलंति नञावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ
 दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसतेवशिनां
 वरेण्य । ऋत्तयानते मयि महेश दयांविधाय ॥ दुःखांकु
 रोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं
 शरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पा
 दपंकजमपि प्रणिधानबंध्यो । बध्योस्मिचेद्भुवनपावन
 हाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रबंधविदिताखिलवस्तुसार ।
 संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा हं
 दिमांपुनीहि । सीदंत मद्यन्नयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥
 यद्य स्तिनाथ ऋवदंष्ट्रि सरोरुहाणां । ऋक्तेःफलं किम
 पेसंतति संचितायाः । तन्मेत्वदेक शरणस्य शरण्यचू
 याः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र ऋवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमा
 हेताधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोक्षसत्पुलक कंचुकि तां
 । त्वद्विब निर्मल मुखांबुज वक्षजद्वया ।
 तवविभो रचयंतिभ्रव्याः ॥ ४३ ॥ जननयन
 उदयचंद्र । प्रजासुराः स्वर्गसंपदोभुक्ता । ते विगलितमज

निचया । अचिरान्मोहं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥

इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सेतुंजरास ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद ।
 रासन्नणुं रलियामणो । सेतुंजनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवत
 च्यारसतोतरै । हुवाधनेसरस्ररि । तिण सेतुंजमहातम
 कियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया ।
 सेतुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेतुंजम
 हातमएम ॥ ३ ॥ सेतुंजतीरथ सारिषो । नहीत्रै तीरथ
 कोय । स्वर्गमृत्यु पातालमें । तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥
 नामेनवनिधिसंपजै । दीठांडुरितपुलाय । जेदंतां चव
 नयटलै । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । द
 क्षिणन्नरतमजार । सोरठदेससुहामणो । तिहां वै तीरथ
 सार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ढालपहिजी । रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ सेतुंजोनेंश्रीपुंडरीक । सिद्धोत्रकहुं तहतीक । वि
 मलाचलनेकहं परणाम । एसेतुंजैना इक्कीसनांम ॥
 ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद ५३

भक्त्या ! जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं । यस्मात्
 क्रियाः प्रतिफलंति नन्नावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ
 दुःखजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसतेवशिनां
 वरेण्य । भक्त्यानते मयि महेश दयांविधाय ॥ दुःखांकु
 रोद्धलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं
 शरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पा
 दपंकजमपि प्रणिधानबंध्यो । बध्योस्मिचेद्भुवनपावन
 हाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रबंधविदिताखिलवस्तुसार ।
 संसारतारकविजोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा ह
 दिमांपुनीहि । सीदंत मद्यन्नयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥
 यद्य स्तिनाथ भवदंष्ट्रि सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किम
 पेसंतति संचितायाः । तन्मेत्वदेक शरणस्य शरण्यभू
 याः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इत्थंसमा
 हेतधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोक्षसत्पुलक कंचुकि तां
 भजागाः । त्वद्भिब निर्मल मुखांबुज बक्षलदया ।
 संस्तवं तवविजो रचयंतिभक्त्याः ॥ ४३ ॥ जननयन
 सुदचंद्र । भजासुराः स्वर्गसंपदोभुक्ता । ते विगलितमल

निचया । अचिरान्मोहं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥ ॥ ❀ ॥

इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सेतुंजरास ॥

॥ ❀ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद ।
 रासभणुं रलियामणो । सेतुंजनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवत
 च्यारसतोतरे । हुवाधनेसरसरि । तिण सेतुंजमहातम
 कियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसरया ।
 सेतुंजैऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेतुंजम
 हातमएम ॥ ३ ॥ सेतुंजतीरथ सारियो । नहीउ तीरथ
 कोय । स्वर्गमृत्यु पाताजमे । तीरथसगलाजोय ॥ ४ ॥
 नामेनवनिधिसंपजै । दीठांडुरितपुजाय । भेदंतां भव
 भयट्ये । सेवंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंझूनामैदीपए । द
 क्षिणभरतमजार । मोरठदेससुहामणो । तिहां उ तीरथ
 सार ॥ ६ ॥ ❀ ॥ दालपहिजी । रामगिरो ॥ ❀ ॥

॥ सेतुंजोनेश्रीपुंडरीक । सिद्धोत्रकहुं तहतीक । वि
 मलाचलनेकरं परणाम । एसेतुंजैना इकवीसनांम ॥
 ॥ १ ॥ सुरगिरिने महागिरि पुन्यरास । श्रीपद ५

इंद्रप्रकाश । महातीरथपूरवेसुखकाम । ए० ॥ २ ॥ सास
 तोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्ति निलो तिणकीजैप्रक्ति ।
 पुष्पदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सु
 चद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम
 कीजै गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेतुंजैनाइकवीसनाम ।
 जपैजवेठाअपणैठांम । सेतुंजजात्रानोफल लहै । महा
 वीरजगवंतइमकहै ॥ ५ ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ सेतुंजो
 पहिलैअरै, असीजोयणपरमाण । पिहुलो मूल ऊंचपण ।
 ठबीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजै
 अरैविशाल । बीसजोयणऊंचोकह्यो । मुऊवंदणा त्रि
 काल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलो तीरथ
 राय । सोलजोयण ऊंचोसही । ध्यानधरूं चितलाय ॥
 ॥ ३ ॥ प्रचासजोयण पिहुलपण । चौथे अरै मजार ।
 ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ वार
 जोयण पंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण ऊंचो
 अठे । सेतुंजतीरथसार ॥ ५ ॥ सातहाथ ठठै अरै । पिहुलो
 तीरथजेह । ऊंचोहोस्यै सतंधनुष । सासतोतीरथएह ॥ ६
 ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥ ❀ ॥ केवल

न्यानी प्रमुखतीर्थकर । अनंतसीधाइणठामरे । अनंत
 वली सीऊसै इणठामै । तिणकरं नितपरणामरे ॥ १ ॥
 सेहुंजैसाधुअनंतासीधा । सीऊसीवलीय अनंतरे । जि
 णसेहुंजतीरथ नहीनेद्व्यो । तेगरजावासकहंतरे ॥ सेहुं०
 ॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमने दिवसै । रिषभदेव सुख
 कारे । रायणखंख समोसरचास्वामी । पूर्वनिनाणूं वा
 रे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्रचैत्रीपूनमदिन । इणसेहुंज
 गिरिअथरे । पांचकोडिसूं पुंरुकीकसीधा । तिण पुंरु
 रीक कहाये । से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर ।
 वेवेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी दिनसीधा । ति
 णप्रणमुंपरजातरे । से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवादि चउदसने
 दिन । नमिपुत्री चौसठिरे । अणसणकरिसेहुंजगिर ऊ
 पर । एसहुसीधा एकठरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम ती
 र्थकर केरा । द्रावमुने वारिखिद्धरे । कातीसुदिपूनमदि
 नसीधा । दशकोडिसुं मुनिशिद्धरे । से० ॥ ७ ॥
 पांचे पांनव इणगिरसीधा । नवनारद रिषिराये ।
 संव प्रजून गया इहां सुगतै । आठेकरमसपा ॥

से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थकर । समोसख्या गि
 रिशृंगरे । अजितशांति तीर्थकरवेऊं । रह्या चोमासोरं
 गरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवारसंघातै । थावच्चा
 सुकशाधरे । पांचसै साधुसुं सेलगमुनिवर । सेत्रुंजै सिव
 सुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेत्रुंजै
 सीधा । ज़रतेसरनें पाटेरे । राम अनें ज़रतादिक सीधा
 मुक्तितणी एवाटेरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमयालीनें ज़व
 याली । प्रमुख साधुनीकोडिरे । साधुअनंता सेत्रुंजैसी
 धा, प्रणमुंवेकरजोमिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ❀ ॥ ढालचौ
 पाईनी ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजैनाकहुंसोलउधार । तेसुणिज्यो
 सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय । जनम
 जनमना पातिकजाय ॥ १ ॥ रुषजदेव अयोध्यापुरी ।
 समवसख्या स्वामी हितकरी । ज़रतगयो बंदणनैकाज
 येनुपदेसदियोजिनराज ॥ २ ॥ जगमां है मोटा अरिहं
 तदेव । चौसठ इंद्र करैजसुसेव । तेहथीमोटो संघकहा
 य । जेहनें प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संव
 वीकह्यो । ज़रतसुणीनें मनगहगह्यो । ज़रत कहैतेकिम

पामियै । प्रनु कहै सेहुंजै जात्राकियै ॥ ४ ॥ अस्तकहै
 संघवीपदमुझ । थेआपोहुं अंगजतुझ । इंद्रैआयाअह
 तवास । प्रनु आपै संघवीपदतास ॥ ४ ॥ इंद्रैतिणवेजा
 ततकाल । अस्त सुअद्रा विहंनैमाल । पहिरावी घर सं
 प्रेडिया । सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिपअदेवनी
 प्रतिमावली । रत्नतणीदीधीमनरली । अस्तै गणधर
 घरतेडिया । सांतिक पौष्टिक सहुतिहांकिया ॥ ७ ॥
 कंकोत्रीसुंकी सहुदेस । अस्ततेडायोसंघअसेस । आयो
 संघ अयोध्यापुरी । प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥
 संघ अगति कीधी अतिवणी । संघचलायो सेहुंजाअणी
 गणधर बाहूवलकेवली । सुनिवरकोनि साथेडियाव
 ली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिधि । अस्तें साथे ली
 धीसिधि । हयगयरथ पायक परवार । तेतो कहतां नावै
 पार ॥ १० ॥ अस्तेसर संघवीकहवाय । मारगचैत्य उध
 रतोजाय । संघ आयो सेहुंजैपास । सहुनीपृगी मननी
 आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो मेहुंजराय । माणि माणक
 मोत्यांसुं वधाय । तिण ठामें रही महोठवक्रियो । न

आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजा ऊपर चढ्यो ।
 फरसंता पातिक ऊडपड्यो । केवलन्यानी पगला तिहां
 प्रणम्यारायण रूखनै जिहां ॥ १३ ॥ केवलन्यानी सना
 तनिमित्त । ईशानेंद्र आणीसुपवित्त । नदीसेत्रुंजै सो
 हामणी । नरतेंदीठी कौतुकनणी ॥ १४ ॥ गणधर देव
 तणे उपदेस । इंद्रबलिदीधो आदेस । श्रीआदिनाथ
 तणोदेहरो । नरत करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो
 प्रासाद उत्तंग । रतन तणी प्रतिमा मनरंग । नरतै श्री
 आदीसरतणी । प्रतिमाथापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदे
 वानी प्रतिमानली । माहीपूनिम थापीरली । ब्राह्मी
 सुंदरी प्रमुखप्रासाद । नरतैथाप्या नवलैनाद ॥ १७ ॥
 इमअनेक प्रतिमाप्रासाद । नरतकराया गुरुसुप्रसाद ।
 नरततणोपहिलो उधार । सगलोही जाणै संसार ॥ १८ ॥
 ढाल सिंधूको आसाजरी ॥ ❀ ॥ नरत तणें पाटै आठमें
 दंरु वीरज थयो रायोजी । नरत तणी परि संघकीयो ।
 सेत्रुंजसंघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंजैउधार सांजलो ।
 सोलमोटा श्रीकारोजी । असंख्यात बीजावालि । तेह

नकटुं अधिकारोजी । से० ॥ २ ॥ चैत्यकरायो रूपातणो ।
 सोनानो विंवसारोजी । मूलगो विंवभंमारोयो । पठि
 मदिश तिणवारोजी । से० ॥ ३ ॥ सेहुंजैनी जात्राकरी
 सफलकियो अवतारोजी । दंमवीरज राजातणो ! एवी
 जो उधारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सोसागरोपम वितिकम्या
 दंमवीरजथी जिवारोजी । ईशानेंद्रकरावीयो । एतीजो
 उधारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी । माहें
 द्रनाम उदारोजी । तिणसेहुंजैनो करावीयो । ए चोथो
 उधारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनोधणी ।
 ब्रह्मैंद्र समक्ति धारोजी । तिणसेहुंजैनो करावीयो । ए
 पांचमो उधारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंद्रनोकी
 यो । ए उठो उधारोजी । चक्रवर्तिसगरतणोकीयो । ए
 सातमो उधारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अग्निनंदन पामे नु
 एयो । सेहुंजनो अधिकारो जी । व्यंतरेंद्र करावीयो
 ए आठमो उधारोजी । से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभुत्वामिनो
 पोतरो । चंद्रशेषरनाम मल्हारोजी । चंद्रजसुराय कर
 वीयो । ए नवमो उधारोजी । से० ॥ १० ॥ शांतिनाथ

नी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्र
 धर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥११॥
 दशरथसुत जगदीपतो । सुनि सुव्रत स्वामी वारोजी
 श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से०
 ॥१२॥ पांरुवकहै अम्हेपापीया किमबूटां मोरीमायोजी ।
 कहैकुंतीसेत्रुंजतणी । यात्राकीयां पाप जायोजी ॥ से०
 ॥१३॥ पांचेपांडव संवकरी । सेत्रुंज जेव्यो अपारोजी ।
 काष्टचैत्य बिंबलेपना । एबारमो उद्धारोजी । से० ॥१४॥
 मभ्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसे
 त्रुंजैनो संवकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥१५॥
 अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पो
 र्वाडजावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से० ॥१६॥
 संवत बार तिमोत्तरै । श्रीमाली सुविचारोजी । बाहडदे
 मुहत्तै करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१७॥
 संवत तेरै इकोत्तरै । देसल हर अधिकारोजी । समरै
 साहकरावीयो । ए पनरमो उद्धारोजी । से० ॥ १८ ॥
 संवत पनर सत्यासीयै । वैशाखवदि सुन्नवारो जी ।

॥ अथ देवासि पडिकमण विधि लिख्यते ॥

प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥
 सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं! गुरु कहे करेह, पी
 ठें इच्छं कही ॥ जयतिहुअण कहे ॥ जिस
 में परकी तथा चनुमासी तथा संवत्तरीके रोज
 तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोंमें तो पांच
 गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिठाडीकी,
 एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आ
 वे हैं. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं
 तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअक्करिके
 सरि ॥ तिहुअण जण आविलंधियाण नुवणत्त
 य सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेसपास थंनणय
 पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति श्रुति वर पु
 त्त कलत्तहि, धम्म सुवन्न हिरम्म पुम्म जणनुंजहि
 रज्जहि ॥ पिरकाहि मुक्क असंखसुक्क तुह पासप

॥ ६ ॥ पठिअ अठ अणठहिठनत्तिप्ररनिप्रर,
 रोमं चंचिअचारुकाय किप्परनरसुरवर ॥ जसु
 सेवहि कमकमलजुअल परकालिअकलिमलु,
 सो नुवणत्तयसामि पास महमदन रिन्नबलु॥७॥
 जय जोइअ मणकमलनसल नय पंजरकुंजर;
 तिहुअणजण आणंदचंद नुवणत्तयदिणयर॥ज
 य मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंन
 णयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह॥८॥ बहु
 विहवणुअवणु सुणुवण्णिन्न षप्पण्हि, मुखधम्म
 कामठकाम नर नियनिय सठहि ॥ जं जायइ
 बहु दरिसणठ बहु नाम पसिद्धन्न, सो जोइ अ
 मण कमलनसलसुह पास पवद्धन्न॥९॥ नय
 विप्रल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तर
 लिअ नयणविसणुसुणुगगिरगिरकरुणया॥तइ
 सहसत्तिसरंत्ति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महवि
 ज्जविसज्जसइपास नय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं
 विअसंतनित्त पत्तंतपवित्तिय, वाहपवाह

हावजाव करुणारससत्तम॥समविसमह किंघणं
 नएइ नुविदाहुसमंतउ, इय तुहबंधवपासनाह
 मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
 विअणविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
 वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
 णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिंमइं चं
 गउ ॥ २५ ॥ अहअणविकिविजुग्गयविसेसकिविमण
 हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाहसम
 ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
 सीयह, कि अणुण तंचेव देव मामइअवहीरह
 ॥ २६ ॥ तुह पढण नहु होइ विहल जिणजाण
 उ किं पुण, हउं दुरिकउ निरुसत्तचत्तदुक्कउ उस्सु
 यमण ॥ तं मणन निमिसेण एण एउविज्जइ ल
 प्पइ, सच्चं जं नुरिकियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥
 ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पेप
 यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि
 उ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदस्सिदयास

हावजाव करुणारससत्तमा॥समविसमह किंयणं
 नएइ जुविदाहुसमंतउ, इय दुहबंधवपासनाह
 मइं पालथुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुए
 विअणविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउ
 वयारसमुज्जय ॥ दीणहदीणनिहीणजेणतुहनाह
 णचत्तउ, तोजुग्गउअहमेव पासपालहिंमइं चं
 गउ ॥ २५ ॥ अहअणविकिविजुग्गयविसेसकिविमण
 हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाहसम
 ग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह प
 सीयह, कि अणुण तंचेव देव मामइअवहीरह
 ॥ २६ ॥ तुह पढण नहु होइ विहल जिणजाण
 उ किं पुण, हउं दुरिकउ निरुसत्तचत्तदुक्कउ उस्सु
 यमण ॥ तं मणउ निमिसेण एण एउविज्जइ ल
 प्पइ, सच्चं जं नुरिकियवसेण किं नंबरु पच्चइ ॥
 ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पेप
 यासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपि
 उ ॥ अणु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयास

अवियह जीम अवुबु, अव अवणंता एत गुण
तुश तिसंज नमोबु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह के खडा हो कर अरि
हंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ति
आए० ॥ अन्नबू० इत्यादि पाठ कह के काउ
स्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक
काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हंतसिद्धा० ॥ कही एक
गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय
॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवि सु माय ॥ मृ
गनायक लंठन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदि
न सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहें. अरु दूसरे
श्रावक सर्व काउस्सग्गमें रहे थके सुनें. पीठे
एमो अरिहंताणं कह के काउस्सग्ग पारै. इसी
तरें आगे पण स्तुतिकी चारोंगाथामें जानलेनां

तस्सुत्तरी०॥अन्नद्वू०॥ इत्यादि कहि कें, आठ न
वकारका काउस्सग्ग करै, काउस्सग्गमांहेंआ
जूणा चउ प्रहर में॥(इत्यादि)पाठ मनमें चिंत
वी, एमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारिकें
प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीठें संडासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ कें तीस
रे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ?
गुरु कहे पमिलेहैह, पीठे मुहपत्ती पडिलेहि कें
वांदणां देवे, पीठें अवग्रहमांहिज ऊनो थको
इठा०॥सं० ॥ ज्ञ० ॥ देवसिय आलोउं ? औसा
कहे, तव गुरु कहे आलोएह, पीठें इठं आलो
एमि० ॥ यह पाठ कह कें अतीचार आलोवे
पीठें सबस्सवि देवसिय इत्यादिथी मांमीने इ
ठाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तव गुरु पमि
कमह, यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इठं तस्स मिठामि दुक्कमं कहि कें
संमासा प्रमार्ज्जि, प्रमार्जित भूमियें आसन पर

गराणंअन्नबू० ॥ कही कानसग्ग पारी उक्त
स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिका देवी, वारे विघनविशेष ॥ सह
संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहनिश कर
जोडी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम,
श्रीजिनलान्न सुरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन
स्तुति ॥ यह चौथी स्तुति कहि कें बैठ कें नमो
बुणं कहे, पीठें एक खमासमण दे कें श्रीआचार्य
जीमिश्र, दूसरा खमासमण दीये पीठें श्रीउपा
ध्यायजी मिश्र, तीसरा खमासमण देकर श्रीवर्त
मानआचार्यजीका नाम लेवे, चौथे खमासम
ण सर्वसाधुजी मिश्र. इसी तरें कह कर गोमा
लीयें बैठ कें मस्तक नमावी सबस्सवि देवसिय०
इत्यादि कह कर तस्स मिठामि दुक्कमं कहे, परंतु
'इठाकारेण संदिस्सह इत्थं' ए पद न कहे ॥
॥ पीठें खमेहोकर करेमि जंतं सामाइयं० ॥
मे ठामि कानस्सग्गं जो मे देवसिउ० ॥

कान्तस्सग्ग करै, पारि के पीठें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नवू ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्तस्सग्ग करै, पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें, पुकरवरदीवट्टे कहिकें, सुअस्स जगवन्न० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्तस्सग्ग करै, पीठें पारि कें, सिद्धाणं बुद्धाणं० कहिकें, वेयावच्चगराणं न कहे, पीठें सुयदेवयाए करैमि कान्तस्सग्गं अन्न वू० ॥ कही एक नवकारको कान्तस्सग्ग करै, पीठें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कान्तस्सग्ग पारिकें, एमोऽर्हत्सिद्धा० कहि कें, श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरुहुवे तो, गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कें कान्तस्सग्ग पारै, अव श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशांगी जिने

बैठकें जगवन्सूत्र जणुं ऐसा कहे तब गुरु कहे
 जणेह, पीठें इहं कही तीन नवकार गुणी, तीन
 करेमि जंते कहीने, इहामि पमिकमिजं जोमे देव
 सिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे, दू
 सरा सब सुनें, पीठें खमा हो कर अन्नुछिउमि
 आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांढ
 णां देवे, अरु अवग्रह मांहीज खमा हुवा इह
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ अन्नुछिउमि अग्नितर देवसियं
 खामेजं गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इहं खामेमिदेवसियं कहि कें, गोमाली
 यें बैठकें, वाम हाथें मुहपत्ति मुखें धरकें, दक्षि
 ण हाथ गुरु सनमुख करकें, सर्व पाठ कहे पीठें
 विधिसेती दो वांढणां देकर, आयरिय नवज्ञाए
 इत्यादि त्रण गाथा कहि कें, करेमि जंते सामाइ
 यं, इहामि ठामि कानस्सग्गं, इत्यादि कही चारि
 त्र शुद्धि निमित्तें करेमिकानस्सग्गं, अन्नवू० ॥
 कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका

कान्तस्सग्ग करै, पारि के पीठें दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नबू ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्तस्सग्ग करै, पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें, पुस्करवरदीवट्टे कहिकें, सुअस्स जगवत्तं० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पीठें पारि कें, सिद्धाणं बुद्धाणं० कहिकें, वेयावच्चगराणं न कहे, पीठें सुयदेवयाए करेमि कान्तस्सग्गं अन्न बू० ॥ कही एक नवकारको कान्तस्सग्ग करे, पीठें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कान्तस्सग्ग पारिकें, एमोऽर्हत्सिद्धा० कहि कें, श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो, गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कें कान्तस्सग्गं पारे, अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशांगी जिने

हुवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदं
 ॥ १ ॥ पीठे खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं०
 ॥ अन्नहू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्व
 ली परें क्षेत्र देवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावका
 दयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्था, रक्षंतु क्षेत्रदे
 वताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठे खमा हुवा एक नवकार कही, सं
 मासा प्रमार्जी चकडू बैठ कें ठेठे आवश्यककी
 मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेहेह. पी
 ठे मुहपत्ति पमिलेही, विधिशुं दो वांदणां देई
 इत्तामो अणसठिं० ॥ कही बैठे. पीठे गुरु एक
 स्तुति कहां पीठे. श्रावक समस्त मस्तकें अंज
 ली करिकें, एमो खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सि
 द्धा० ॥ कही ॥ एमोस्तु वर्द्धमानाय० ॥ इत्यादि

तीन स्तुति कहे, श्राविका एमो खमासमणाणं
कही संसार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म
णा ॥ तज्जया वाप्त मोक्षाय, परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः
क्रमकमलावल्लिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं
प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥
॥ २ ॥ कषायतापार्हितजंतुनिर्वृतिः करोति
यो जैनमुखांबुदोद्भूतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि
सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥
श्वसित सुरभिगंधा लीढ चृंगीकुरंगं, मुखश
शिनमजस्रं विभ्रती या विभ्रति ॥ विकच कम
लमुच्चैः सास्वचित्यप्रभावा, सकलसुख वि
धात्री प्राणभाजां श्रुतांगी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गायी कहि कें पीठे एमोहुणं
कहि कें, एक श्रावक खमासमण दर्ई कहे:—इहा

हुवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदं
 ॥ १ ॥ पीठें खित्तदेवयाए, करेमि कानुस्सगंगं०
 ॥ अन्नबू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्व
 ली परें क्षेत्र देवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावका
 दयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्था, रक्षंतु क्षेत्रदे
 वताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठें खमा हुवा एक नवकार कही, सं
 मासा प्रमार्जी उकडू बैठ कें ठठे आवश्यककी
 मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेहेह. पी
 ठें मुहपत्ति पमिलेही, विधिशुं दो वांदणां देई
 इब्बामो अणसठिं० ॥ कही बैठे. पीठें गुरु एक
 स्तुति कहां पीठें. श्रावक समस्त मस्तकें अंज
 ली करिकें, एमो खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सि
 द्धा० ॥ कही ॥ एमोस्तु वर्द्धमानाय० ॥ इत्यादि

तीन स्तुति कहे, श्राविका एमो खमासमणाणं
कही संसार दावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय, रूपद्धमानाय कर्म
णा ॥ तज्जया वाप्त मोक्षाय. परोक्षाय कुती
र्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः
क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति मंगतं
प्रशस्यं. कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥
॥ २ ॥ कषायतापादितजंतुनिर्वृतिं. करोति
यो जैनमुखांबुदोदृतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि
सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोनिराम ॥ ३ ॥
श्वसित सुरभिगंधा लीढं जृंगीकुरंगं. सुव्रत
शिनमजखं विभ्रती या विभ्रति ॥ विकच कन
लमुखैः सास्वचित्यप्रभावा, सकलमुख वि
धात्रा प्राणजाजां श्रुतांगी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन नाया कहि के पीठे एमोहणं
फरि के, एक श्रावक खमासमण दई कहे:—इह

का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन जणुं ? दूसरा खमा
समण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन
सांजलुं ? गुरु कहे, जणेह सांजलेह पीठें आस
नपर बैठ कें, नमोर्हतसिद्धा० कहि कें बसो
स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम प
रम आधारो रे ॥ ज० श्री० ॥ जिनप्रतिमा जि
न सारखीजाणो, न करो शंका काई ॥ आगम
वाणीनें अनुसारें, राखो प्रीत सवाई रे ॥ ज०
श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते
कहियें किम जाणे ॥ जूला तेह अज्ञानें जरि
या, नहीं तिहां तत्त्व पिठाणे रे ॥ ज० श्री० ॥
॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्र
मुख अनेक ॥ विविधपरें जिन जगति करंता,
पाम्या धरम विवेक रे ॥ ज० श्री० ॥ ३ ॥ जिन
प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उपगा

र ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आद्र
 कुमार रे ॥ न० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आ
 कारें जलचर, ठे बहु जलधि मजार ॥ ते देखीं
 बहुला मठादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ न०
 श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिन प्रतिमानो, प्र
 गटपणें अधिकार ॥ सूरियाचन सुर जिनवर पू
 ज्या, रायपसेणी मजार रे ॥ न० श्री० ॥ ६ ॥
 दशमे अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्यां जिन
 राज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करियें केम
 अकाज रे ॥ न० श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी स
 तीय द्रोपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो ए
 हनो अरथ विचारी, ठे ग्याता अंगें रे ॥ न०
 श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवरपूजा,
 कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य नाव विहुं चेदें
 कीनी, जीवाणिगमते साखी रे ॥ न० श्री० ॥
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ
 का मती करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी

नवलां, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० श्री०
 ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसार्ये, सरधा
 होजो सवाई ॥ श्रीजिनलान्न सुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० श्री० ॥ ११ ॥
 इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय,
 सर्व साधू वांदी. अट्ठाइ जेसु कहना, फेर खमास
 मणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसि पायबित्त वि
 शुद्धि निमित्त कानुस्सग्ग करुं ? गुरु कहे, करेह.
 पीठें इठं कहि कें देवसी पायबित्त विशुद्धि नि
 मित्तें अन्नबू० ॥ कहिके, शोले नवकार, अथ
 वा, चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पार
 कें लोगस्स कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इठाका० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ खुद्दोवद्व न्नावणठं करेमि कानुस्स
 ग्गं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कही. शोल नवका
 र अथवा चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पा

रि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सिझाय संदिस्सावं, फेर खमासमण देई सिझाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमासमण तीन दे कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ नगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कहकर थंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥ ॥ अथ श्रीथंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनी तटे, पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या नयदेवसूरि विबुधा धीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिनिर्जलैः शिव फल स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥ पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नतुनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोवृणंसें लेकें जयवीरराय सूधी कहे ॥ ॥ ठें खमासमणपूर्वक मस्तक न

नवलां, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ न० श्री०
 ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा
 होजो सवाई ॥ श्रीजिनलान सुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ न० श्री० ॥ ११ ॥
 इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय,
 सर्व साधू वांटी. अट्टाइ जेसु कहना, फेर खमास
 मणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ देवसि पायवित्त वि
 शुद्धि निमित्तं कानुस्सग्गकरुं ? गुरु कहे, करेह.
 पीठें इठं कहि कें देवसी पायवित्त विशुद्धि नि
 मित्तें अन्नवु० ॥ कहिके, शोले नवकार, अथ
 वा, चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पार
 कें लोगस्स कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इठाका० ॥ सं० ॥
 न० ॥ खुदोवदव न्मावणठं करेमि कानुस्स
 ग्गं ॥ अन्नवु० ॥ इत्यादि कही. शोल नवका
 र अथवा चार लोगस्सका कानुस्सग्ग करे, पा

(७५)

॥ श्रीस्वरतरंगह सिणगारहार जंगमयुग
प्रधान चट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सू
रिजी चारित्र चूसामणिजी आराधवा निमित्त
करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नवू० कहि कें चारन
वकारका काउस्सग्ग करे. पीठें प्रगट लोगस्स
कहे बैठ कें सावो गोसो नंचो कारि कें खमास
मण देइकें, इढा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्यवं
दन करुं जी. ऐसैं कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्साय ॥
॥ चउक्साय पस्मिहल्लूरण, दुज्जय मय
बाण सुसमूरण ॥ सरस पियंगु वन्न गय
मिय, जयउ पास नुवण तय सामिय ॥ १ ॥
मुतणु कंति करुप्पासिणिच्चउ, सोहइ फण
किरणालिच्चउ ॥ ननव जलहर तम्मिह
गिय, सो जिणपास पयठउ वंगिय ॥ २ ॥
अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च
स्थिताः आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः

“सिरि थंनणयछिय पास सामिणो०” इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रीथंनणयछिय पास सामिणो ॥

॥ सिरिथंनणयछिय पास सामिणो, से स तिब्ब सामीणं ॥ तिब्ब समुन्नय कारणं, सु रासुराणं च सबेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्वं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए नत्तीए गुण सुछिय संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंनणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीठें खरेहोके, वंदण व० ॥ अन्न० ॥ कहीं चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे पारिके प्रगट लोगस्स कहे, पीठें ॥ श्रीखरतरगढ सिणगारहारजंगम युगप्रधान नट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्त सूरिजी चारि त्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नवृ० कहि कैं, चारनवकारका काउस्सग्ग करे, पीठें प्रगट लोगस्स कह कैं.

शो, वर्द्धिनि जयदेव विजयस्व ॥ ११ ॥ स
 लिला नल विष विषधर, दुष्ट ग्रह राज रोग
 रणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरैति
 श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं
 कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
 कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु
 त्वं ॥ १३ ॥ जगवति गुणवति शिवशांति,
 तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ उमिति
 नमो नमो, ङाँ ङीं ङुँ ङः यः क्षः ङीं फुट्
 फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्स
 रं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांति निमित्तं,
 नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि
 दर्शित, मंत्रपद विदग्धितः स्तवः शांतेः ॥ स
 लिलादि जय विनाशी, शांत्यादिकरश्च न
 क्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, श्रयणोति
 नावयति वा यथा योग्यं ॥ स हि शांतिपदं या
 यात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानां ॥ विदधातु ज्ञानदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं नीलदेहं महासहं ॥ नवखंमन्निधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्तमेधो, दुरिततिमिरजानुः कल्पवृक्षोपमानुः ॥ नवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स नवतुलसततंबः, श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥ ॥ नवबीजांकुरुजनना । रागाद्याक्षयमपागताय स्याद्ब्रह्मावाविष्णुर्वाहरोजिनोवानमस्तस्मै ॥ १ ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी क
मलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता नगवती,
ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयु
तानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानां ॥ विदधा
तु नृवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रि
याः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, नूयान्नः सुखदायि
नी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं. नीलदेहं महासहं
॥ नवखंमात्रिधं पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेधो, दु
रित तिमिर ज्ञानुः कल्पवृक्षोपमानुः ॥ नवजल
निधिपोतः सर्वसंपत्ति हेतुः, स नवतु सततं वः.
श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ० ॥
॥ नवबीजांकुरुजनना । रागाद्याक्षयमपागताय
स्याब्रह्मावाविष्णुंर्वा । हरोलिनोवानमस्तस्मै ॥ १ ॥

॥ अथ पञ्चरक्षाण लिख्यते ॥

॥ नृगणसूरे नमोकार संहियं (मुंठसिं)
पञ्चरक्षाइ चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं,
खाइमं, साइमं, अन्नठणा चोगेणं, सहस्सा
गारेणं, वोसरइ. ॥ इति नवकारसीपञ्चरक्षाण ॥

॥ नृगणसूरे पोरसिं (मुंठसिं,) पञ्चरक्षाइ चउ
विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं
अन्न०, सहस्सा०, पठन्नकालेणं, दिस्ता मोहेणं,
साहु वयणेणं, महत्तरा गारेणं सबसमाहि वत्ति
या गारेणं वोसरइ ॥ इति पोरसी पञ्चरक्षाण ॥
इसीतरे, साढ पोरसी, पुरमदू, अवदू, कोपञ्च
रक्षाण जाणनो, निकेवल, पोरसिं साढपोरसिं,
पुरमदू, अवदू (वा) पञ्चरक्षाइ । इसीतरे जो
पञ्चरक्षाण करना होय सो कहना ॥ इति ॥

॥ विगयका पञ्चरक्षाण ॥

॥ विगय पञ्चरक्षाइ अन्न० सहस्सा० ले
वालेवेणं, निहरय संसिद्धेणं, उक्कित विव

पडुच्चमरिकयेणं, महत्तरा० सब० वोसरइ इति०

॥ अथ देशावगासी पच्चरकाण ॥

॥ देशावगासियं जोग परिजोगं पच्चरकाइ
अन्न० सह० मह० सबस० । वोसरइ इति ॥

॥ अथ एकाशणेंका पच्चरकाण ॥

॥ प्रथम पोरसी साढ पोरसीका पच्चरकाण,
सबस० तक बोलके, एकाशणं पच्चरकाइ तिविहं
पिआहारं, असणं खाइमं, साइमं, अन्न० ।
सह० । सागारी आगारेणं, आउंटण पसारेणं,
गुरु अन्नुछाणेणं, मह० । सब० वोसरइ इति ॥

॥ अथ आंबिलका पच्चरकाण ॥

॥ प्रथम पोरसी, साढ पोरसी का पच्चरकाण
करावे, पीठे आयंबिलं पच्च० रकाइ०, अन्न, सह०
लेवा, गिह०, उरिकत्त०, पडुच्च०, मह०, मव०
एकाशणं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं०, इत्या
दि एकाशणेंका पच्चरकाण बोले इति० ॥ इसीतरे
निवीका पच्चरकाण करावे, निवीमें आंबिलके

॥ इति दश पञ्चरकाणः ॥ पञ्चरकाण, आपकरे तो अंतमें बोसराभि कहै ॥ और दूसरेकों करावै तो बोसरइ कहै ॥

॥ अथ पञ्चरकाण पारणकी विधिः ॥

खमासमाण देके इरियावही पम्किमें, फिर खमासण देके इठाका० पञ्चरकाण पारवा मुह, पत्ती पम्किहे फिर इठामी, इठाका० कहके अमु क पञ्चरकाण पारुं यथा शक्ति, अमुक पञ्चरकाण पारियुं, तहत्ति कहके एक नवकार गुणी, अमु क पञ्चरकाण फासियं, पालियं सोहियं तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जंचन आराहियं, तस्समि ञामि दुक्कसं कही चैत्यवंदन करे, क्षणेक सिशा य करै, पीठे यथा संजवे अतिथि संविजाग करी पाणीपीवै ॥ इति पञ्चरकाण पारणविधिः ॥

॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य (तथा) देव वंदन नाण्यसैं मंदर जाणेकी पूजन करनेकी विधिः ॥

॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घन्टी रात्ररहते

संबंधी कुठनी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी निस्सही,) प्रदक्षिणा तीनदिने पीठे कहै । जिन मंदिरमें फूटा टूटा ठीककरानेकी सारसंज्ञा ल रक्खीथी सोजीगै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल जाव पूजा करै । पिण द्रव्यपूजा न करै ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥

॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंवकों पंचांग मिलाके, तीन बेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्रभूकी अंग १ । अग्र २ । जाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अबनिस्सही किये पीठे । कृत्य, अकृत्य तथा पूजा बिधि, संक्षिप्त लिखतेहैं ॥ निस्सही किये पीठे मनो गुप्ती, बचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै पांचों इंद्रियांको बशमें रक्खै । गमनां गमनमें

उपयोगी रहै। गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रखै । कुठनी देव कार्यकों ठोसके ओर कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि संपूर्ण विकथा ठोसै । जन्म (ओर) कर्मके, अनुगत वचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिकका किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलैकों गोला (इत्यादि वचन) नबोलै॥ निस्सहीकिये पीठे, जिन मंदिरमें धर्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलनाचा हिये ॥ (जिसने) मन, वचन कायाके, खोटै व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासे कियाहे उसके नावसे निस्सही होय (ओर) जिसने दूषणका त्याग न कियाहे । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके, आठतहरके उज्ज्वल वस्त्रसे मुखकोश बांधे । धूपादिकसे -

ग अपना सुद्ध करै । जावसें, दूसरी निस्सही
 कहते, मुलगंजारैमें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त
 पूजा करै । पूजाकरते हुए, शरीरमें खाज नखूणें
 खेल खंखार न करै । निक्केवल जगवानकी स्त
 वनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पं
 चामृतसें स्नात्र करावै । सुकमाल अन्ना कोमल
 सुगंध युक्त वस्त्रसें जगवानका अंगलूहै । कपूर
 कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदनका विलेपन
 करै ॥ सुन्नवर्ण, सुन्नगंध युक्त, जीवादि रहित,
 निर्दोस । गुलाब, चंपा चंपेली, केवरा, जाई,
 जुई, मोगरादिक पुष्पोंसें पूजा करै । अष्टांग धू
 प अगरबत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करै । अखंरु
 नज्जल अक्षतोंसें प्रभुके सन्मुख अष्ट मंगली
 क लिखै ॥ दर्पण १ । नद्रासन २ । वर्द्धमान
 सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । मन्त्रयुग ५ । क
 लश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । (ऐसे)
 अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंसे अ

ष्ट मंगलीक पूजै । सुंदर कुंकम मिश्रित चंद
 नसैं हृथोदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अन्ना खा
 द्य फल चढावै । (इत्यादि) पूजाकी विधि, आ
 रती पर्यंत । राय प्रशोणी, ग्याताधर्म कथा, जी
 वाग्निगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये सुजब करै (पी
 ठे) अंतरंग प्रभुके सन्मुख नाटक करै ॥
 (जैसे) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंने (तथा)
 उदाई राजाकी राणी प्रजावतीनें द्रोपदीनें ना
 टक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें
 अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र
 उपार्जन किया (तैसें) प्रभुके सन्मुख शंकारहि
 त होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥

(अब) जल चंदन पुष्पादिकसैं पूजा
 करै (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभुके सन्मुख
 नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥
 प्रभुके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाट
 कादिक करै (सो) प्राव पूजा ॥ २

ग अपना सुद्ध करै । जावसैं, दूसरी निस्सही कहते, मुलगंजारैमें प्रवेश करै । जयणा संयुक्त पूजा करै । पूजाकरते हुए, शरीरमें खाज नखूणें खेल खंखार न करै । निकेवल जगवानकी स्त वनामें चित्त रखे । प्रथम सुगंधयुक्त जल पं चामृतसैं स्नात्र करावै । सुकमाल अढा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसैं जगवानका अंगलूहै । कपूर कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदनका विलेपन करै ॥ सुजवर्ण, सुजगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस । गुलाब, चंपा चंपेली, केवरा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पोंसैं पूजा करै । अष्टांग धूप अगारवत्ती खेवै ॥ मंगलदीप करै । अखंरु नज्जल अक्षतोंसैं प्रज्जुके सन्मुख अष्ट मंगली क लिखै ॥ दर्पण १ । जद्रासन २ । वर्द्धमान सरावसंपुट ३ । श्रीवत्स ४ । सन्नयुग ५ । कलश ६ । स्वस्तिक ७ । नंदावर्त्त ८ । (ऐसे) अष्ट मंगलकी रचना करै । पंच वर्ण फूलोंसे अ

ष्ट मंगलीक पूजै । सुन्दर कुंकम मिश्रित चंद
 नसें हत्थोदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अढा खा
 द्य फल चढावै । (इत्यादि) पूजाकी विधि, आ
 रती पर्यंत । राय प्रज्ञेणी, ग्याताधर्म कथा, जी
 वाभिगमादि, सिद्धांतोंमें लिख्ये मुजब करै (पी
 ठे) अंतरंग भक्तोंसें प्रभूके सन्मुख नाटक करै ॥
 (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा)
 उदाई राजाकी राणी प्रभावतीनें द्रोपदीनें ना
 टक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें
 अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थकर गोत्र
 उपार्जन किया (तैसें) प्रभूके सन्मुख शंकाग्रहि
 त होके । उत्तम पुरब नाटक करै ॥

(अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा
 करै (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख
 नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अन्न पूजा ॥ २ ॥
 प्रभूके सन्मुख शक्रवत्वादि गीत गान नाट
 कादिक करै (सो) भाव पूजा ॥ २

यह द्रव्य पूजाका विचार गञ्जित चोथा
 त्रिक कहा ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ती
 न अवस्था विचारणी ॥ पिंरुस्थ (१) पदस्थ
 (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंरुस्थ अवस्था
 के तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था
 ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अ
 वस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था
 निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपा
 तीत अवस्था कहतेहै ॥ (अबठछात्रिक) तीन
 दिशा ढोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्द्ध १ ॥
 अध २ ॥ तिरगी ३ ॥ दहणी । बांइ । पिठाडी ।
 निजर नही करै ॥ (अब सातमात्रिक) तीन वे
 र धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥
 (अब आठमा त्रिक) ॥ वर्णादिक तीन संप
 दाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शु
 द्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखै
 (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्र-

तिमांका रखवै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ (अब
 नवमात्रिक) ॥ तीन मुद्राकरनी ॥ जोग मुद्रा
 १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इ
 समें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म को
 शाकारै । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी
 । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ कावसग्ग
 मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका
 जोडा तिस आकार हाथ रखना । (सो) मुक्ता
 शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासैं प्रणिधान जय वी
 यराय ० इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ प्र
 णिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मु
 नि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥
 इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसं
 तो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान
 १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण
 तिदंरु विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणि
 धान ॥ जय वीयरायसैं (लेकें) आज्ञवम

यह द्रव्य पूजाका विचार गञ्जित चौथा
 त्रिक कहा ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ती
 न अवस्था विचारणी ॥ पिंमस्थ (१) पदस्थ
 (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंमस्थ अवस्था
 के तीन जेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था
 ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अ
 वस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था
 निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपा
 तीत अवस्था कहतेहै ॥ (अबठठात्रिक) तीन
 दिशा गोडके प्रभूके सामने निजर रखै । उर्द्ध १ ॥
 अध २ ॥ तिरगी ३ ॥ दहणी । बांइ । पिठाडी ।
 निजर नही करै ॥ (अब सातमात्रिक) तीन वे
 र धरती प्रमार्जकै । उस ठिकाणें चैत्यबंदन करै ॥
 (अब आठमा त्रिक) ॥ वर्णादिक तीन संप
 दाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शु
 द्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रखै
 (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्र-

तिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ (अब
 नवमात्रिक) ॥ तीन मुद्राकरनी ॥ जोग मुद्रा
 १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इ
 समें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म को
 शाकरै । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी
 । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ कानसगग
 मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका
 जोडा तिस आकार हाथ रखना । (सो) मुक्ता
 शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासैं प्रणिधान जय वी
 यराय ० इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ प्र
 णिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मु
 नि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥
 इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसं
 तो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान
 १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण
 तिदंरु विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणि
 धान २ ॥ जय वीयरायसैं (लेकैं) आन

खंभा तक । प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ (ऐसे
 दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥ (अब पांच
 अग्निगमन साचवणोंका दूसरा द्वार कहतेहैं)
 ॥ सचित्तद्रव्य कुशमादिक अपनोंपास होय, उ
 सकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह
 मुगट, उत्र, खड्ग, चामर, पादुका, अचित्त व
 स्तु गोमना । आचूषण प्रमुख पहयारखना २।
 मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग क
 रना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही (नमो भुवण वं
 धुणो) ऐसैं नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ए दूसरा
 द्वार कहा ॥ (अब तीसरा द्वार दोदिशीका) पु
 रष दहणी दिशा बैठा । जगवंतकों बांदि ॥ स्त्री,
 बांइ दिश बैठके जगवंतकुं बांदि ॥ (अब चौथा
 द्वार तीन अग्निग्रह) अग्निग्रह देव बांदिणांमें
 कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर बैठके देव बां
 दि १ ॥ (मध्यम) नव हाथसे उपरांत बैठके
 देव बांदि २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके

हैतु सिद्धा० तक कहके वसो स्तवन आवे सो
 कहे, पीठे जय वीधराय कहके फिर पांचमी
 वेर नमोहुणं सबे तिविहेण० तक् कहै, इति
 पांच शक्रस्तवे देव वंदन विधि, ॥

॥ अथ दादाजी स्तवन ॥

सद्गुरु करुणा निधान राखोलाजमेरी स०॥
 ॥ टेर ॥ जैजै जिनकुशल सूरि, समरत हाजर
 हजूर, महकतजिम जसकपूर महमाजगतेरी ॥
 स० ॥ १ ॥ जापर तुमहो दयाल, ठिनमें कर
 दो निहाल, संकटकों चूरदेव, दोलतकी डेरी ॥
 स०॥२॥ तुमहो सुरतरुसमान, वंछित फलदेवो
 दान । सेवकों दीनजाण मेढो भवफेरी ॥ स०
 ॥ ३ ॥ सरण आयेकी राखो लाज, वंछित सब
 पूरोकाज, हरखचंद सरणआए महमासुनतेरी
 ॥ ४ ॥ इति ॥ पुनः ॥ कुशल गुरु देवके दर
 शनः मेरानिजहोतहे परशन । जगतमें अ
 मो कोई देखा नयन भर जोई ॥

विरुद्ध नूमंरुले गाजे । फरसतां पापसहु जाजे
 । पूजतां संपदा पावे । अचिंती लब्धि धरिआ
 वे ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहुंकेता । मुजेही
 ये ग्यान नहिं एता । लालचंदकी अरज
 सुणलीजे । चरणकी भक्ति मोहि दीजे ॥ ३ ॥
 राजैथुंन ठोर ठोर, ऐसो देवनहिं ओर, दादो
 दादो नामसें, जगत्र जश गायोहै ॥ आपणैही
 भाव आय, पूजै लरक लोकपाय प्यासनकों र
 नमांह, पाणी आन पायोहै ॥ बाट घाट शत्रु
 दाट हाट पुरपट्टणमें देवगेह नेहसुं कुशल वर
 तायोहै । धरमशीह ध्यानधरै सेवकां कुशलकरै
 साचो श्रीजिन कुशलसूरि नामयुं कहायोहै ॥ १ ॥
 मन मोहन पारस मिल्यो । मोहनगुण सुखकंद ॥
 मोहन मूरति देखके । मोहन चित आनंद ॥ १ ॥
 पारश प्रभुके नामसें । सहु संकट मिट जाय ॥
 ईति उपइव जय टले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ २ ॥
 ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥

दर्शनाद्भुरितध्वंसीः वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजना
त्पूरकः श्रीणां जिनः साक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति
जिन स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबवत्पादं सुविशाल
लोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपङ्कजं, नमामि अक्त्या
ऋषभं जिनोत्तमम् ॥ १ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथः सेवो शिर नामी ॥
कंचन वरण शरीर कांतिः अतिशय अन्निरामी ॥
अचिरा अंगज विश्वसेनः नरपति कुलचंद ॥ मृगलंघन
धर पद कमलः सेवे सुरचंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी
ए, जास अलंभित आण ॥ एक मनं आराधतां ल
हियें कोडि कल्याण ॥ २ ॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथ स्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथः जिनवर जयवंत ॥ ५

वकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्र विजय
 शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम
 शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लहयुं
 ए, अमृत पद अजिराम ॥ तास कृमा कल्याण गणि,
 अहनिशिकरत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥
 नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित
 पूरण कल्प साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोडी पुर
 स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिजुवन पति त्रेवी
 शमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहतुं,
 प्रगटे परम कल्याण ॥ ४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंडु जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥
 जन्म जरा मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसि
 धारथ तात मात, त्रिशला तनु जात ॥ सोवन
 वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात ॥ अमृत रूपें
 राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमा प्रमुख क

ल्याण गणिः आपो करि सुपसाय ॥ ५ ॥ इति
श्रीमहावीर स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाहिकादि पडिकमणविधिः लि० ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडि
कमी ॥ १ खमासमण देई देवसी आलो इयं
पडिकंता ॥ इठा० ॥ सं० ॥ न० ॥ पहिय सुह पत्ति
पडिलेहुं? चउमासीए चउमासीय सुहपत्ति- संवठ
रीयें संवठरी सुहपत्ति पडिलेहुं? एम कहे. पीठें गुरु
कहे. पमिलेहेह ॥ पीठें इठें कहे. दूजी खमासमण
देइ. सुहपत्ति पडिलेही. वांदणां देई. तिहा परकीमें
परको वइकंतो ॥ चउमासीमें० चउमासीठ वइ
कंतो. ॥ संवठरीमें संवठरो वइकंतो ॥ एम यथायोगें
कहे ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवमिने स्थानिकें

वकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्र विजय
 शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम
 शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लहयुं
 ए, अमृत पद अजिराम ॥ तास कृपा कल्याण गणि,
 अहनिशिकरत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति श्रीनेमिनाथ ० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥
 नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित
 पूरण कलप साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोडी पुर
 स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिनुवन पति त्रेवी
 शमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं,
 प्रगटे परम कल्याण ॥ ४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदुं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥
 जन्म जरा मरणादि रूप, नव ताप निवारण ॥ श्रीसि
 धार्थ तात मात, त्रिशला तनु जात ॥ सोवन
 वरण शरीर वीर, त्रिनुवन विख्यात ॥ अमृत रूपें
 राजतो ए, चौवीशमो जिनराय ॥ कृपा प्रमुख क

ल्याण गणिः आपो करि सुपसाय ॥ ५ ॥ इति
श्रीमहावीर स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पाहिकादि पडिक्रमणविधिः लि० ॥

॥ तिहां प्रथम वांदित्तु सूत्र पर्यंत देवसिक पडि
कमी ॥ १ खमासमण देई देवसी आलो इयं
पडिकंता ॥ इत्ता० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पहिय सुह पत्ति
पडिलेहुं? चउमासीए चउमासीय सुहपत्तिः संवठ
रीयें संवठरी सुहपत्ति पडिलेहुं? एम कहे. पीठें गुरु
कहे. पफिजेहेह ॥ पीठें इत्तें कहे. दूजी खमासमण
देई. सुहपत्ति पडिलेही. वांदणां देई. तिहा परकीमें
परको वडकंतो ॥ चउमासीमें० चउमासीठ वड
कंतो. ॥ संवठरीमें संवठरी वडकंतो ॥ एम यथायोगें
कहे ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसिनें स्थानिकें
पारिकिक ॥ चउमासिक. सांवठरिक जणजो. ठीक
जयणा करजो. मधुर स्वरें पडिक्रमजो. खामे सो वि
वरा शुद्ध खामजो. मानजमें सावचेत रहेजो. पीठें
सगलाही तहत्ति कहे ॥ पीठें जठी ॥ इत्ताका० ॥ सं०

ज० ॥ संवृद्धा खामणेणं ॥ अष्टुष्ठिन्मि अष्टितर प
 रिक्रियं ॥ खामेजं? गुरु कहे, खामेह ॥ पीठें मस्तकें
 अंजली करतो थको, इठं खामेमि परिक्रियं ॥ ३ ॥
 कही, गोमा लीयें बेसी. मस्तक नमावी दक्षिण हाथ
 गुरु साहमो करी, मुहपत्ति मुखें देई ॥ परिक्रियें, प
 नरसन्हं दिवसाणं, पनरसन्हं, राईणं जं किंचि अप्प
 त्तियं इत्यादि सर्व पाठ कहे ॥ चनुमासें चनुन्हं
 मासाणं, अठन्हं परकाणं, वीसोत्तरसो राईंदियाणं जं
 किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ संवत्तरीयें दुवाज
 सन्हं मासाणं, चनुवीसन्हं परकाणं, तिन्निसयसठि रा
 इंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥
 तेवारें गुरु पण मिठामि दुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय
 साधु उचरता हुवे तो पाखियें तीन, चनुमासीयें पांच,
 संवत्तरीयें सात साधुनें खमावे ॥ पीठें ऊठी अव
 ग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ परिक्रियं
 आलोवुं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इठं
 एमि, जो मे परिक्रिउ ॥ ३ ॥ कनु

(१४१)
सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमारी
संवहरी. अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतीचार लिख्यते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तह य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा
भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्रा
चार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ एवं पांच विधि
आचारमांहि जिको अतीचार पद्द दिवसमांहि सूक्ष्म
बादर जाणतां अणजाणतां हुज होइ ते सह मन वचन
कायाइं करी मिठामि पुक्कं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतीचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥
वंजण अठ तडुअए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥
ज्ञान, कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें
पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री
पाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं,
नेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तडुअय कूमो पड्यो,
वांदणे पडिकमणे सिझाय करतां पढतां गुणतां

ज० ॥ मंत्रुद्धा खामणेणं ॥ अष्टुठिचमि अङ्गितर प
 रिक्रियं ॥ खामेजं? गुरु कहे, खामेह ॥ पीठें मस्तकें
 अंजली करतो थको, इठं खामेमि परिक्रियं ॥ ३ ॥
 कही, गोमा लीयें बेसी. मस्तक नमावी दक्षिण हाथ
 गुरु साहमो करी, मुहपत्ति मुखें देई ॥ परिक्रियें, प
 नरसन्हं दिवसाणं, पनरसन्हं, राईणं जं किंचि अप्प
 त्तियं इत्यादि सर्व पाठ कहे ॥ चनुमासें चनुन्हं
 मासाणं, अठन्हं परकाणं, वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं
 किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ संवत्तरीयें पुवाज
 सन्हं मासाणं, चनुवीसन्हं परकाणं, तिन्निसयसठि रा
 इंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥
 तेवारें गुरु पण मिठामि पुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय
 साधु उचरता हुवे तो पाखियें तीन, चनुमासीयें पांच,
 संवत्तरीयें सात साधुनें खमावे ॥ पीठें ऊठी अव
 ग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इठ्ठा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ परिक्रियं
 आलोवुं? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इठं अ
 एमि, जो मे परिक्रिउ ॥ ३ ॥ अइयारो कनु इ

सूत्र जणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी
संवहरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतीचार लिख्यते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तह य
विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा
जणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्रा
चार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ एवं पांच विधि
आचारमांहि जिको अतीचार पक्क दिवसमांहि सूक्ष्म
वादर जाणतां अणजाणतां हुउ होइ ते सहू मन वचन
कायाइं करी मिठामि दुक्कं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतीचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥
वंजण अठ तदुजए, अठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥
ज्ञानः कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें
पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री
उपाध्यायकर्ने नही पढिउं, अथवा अनेराकने पढिउं,
अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुजय कूमो पड्यो,
देववांदणे पडिक्कमाणे सिझाय करतां पढतां २५५

पी कलश तणो ठवको लागो. सुखतणी वाफ लागी,
ठवणारिय हाथथकी पनीन, पम्पिजेहवो वीसारयो,
नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईजिको
अतीचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समईहिं तिहिं गु
त्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो
॥ १ ॥ इरियासमिती १, ज्ञासासमिती २, एषणा
समिती ३, आयाणजंमत्तनिरेक्वणासमिती ४, उ
च्चारपासवणखेलजल्लसंधाण पारिष्ठावणीया समिती ५,
मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एपंचसमिती
तीनगुप्ति, रूडीपरें पाली नही ॥ साधु तणें सदैव
अष्टविध चारित्रा चार विषईन जिको अतीचार० ॥४॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त मूल बारह
व्रत, श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार॥संका कंख विगिन्ना
पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी
बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती
प्रतिमा चारित्रियानां चारित्रि जिन वचन तणो संदेह

कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो
 गोत्रदेवता ग्रह पूजा विष्णुइग हनुमंत इत्येवमादिक
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देवदेहराना प्रज्ञाव देखी
 रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या बौद्ध
 सांख्यादिक संन्यासी भरुना भगत लिंगिया योगी
 दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी
 परमार्थ जाणयाविण भूल्या अनुमोद्या कुशास्त्र शीख्या
 सांभल्यां शराधसंवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अ
 जापनिवा प्रेतबीज गोरबीज विष्णायगचोथ नागपांच
 म झूलणाउठ शीजसातम द्रो आठम नउजी नवम
 अहवदसम व्रतइग्यारम वत्सवारस धनतेरस अनंतचौ
 दश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक जाग भोग उता
 रणा कीधा. पींपल पांणी घाल्या बलाव्या घर बाहिर
 कूई तलाव नदी समुद्र कुंभमें पुण्य हेतु स्नान कीधा.
 दान दीधा, ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि नाहि
 या अजाणना थाप्पा. अनेराई व्रतोळा कीधा क
 राव्या विचिकिन्हाः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह
 कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर. विश्वोपकार सागर

पी कलश तणो ठवको लागो. सुखतणी वाफ लागी.
 ठवणारिय हाथथकी पमीन, पम्पिहवो बीसारयो.
 नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईजिको
 अतीचार० ॥ ३ ॥

॥ चारित्राचारना आठ अतीचार ॥

॥ पणिहाणजोग जुत्तो, पंचहिं समईहिं तिहिं गु
 तीहिं ॥ एस चरित्तायारो. अठविहो होइ नायवो
 ॥ १ ॥ इरियासमिती १, ज्ञासासमिती २, एषणा
 समिती ३, आयाणजंरुमत्तनिरकेवणासमिती ४, उ
 चारपासवणखेलजल्लसंवाण पारिठावणीया समिती ५,
 मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, एपंचसमिती
 तीनगुप्ति, रूडीपरें पाजी नही ॥ साधु तणें सदैव
 अष्टविध चारित्रा चार विषईनु जिको अतीचार० ॥ ४ ॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त मूल बारह
 व्रत, श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार॥ संका कंख विगिठा
 पसंस तह संथवो कुजिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी
 बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती
 प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिन वचन तणो संदेह

कीडी मकौडी नदेही धीवेली कातरा चूमेली पतंगिया
 नेमका अलसिया ईली कूति मांस मसा बगतरा माखी
 प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला
 हलावतां पंखी काग चिमकलाना इंसा फूटा, अनेरा
 ऐकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या दूहव्या हाल
 तां चालतां अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंस पणुं
 कीधुं. जीव रक्षा रुमेन कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या
 धान तावमे दीधा दलाव्या जरमाव्या खाटला तावमे
 जाटक्या, सूंक्या सूंकाव्या, जीवाकुल नूमि लीपावी
 वाशी गार राखी रखावी, दलणें खांमणें लीपणें रुमी
 जयणां न कीधी, आठम चउदशना नियम जांग्या,
 धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषईउ
 अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजं शूल सृषावाद विरमण व्रतें

पांच अतीचार ॥

॥ सहसारहस्सदारे, मोसुवएसे य कूरु लेहेय ॥ सह
 साकारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो किणहिक
 प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राज विरुध ॥

मोक्षमार्ग दातार देवाधि देव बुद्धं शुद्ध ज्ञावे न पूज्या
 न मान्या महात्माना ज्ञात पाणी तणी दुर्गंगा कीर्ती,
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अज्ञाव हुन मिथ्या
 त्वीतणी प्रज्ञावना देखी प्रशंसा कीधी प्रीति मांसी दा
 क्षिण जगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमक्षित विषे अने
 रो जिको अतीचार पकू दिवस मांहि सूक्ष्म वादर जा
 एतां अजाणतां हुन होय, ते मह मन वचन कायाई
 करी मिठामि दुक्कमं ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमण व्रतें पांच अतीचार
 वह बंध ठविठेए, अइजारे उत्तपाण बुठेए ॥ छिपद
 चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घात प्रहार घाल्यो गाढे
 बंधन बांध्या घणे जार पीड्या, निर्लाभन कर्म कीधा,
 चारापाणी तणी वेला सार संजाल न कीधी, लहिणे
 देणें किणही प्रतें जंवाव्युं, तेणें नृखे आपण जीम्या,
 अणगल पाणी वावरयुं, रूडे गल्युं नही गलाव्युं
 नही, अणगल पाणी जील्यां लूगडाधोयां, इंधण अण
 सोध्युं जाल्युं, साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआं
 गोंगिंडा साहतां सूआं दूखव्यां रूडे थानक न सूक्या:

कीडी मकोडी उदेही धीवेली कातरा चूमेली पतंगिया
 मेमका अलसिया ईली कूति नांस मसा बगतरा माखी
 प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला
 हलावतां पंखी काग चिमकजाना इमा फूटा, अनेरा
 ऐकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या दूहव्या हाज
 तां चालतां अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंस पणुं
 कीधुं. जीव रक्षा रुमेन कीधी. संखारो सूकव्यो. सुल्या
 धान तावमे दीधा दलाव्या जरमाव्या खादला तावमे
 जाटक्या. मूंक्या मूंकाव्या. जीवाकुल चूमि लीपावी
 वाशी गार राखी रखावी. दलणें खांमणें लीपणें रुमी
 जयणां न कीधी. आठम चउदशना नियम आंग्या.
 धृणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषईउ
 अनेरो ॥ १ ॥

॥ वीजूं थूज सृषावाद विरमण व्रतें
 पांच अतीचार ॥

॥ सहसारहस्सदोरे मोनुवणमे य करु जेहेय ॥ सह
 साकारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आज दीधो किणहिक
 प्रतें एतें वात करतां देखी तुम्हें तो राज विरुध वि.

बो ठो. इत्यादि क कहुं. स्वदार मंत्र जेद कीधो, अने राई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो; किण हीनै कूनी बुधि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूनी साख जरी थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय जूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद बढावढि करतां मोटकुं फूज बोड्युं, हाथपाग जणी गाल दीधी, करडका मोड्या. अधम्म वचन बोड्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ बीजे अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अती चार ॥ तेनाहरुप्पणगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अण मोकलावी लीधी, दीधी, बावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल दीधुं, संकेत कहुं. विरुध राज्या तिक्रम कीधो, नवा पु राणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा जेल संजेल कीधा, खोटे तोल मान माप बोहग्यां, मा एचोरी कीधी, साटे जांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जुदी गांठ कीधी, किणहीनै लेखे पलेखे जूलव्युं, पनी वस्त जलवी लीधी बीजे अदत्तादान व्रतविषइ० ॥

वो ठो. इत्यादि क कह्युं. स्वदार मंत्र जेद कीधो, अने
 राई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो; किण हीनै
 कूनी बुधि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूनी साख जरी
 थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय नूमि संवंधिया
 लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं जूउ
 वोळ्युं, हाथपाग जणी गाल दीधी, करडका मोझ्या.
 अधम्म वचन वोळ्या ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ बीजे अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अर्ता
 चार ॥ तेनाहरुप्पजगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई
 वस्तु अण मोकलावी लीधी, दीधी, बावरी, चोरीनी
 वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल दीधुं,
 संकेत कह्युं. विरुध राज्या तिक्रम कीधो, नवा पु
 राणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा जेल
 संजेल कीधा, खोटे तोल मान माप बोहग्यां, ना
 एचोरी कीधी, साटे जांच लीधी, माता पिता पुत्र
 कलत्र परिवार वंची जुदी गांठ कीधी, किणहीनै
 लेखे पजेखे नृलव्युं, पनी वस्त उजवी लीधी बीजे
 अदत्तादान व्रतविषइनु० ॥

स्सय परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि
जायवा आयवा तणो नियम जे कोई अजाणे जागो,
एक गमा संकोमी बीजी गमा वधारी, विस्मृति जों
अधिक नृमि गया पाठवणी आवी मोकजी ॥ ॐ
दिगव्रत वि० ॥

॥ सातमें जोगोपजोग परिमाण व्रत ॥ जेहना जो-
जनआश्री पांच अतीचार (अने) करम हुंती पत्रे एवं
वीश अतीचार ॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोल दुष्पोलयं च
आहारे० सच्चित्त तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं
तथा सच्चित्त मजी वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुठौपधी
तणो जहण कीधुं. होला उंची पहुंक काकडी जड्या
कीधा, सुल्या धान प्रमुख जहण कीधा ॥ सच्चित्त दव
विगई, पाणह तंजोल वठ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण
विलेवण, वंज दिसि एहाण जत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे
नियम दिन प्रते संजारया संक्षेप्या नही, लेई नियम
जांग्या बावीस अजह, वत्तीस अनंतकायमांहे आदो
मूला गाजर पींमालू सूरण सेलरां काची आंबली गो
व्हां खाधां, चोमासा प्रमुख मांहे वासी कठोलनी

चार ॥ कंदप्पे कुकुइए० कंदर्प लगे विटनी परें हास्य
 कुतूहल सुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरख पणा लगे
 कुणहीने असंवद्ध वाक्य बोल्या. खांमा कटारी कुसि
 कुहाडा रथ जखल मूसल अगन वरटी आदिक सज
 करी मेल्यां, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ठोर लेवरा
 व्यां अनेरो कांड पापोपदेश दीधो, अंगोल नाहण दां
 तण पगयोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींमोले
 हींच्या, राजकथादेशकथा नुक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात
 कीधी, आर्त्त रौड ध्यान ध्याया, कर्कश वचन बोल्या,
 करडका मोड्या, संजेडा लाया, जेंसा सांड कूकडा, मीं
 ढा श्वानादि ऊऊतां कलह करतां जोया, खाधि लगे
 अदेखाई चिंतवी, माटी मीठुं कण कपासिया काज विण
 चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पती खुंदी, ठाठ
 पाणी, वी रस तेल गुल आम्लवेतस बेरजादिक तणां
 आजन उवाडां सुंक्यां. ते मांहि कीडी कंथुआ माखी
 नंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव
 क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निडा कीधी, राग द्वेष

नाखी आपण पणुं उतुं जणाव्युं ॥ दशमे देसावकासिग
व्रतविष इयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतीचार ॥ संथार
रुचार बिही, पमाय तह चेव जोअणा जोए० ॥ पोसह
लीधे संथारा तणी नूमि बाहिरला थंडिला दिवमें
शोध्यां पडिलेह्या नही, मातरुं अणपडिलेहुं वावरिं,
अणपुंजी नूमिकाई परठविं, परठवतां चिन्तवणा न
कीधी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पठें
वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशाला
मांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी
वीसारी, पृथ्वीकाय अप्पकाय तेजकाय वानुकाय वन
स्पतीकाय त्रसकाय तणा संवट्ट परिताप उपद्रव हुआ,
संथारा पोरसि तणो विधि अणुं, वीसारिं
पोरसि मांहि नुंध्यां, अविधि संथारुं पाथरचुं, काल
वेलायें पडिक्कमणु न कीधतुं, पारणादिक तणी चिंता
निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसा रिया, पोसह
असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह
लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ वारमे अतिथि संविज्ञागव्रतें पांच अतीचार ॥
 सच्चित्ते निरकवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महा
 तमा प्रतें असूऊतुं दान दीधुं. अदेवा तणी बुद्धें सूऊतुं
 फेडी असूऊतुं कीधुं. देवा तणी बुद्धें असूऊतुं फेडी सूऊ तुं
 कीधुं. आपणुं फेडी परायुं कीधुं. विहरवा वेला टलि गया,
 असुर करी महातमा तेज्याः मठरजगें दान दीधुं गुणवंत
 आवे जगति न साचवी. उती शक्ति साधार्मिक वात्सल्य
 न कीधुं. अनेराई धर्म क्षेत्र सीदाता उती शक्ते उद्ध
 र्या नही ॥ वारमे अतिथि संविज्ञाग व्रतवि षड्यो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतीचार. इहलोए परलो
 ए० ॥ इहलोका संसप्पत्तगे परलोगासंसप्पत्तगे जीवि
 आसंसप्पत्तगे मरणासंसप्पत्तगे कामजोगासंसप्पत्तगे इह
 लोक मनुष्यजव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई
 बजदेव वानुदेव चक्रवर्त्ति पद वांढ्या. परलोक इंद्र
 अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांढी. सुख आव्ये जीव
 वातणी वांढा कीधी. पुख आव्ये मरवातणी वांढा
 कीधी. कामजोग तणी इठा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि०

॥ तपाचारवारजेदें ॥ ३ अभ्यंतरः ३ बाहिरः अण

नाखी आपण पणुं उतुं जणाव्युं ॥ दशमे देसावकासिग
व्रतविष इयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतीचार ॥ संथा
रुच्चार बिही, पमाय तह चेव जोअणा जोए० ॥ पोसह
लीधे संथारा तणी नूमि बाहिरजा थंडिला दिवमें
शोध्यां पडिलेह्या नही, मातरुं अणपडिलेहुं वावरिंत,
अणपुंजी नूमिकाई परठविंत, परठवतां चिन्तवणा न
कीधी, अणुजाणह जस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पठें
वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशाजा
मांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी
वीसारी, पृथ्वीकाय अप्पकाय तेजकाय वानुकाय वन
स्पतीकाय त्रसकाय तणा संवट्ट परिताप उपद्रव हुआ,
संथारा पोरसि तणो विधि नणुं, वीसारिंत
पोरसि मांहि उंध्यां, अविधि संथारुं पाथरयुं, काल
वेलायें पडिकमणु न कीधनुं, पारणादिक तणी चिंता
निपजावी, कालवेला देव वांदवा धीसा रिया, पोसह
असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह
लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ वारमे अतिथि संविज्ञागव्रतें पांच अतीचार ॥
 सच्चित्ते निरकवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महा
 तमा प्रतें असूऊतुं दान दीधुं. अदेवा तणी बुद्धें सूऊतुं
 फेडी असूऊतुं कीधुं. देवा तणी बुद्धें असूऊतुं फेडी सूऊ तुं
 कीधुं. आपणुं फेडी परायुं कीधुं. विहरवा वेला दलि गया.
 असुर करी महातमा तेज्या. मठरल गें दान दीधुं गुणवंत
 आवे जगति न साचवी. उती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य
 न कीधुं. अनेराई धर्म ह्येव सीदाता उती शक्ते नुध
 र्या नही ॥ वारमे अतिथि संविज्ञाग व्रतवि षड्यो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतीचार. इहलोए परलो
 ए० ॥ इहलोका संसप्पनगे परलोगासंसप्पनगे जीवि
 आसंसप्पनगे मरणासंसप्पनगे कामजोगासंसप्पनगे इह
 लोक मनुष्यजव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई
 बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पद वांठ्या. परलोक इंद्र
 अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांठी. सुख आव्ये जीव
 वातणी वांठा कीधी. दुख आव्ये मरवातणी वांठा
 कीधी. कामजोग तणी इठा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि०

॥ तपाचारवारभेदें ॥ ३ अभ्यंतर. ३ बाहिर. ३

सणसूणोरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्व-
 तिथि ठती शक्ते कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सा
 त कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख
 परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो
 संजीणता अंगोपांग संकोच्या नही, नवकारसी पोरसी
 गंठसी सूंठसी साठपोरसी पुरिमट्ट एकासणो वेआसणो
 नीवी आंविल प्रमुख पच्चरकाण पारवा वीसारया. वेस
 तां नवकार ज्ञायो नही, उठतां दिवसचरिम न कीधुं
 नीवी आंविल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पी
 धुं. वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायवित्तं विणन० । गुरु कनें मन
 सुखें आलोयणा जीधी नही, गुरुदत्त प्रायवित्त तप लेखा
 शुद्ध पुहचारुं नही, देवगुरु संघ साहम्मी प्रते विनय
 साचव्यो नही, वाचना प्रवृत्ता परावर्तना अनुपेक्षा
 धर्मकथा लक्षण पंचविध सिंझाय कीधी नही, धर्मध्या-
 न शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म कृत्य निमित्त लोगस
 दस वीसनो काउसग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप
 विषइयो० ॥

सणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्व-
 तिथि उती शक्ते कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सा
 त कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख
 परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो
 संजीणता अंगोपांग संकोच्या नही, नवकारसी पोरसी
 गंठसी मूठसी साढपोरसी पुरिमहु एकासणो वेआसणो
 नीवी आंबिल प्रमुख पच्चरकाण पारवा वीसारया. वेस
 तां नवकार जणयो नही, उठतां दिवसचरिम न कीधुं
 नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पी
 धुं. वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप ॥ पायडितं विणन० । गुरु कर्ने मन
 मुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायडित्त तप लेखा
 शुद्ध पुहचारुचुं नही, देवगुरु संघ साहम्मी प्रते विनय
 साचव्यो नही, वाचना प्रवना परावर्त्तना अनुपेक्षा
 धर्मकथा लक्षण पंचविध सिझाय कीधी नही, धर्मध्या-
 न शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म दाय निमित्त लोगस
 दस वीसनो कानसगग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप
 विषइयो० ॥

परिवाद १४, पैशुन्य १५, अरतिरति १६, मायामृषा
 वाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अढारह पापस्थानक
 मांहि जे कांड कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारे
 श्रावक धर्मे श्रीसम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चौवीसां सो
 अतिचार मांहि जिको अतीचार पहा दिवसमांहि
 शूद्रम बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सह मन
 वचन कायायें करी मिठामि डुकडं ॥ इति श्रीश्राव
 कोंके बारह व्रतका अतीचार सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ पीठें सबस्सवि परिकय ३ ॥ इत्यादि इठाकारेण
 संदिस्सह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउठेण पडिक्क
 मह. चउमासे ठठेण पडिक्कमह. संवठरीयें अठमेण
 पडिक्कमह. इठं तस्स मिठामि डुकडं कही. द्वादशा
 वर्त्त वांदणां देवे. पीठें इठाकारेण संदिस्सह जगवन्.
 देवसियं आलोइयं पम्किंता ॥ पत्तेयखामणेणं
 अप्पुठ्ठिउमिअप्पिजतर परिकयं ॥ ३ ॥ खामेज्जं? गुरु क
 हे खा० ॥ पीठें इठं खामेमि परिकयं ॥ ३ ॥ इत्यादि
 पाठ सर्व पूर्वे कही, तिम कही मिठामि डुकडं देई
 खमावे, पीठें वे वांदणां देई. जगवन् देवसियं आलो

इयं पमिकंता परिकयं ॥ ३ ॥ पडिकमावेह गुरु
 कहे सम्मं पडिकमह. पीठें इठं कही करेमि जंते
 सामाइयं ॥ इहामि ठामि काउस्सगं जो मे परिकउ
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नवू० ॥ कही ॥
 काउस्सग करे: गुरु: पाखी सूत्र कहे, ते सांजजे. अने
 गुरुथकी जूदा पडिकमता हुवे, तो एक श्रावक खमास
 मणदेई कहे. जगवन सूत्र जणुं ? गुरु कहे, जणेह.
 एसो वचन मनमें धारी ॥ इठं कही: जजो थको: हाथ
 जोडी नुहपत्ति सुखें देई. तीन नवकार कही, मधुर
 स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा
 श्रावक करेमि जंते० इहामि ठामि काउस्सगं: तस्सुत्त
 री० अन्नवू० कही काउस्सगमें रह्या सुणें ॥ सूत्रप्रांतें
 एमो अरिहंताणें कही. काउसग पारी, जजो थका ती
 न नवकार गुणी वेसे. पीठें ॥ ३ नवकार ॥ ३ क
 रोमि जंते कही, इहामि पडिकमिजं जो मे परिकउ
 ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणें: पडिकमे देव
 तियं सबं ॥ एहने ठिकाणें पडिकमे परिकयं, चउ
 मासियं, संवठारियं सबं कहे: पीठें जजो: अह्मिजमि

आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इत्ता०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि
 निमित्तं, काउस्सग कळं ? गुरुकहे करेह. पीठें इत्तं
 कही, करेमि जंतें सामा० इत्तामि ठामि काउस्सगं
 तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादिक कही, पाखी यें वार लोगस्स
 चौमासियें बीसलोगस्स, संवत्तरीयें चालीस लोगस्सनी
 काउस्सग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग करी.
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ति पडिलेही, बे वांदणां
 देई इत्ता० ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अण्णु
 जमि अण्णितर परिकयं ३ ॥ खामेणं ? गुरु कहे खामेह.
 पीठें इत्तं खामेमि परिकयं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कही.
 तिम कहे, पीठें इत्ताका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पाखी. ३ ॥
 खामणां खासूं ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण
 देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ३ ॥ समाप्त खामणां
 खामेह. पीठें श्रावक एक खमा समण देई. मस्तक नी
 चुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें
 गुरु कहे नित्यारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इत्तं
 इत्तामो अण्णुसाठिं कही, पुण्यवंतो पाखीनें लेखे, एक

वमो स्तवन अजित शांति कहणो, लघुस्तवन उपमा
हर स्तोत्र कहणो तथा पडिकमणो प्रो हुवां पीठे एक
श्रावक गुर्वाङ्गायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका
स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणानें रात्री पोसह न
हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति पादिक
कादि तीन पडिकमणविधि ॥ ❀ ❀

॥ पाणहार दिवसचरिमं पचरकामि अण० सह०
मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो प
चरकाण ॥ ९ ॥

॥ जवश्ररिमं पचरकाइ तिविहंपि चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सव्व० वो
सिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ जवश्ररिम, दो आगारकाजी
होय ॥ इति जवचरिम पचरकाण ॥

(तथा) इमहीज गंठिसहि सुठिसहि अंगुष्ठ सहि प्र
मुख अजिग्रह पचरकाणकेजी ए चार आगार, अण०
सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं
सो साधुकों होय ॥ इति अजिग्रह पचरकाण ॥

॥ अहणं जंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पचरका

मि दव्वउं खित्तउं काजउं भावउं दव्वउं देसावगासियं
 खित्तउं इउ वा अणउ वा काजउं महुत्तधारणाप्र
 माणे जावनियमं पच्चरूकामि भावउं जावगहेणं न ग
 हिज्जामि उजेणं न उजिज्जामि अणेणकेविरायंकेण वा
 एसो परिणामो न पडिवज्जइ ता अभिग्गह अणउणा
 ओगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तिया
 गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चरूकाण ॥

॥ तथा सावु पच्चरूकाण करे तव देसावगासी नही
 पच्चरे. अरु तिविहार उपवासमें आंविजमें नीवीमें ए
 कासण प्रमुखमें पाणत्सका उ आगार पच्चरे. सो दि
 खावे हैं । पाणत्स जेवाडेण वा अजेवाडेण वा अडेणवा
 बहुजेण वा समिडेण वा असिडेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चरूकाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगारा उव हुंति पोरसिए ॥
 सत्तेवय पुरिमहे एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गघा
 णत्सउ. अठेवय आयंविजंमि आगारा ॥ पंच वयज्ज
 त्ते उप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभि

वमो स्तवन अजित शांति कहणो, लघुस्तवन उपमा
हर स्तोत्र कहणो तथा पडिकमणो पूरो हुवां पीठें एक
श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांति
स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणानें रात्री पोसह न
हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति पाहि
कादि तीन पडिकमणविधि ॥ ❀ ❀

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकामि अण० सह०
मह० सब० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो प
च्चरकाण ॥ ९ ॥

॥ जवश्चरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० मह० सब० वो
सिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ जवश्चरिम, दो आगारकारी
होय ॥ इति जवचरिम पच्चरकाण ॥

(तथा) इमहीज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठ सहि प्र
मुख अजिग्रह पच्चरकाणकेजी ए चार आगार. अण०
सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं
सो साधुकों होय ॥ इति अजिग्रह पच्चरकाण ॥

॥ अहणं जंते तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चरका

णयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिङ्गणयं ॥ पुरिस्ता जइ
 पुरकवारणं जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं
 संतिं च आवुत्तं अन्नयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ माग
 हिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ सुवरय जरमरणं
 सुर असुर गरुल जुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजि
 अ महमविअ सुनय नय निज्जण मन्नयकरं सरणसुव
 सरिअ जुवि दिविज्जमहिअं सयय सुवणमे ॥ ७ ॥
 संगययं ॥ तंच जिणुत्तम सुत्तम नित्तम सत्तधरं अ
 ज्जव मद्व खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पण
 मामि दसुत्तमतिद्वयरं संति मुणी मम संति समाहि
 वरं दिसव ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्तिपुव्वपत्ति वंच वर
 हत्ति मत्तय पसत्त विव्विन्न संथिअं थिर सरिह वत्तं मयग
 ल लीलायमाण वर गंध हत्ति पत्ताण पत्थियं संथवारिहं
 हत्तिहत्त वाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर
 लरकणो वाचिअ सोमचारु रूवं सुइ सुहमणाजिराम
 परम रमणिज्जवरदेव पुंहुहि निनाय महुरयरय सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेढुत्तं ॥ अजिअं जिआरिगणं जिअ यं
 जवो हरिउत्तं ॥ पणमामि अहं पयत्तं पावं पस

गहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पंचव
हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारंभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं, जिअ सबजयं, संतिं च पसंत, सबगय
पावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिव
यामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल जावे, तेहं विजु
तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्पजावे, थोसामि सु
दिठ सप्पावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब डुरक प्पसंतीणं,
सब पावप्पसंतीणं, सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ
संतीणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं,
तव पुरिसुत्तम नामाकित्तणं ॥ तहय धिइ मइ प्पवत्तणं,
तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ कि
रिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्कयरं, अजिअं
निचियंच गुणेहि महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य
संतिमहा मुणिणोवि अ संतिअरं, समयं मम निवुइ कार

एयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आङ्गिणायं ॥ पुरिसा जइ
 दुक्कवारणं जइअ विमग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं
 संतिं च जावउ. अजयकरे सरणं पवज्झहा ॥ ६ ॥ माग
 हिअ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ. सुवरय जरमरणं
 सुर असुर गरुज नुयगवइ पयय पणिवइअं ॥ अजि
 अ महमविअ सुनय नय निजण मज्जयकरं सरणमुव
 मरिअ नुवि दिविज्झमहिअं मयय सुवणमे ॥ ७ ॥
 संगययं ॥ तंच जिणुत्तम सुत्तम नित्तम सत्तधरं अ
 ळ्ळव मद्यव संतिविमुत्ति समहि निहिं ॥ संतिअरं पण
 मामि दुरुत्तमनिद्वयरं संति सुणी मम संति समाहि
 वरं विमउ ॥ ८ ॥ मोदाणयं ॥ सावहिण्वपहि वंद वर
 रहि सत्तय पमत्त दिहिद संधिसें पिर सग्गि व्हं मयग
 ल लोलायमाण पर गंध रहि पहाण पडियं मंधवाग्गिं
 रहरिण्ण दाहं धंनकाणम सत्तम निरुदय पिंजरं पवर
 लरकाणो सत्तम मोमवाण गदं सुर सुहमणाजिगम
 पत्तम मग्गिण्ण सत्तम सुहग्गि विनाम सत्तम सत्तम
 ॥ ९ ॥ वेत्त ॥ मग्गिण्ण जिणुत्तमं जिणुत्तमं सत्तम
 मग्गिण्णं मग्गिण्णं मग्गिण्णं मग्गिण्णं मग्गिण्णं

जयवं ॥ १० ॥ रासावुधनं ॥ कुरु जण वय हविणानर
 नरीसरो पढमं तनं महाचक्कवीट्टिओए महप्पजावो जो
 बाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई व
 तीसारायवर सहस्साणुजाय मग्गो चउदस वर रयण
 नवमहानिहि, चउसठि सहस्स पवर जुवईए सुंदर वइ
 चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी उन्नवइ गाम
 कोडि सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेढनं ॥
 तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं थुणामि
 जिणं, संतिं विहेनुमे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकायु
 विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव सारय
 ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजित
 त्तम तेअ गुणेहि महासुणि, अमिय बलाविउल कुला
 ॥ पणमामि ते जवजय मूरण जग सरणा मम सरणं
 ॥ १३ ॥ चित्तजेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हह
 तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप पट्ट सेअ सुव
 निध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति सुत्ति जति
 गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ जाविअ प्पजा
 वणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायणं ॥ विमल

ससिकलाइरेअसोमं. वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥
 तियसवइगणाइरेअ रुवं धरणिधर पवराइरेअ सारं
 ॥ १५ ॥ कुसुमजया ॥ सत्ते अ सया अजिअं. सारीरे
 अवले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं. एस थुणाभि
 जिण मजिअं ॥ १६ ॥ चुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणे
 हिं पावइ न तं नवसरय ससी. तेअ गुणेहिं पावइ न
 तं नवसरयखी ॥ रुवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
 इ. सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खि
 जिययं ॥ तिठवर पवत्तयं तमरयरहिअं. धीरजण थुअ
 चिअं चुअ कजिकजुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण प
 यउ. संतिमहं महा सुणिं सरण सुवणमे ॥ १८ ॥ जलि
 अयं ॥ विणजणय मिरिइ अंजलि. रिमिगण संथुअं
 धिमिअं ॥ विवुहाहिव धणवइ नखइ. थुअ महिअ
 चिअं बहुसो ॥ अइ लगय सरय दिवायर. समहिअ न
 प्पजं तवसा ॥ गयणंगण वियरण मनुइअ. चारण वंदि
 अं मिरसा ॥ १९ ॥ किमजयमाजा ॥ असुर गल्ल परि
 वंदिअं. किन्नरोरा एमंसिअं ॥ देव कोडिमयसं. म
 मणसंय परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुनुहं ॥ अजयं

ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासाञ्जुघनं ॥ कुरु जण वय हठिणानर
 नरीसरो पढमं तन महाचक्रवीट्टिन्नोए महप्पजावो जो
 वाहत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर णिगम जणवयवई व
 तीसारायवर सहस्साणुजाय मग्गो चनुदस वर रयण
 नवमहानिहि चनुसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ
 चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी उन्नवइ गाम
 कोडि सामी आसिज्जो नारहंमि ज्ञयवं ॥ ११ ॥ वेढुं ॥
 तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सब ज्ञया ॥ संतिं थुणामि
 जिणं, संतिं विहेनुमे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकाणु
 विदेह नरीसर, नरवसहा मुणिवसहा ॥ नव साय
 ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअरया ॥ अजित
 त्तम तेअ गुणेहि महामुणि, अमिय बलाविज्जल कुला
 ॥ पणमामि ते ज्ञवज्जय मूरण जग सरणा मम सराणं
 ॥ १३ ॥ चित्तजेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ
 तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप पट्ट सेअ सुद्ध
 निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति सुत्ति जति
 गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ जाविअ पजा
 वणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल

ससिकजाइरेअसोमं: वितिमिरसूर कजाइरेअ तेअं ॥
 तियसवइगणाइरेअ रूवं धराणिधर प्वराइरेअ सारं
 ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं: सारीरे
 अवले अजिअं ॥ तव संजमेअ अजिअं: एस थुणाभि
 जिण मजिअं ॥ १६ ॥ चुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणे
 हिं पावइ न तं नवसरय ससी: तेअ गुणेहिं पावइ न
 तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
 इ: सारगुणेहिं पावइ न तं धराणिधरवइ ॥ १७ ॥ खि
 जिययं ॥ तिठवर पवत्तयं तमरयरहिअं: धीरजण थुअ
 चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण प
 यउ: संतिमहं महा सुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ जलि
 अयं ॥ विणजणय सिरिइ अंजलि: रिसिगण संथुअं
 थिमिअं ॥ विवुहाहिव धणवइ नरवइ: थुअ महिअ
 चिअं बहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर: समहिअ स
 प्पजं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुडअ: चारण वंदि
 अं सिरसा ॥ १९ ॥ किमज्जयमाजा ॥ असुर गरुज परि
 वंदिअं: किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोडिसयसंथुयं: स
 मणसंव परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुत्तुहं ॥ अजयं अणहं अर

यं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयन पणमे ॥ २१ ॥
 विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्वकणग रु
 तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंजमो रयण रकुज्जिअं
 ललिअं चल कुंफलं गय तिरीरु सोहंत मज्जिमाजा
 ॥ २२ ॥ वेढनं ॥ जं सुरसंवा सासुर संवा वेर विउत्ताज
 त्ति सुज्जुत्ता, आयर जूसिअं संजमपिंमिअं, सुद्धुसु विद्धि
 अं सबवलोवा ॥ उत्तम कंचण रयण परुविअं, जा
 सुर जूसण जासुरिअंगा, गाय समोणय जत्तिव
 सागय, पंजलि पेसिय सीस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं, तिगुणमेवय पुणो
 पयाहिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ स
 जवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं
 पि पंजलि, राग दोस जय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव
 नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ सि-
 त्तयं ॥ अंवरंतरविआरणिआहिं, ललिअं हंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिठण सालणिआहिं, सकल क
 मल दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
 तर थणजरविणमिय गायलयहिं, मणिकंचण पसिदि

यं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयन पणमे ॥ २१ ॥
 विज्जुविलसिअं ॥ आगयावर विमाण, दिव्वकणग रह
 तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंजमो रयण रकुजिअ,
 ललिअ चंल कुंफलं गय तिरीरु सोहंत मन्जलिमाला
 ॥ २२ ॥ वेढन ॥ जं सुरसंधा सासुर संधा वेर विउत्ता न
 त्ति सुजुत्ता, आयर नूसिअ संजमपिंमिअ, सुद्धुसु विद्धि
 अ सबबलोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ, न
 सुर नूसण न्नासुरिअंगा, गाय समोणय नत्तिव
 सागय, पंजलि पेसिय सीस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं, तिगुणमेवय पुणो
 पयाहिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ स-
 नवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं
 पि पंजलि, राग दोस नय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव
 नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खि-
 त्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअ हंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिण्ण सालणिआहिं, सकल क
 मल दललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरं
 तर थणनरविणमिय गायलयाहिं, मणिकंचण पसिदि

जमेहल सोहिअ सोणितडाहिं ॥ वरखिखिणिनेउर स
 तिलय वजय विभूसणियाहिं ॥ रङ्गकर चउर मणोहर सुं
 दर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तरकरा ॥ देवसुंदरीहिं
 पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्रमाक्रमा अप्प
 णो निमालएहिं मं मणोडुणप्पगारएहिं केहिं केहिं वी
 अवंग तिलय पत्तजेह नामएहिं चित्तएहिं संगयं गया
 हिं नत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो
 पुणो ॥ २८ ॥ नारायणं ॥ तमहं जिणवंदं, अजिअं
 जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयणं पणमामि ॥ २९ ॥
 नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणेहिं, तो देव
 वह्हिं पयणं पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयरमा
 नत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥ देव वरहर मा वह्हिआहिं,
 सुरवर रङ्गुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥ आसुर्यं ॥ वंस
 सह तंति ताज मेजिए तिउकराजिरामसह मा मएकए
 अ सुइसमाणेअ सुइमज्झ गीअ पाय जाज वं दिआ
 हिं ॥ बलय मेहजा कजावनेउरादिराम सह मा मएकए
 अ देवनट्ठिआहिं ॥ हाव जाव विहमप्पगार एहिं नत्ति

उणञ्चंग हारणहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्रमा कमा ॥
 तयं तिलोअ सव्व मत्त मंतिकारयं पसंत सव्व पाव दोस
 मेसहं नमामि मंतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥
 उत्त चामर पडागज्जुअ जव मंडिआ, ऊयवर मगर तुस
 सिरि वठ सुजंउणा ॥ दीवममुद्ध मंदरदिसागयसोहिआ
 सञ्चिअ वसह सीहसिरिवठसुजंउणा ॥ ३२ ॥ जलि
 अयं ॥ सहावज्जठा समप्पइठा, अदोस पुठा गुणेहि
 जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा. सिरीही इठा रिसीहिं
 जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया
 सव्वलोअहिअ मूल पावया ॥ संथुआ अजिअसंति पा
 यया, हुंतु मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका
 एवं तव बलविज्जं, थुअं मए अजिअ संति जिणज्ज
 यलं ॥ ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विमलां
 ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुरक सुहेण पर
 मेण अविसायं ॥ नासेन मेविसायं, कुणउअ परिसावि
 अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएन अनंदिं, पावेनअ
 नंदिसेणमज्जिनंदिं ॥ परिसाविय सुहनंदिं, म

सउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ परिक्रम चानुम्मा
 सिय-संवहरिए अवस्मज्जणि अब्बो, ॥ सोअब्बो सब्बहिं-
 उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जोअनिसु
 णइ-उज्जु कालंपि अजिअ संतिथवं ॥ न हु हुंति न
 स्स रोगा-पुव्वुप्पन्ना विनामंति ॥ ३९ ॥ जइ इत्थह
 परम पयं-अहवा किन्तीसुविठ्ठा नुवणे ॥ ता तिष्ठुक्कु
 षरणे-जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति
 श्रीवृहद् जितशांतिस्तवनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघु अजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक म, नरक निग्गयपहा दंडवजेणं गिणं-
 वंदा रुण दिसंत इव पयडं निव्वाणमग्गावलिं ॥ कुंदिं
 पुज्जज दंतकंति मिसउ नीहंत नाणंकुरु-केरे दोविपु
 इज्ज सोलम जिणे थोमामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जज्ज
 हिनीरं जोमिणिज्जं जजीहिं-खय ममय मर्मरं जो जिण
 ज्जा गईए ॥ सहज नहय जंवा जंवाजो पएहिं, अजि
 अ महव संतिं सो समडो थुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहु
 माणु छानजत्तिप्ररेण-गुणकणमिवकिन्ती हामि चिंता

॥ फुरइ फुडपलंताणंतणाणं सुपूरो पयड मजिअसंती
 जाण सूरु न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिणहु एहं
 चोरा हिवाही ससर डसर मारी रुद खुदो वसग्गा ।
 पलय मजिअसंती कित्तरो ऊत्तिजंती निविडतरत मोहा
 अरकरालंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअपुरिअदारु दित्तज
 एगिजाला परिगय भिव गोरं चित्तिअं जाण रुवं ।
 कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा चिर थिर मि ।
 ह लठिं गाढमंथंअिअव ॥ ११ ॥ अडवि निवडिआणं
 पठिबुत्तासिआणं जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति डि
 याणं ॥ जलिअ जलण जाला जिगिआणं च जाणं
 जणयइ लहु संति संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि
 करि परिक्किणं पक्क पाडक्कपुणं मयलपुहवि रज्जं उड्डिअं
 आण सज्जं ॥ तण पिवपडिजगं जेजिणा सुत्तिमगं
 चरण मणुपवणा हुंतु ते मे पसणा ॥ १३ ॥ उणमसिवय
 णाहिं फुल्लनितुप्पजाहिं थणन्नरत्नमिरीहिं सुठिगिजो
 दरीहिं ॥ लज्जिअ चुअजयाहिं पीण मोणिठणीहिं मय
 सुर रमणीहिं वंदिआ जेमि पाया ॥ १४ ॥ अ

मणि व ॥ अलमहव अचिंता एतसामठुसिं, फलहइ
 लहु सव वंनिअं णिठ्ठिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं
 नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहुडुठा निठ्ठोवट्ठइ ॥
 नमिरसुर किरीडू घिठपायाराविंदे, सयय मजिअ
 संती ते जिणिंदे त्रिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती बट्टए
 देहदित्ती, विलसइ नुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥
 फुरइ परमतित्ती होइ संसारत्ति, जिणजुअपयत्तत्ती
 हीअ चितोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नूरिंदिवंग
 हारं, फुडगणरसजावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणि
 जा दंसणत्तेअजीया, इवपुणमणि बंधा कास नटोवयारं
 ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणयरय
 पसंगा ठज्जए जाणिमुत्ती ॥ सरत्तसपरिरंजा रंजनिवा
 णलत्ती, घणथणघुसि एंकु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुवि
 हनयत्तंगं वट्टुणिच्चं अणिच्चं, सदसदणजिलप्पा लप्पमेगं
 अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण
 मवय णिज्जं ते जिणे संजराभि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ
 लोए ताव मोहंधयारं, जमइजय मसणं तावमिठ्ठत्तठणं

॥ फुरइ फुडपलंताणंतणाणं सुपूरोः पयड मजिअसंती
 जाण सूरु न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिणहु एहंनु
 चोरा हिवाहीः समर डमर मारी रुद्ध खुद्धो वसग्गा ॥
 पल्लय मजिअसंती कित्तणे ऊत्तिजंतीः निविडतरत्त मोहा
 ञ्जरकरालंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअपुरिअदारु दित्तजा
 णग्गिजालाः परिगय भिव गोरं चित्तिअं जाण रूवं ॥
 कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जाः चिर थिर मि ॥
 ह जत्ति गाढसंयंजिअव ॥ ११ ॥ अडवि निविडिआणं
 पठिअत्तासिआणं जलहि जहरि हीरं ताण गुत्ति ठि
 याणं ॥ जलिअ जलण जाला जिग्गिआणं च जाणं
 जणयइ जहु संति संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि
 करि परिकिणं पक्क पाइक्कपुणं मयल्लपुहवि रज्जं उड्डिअं
 आण सज्जं ॥ तण पिवपडिजग्गं जेजिणा नुत्तिमग्गं
 चरण मणुपवणा हुंतु ते मे पसणा ॥ १३ ॥ उणससिवय
 णाहिं फुल्लनित्तुप्पजाहिं थण्णरत्तमिरीहिं सुठिगिज्जो
 दरीहिं ॥ जलिअ नुअलयाहिं पीण मोणिहणीहिं मय
 सुर रमणीहिं वंदिआ जेप्पि पाया ॥ १४ ॥ अरिअ

मणिव ॥ अलमहव अचिंता एतसामञ्जनसिं, फलहइ
 लहु सव वंनिअं णिन्निअं मे ॥ ३ ॥ सयलजयहिआणं
 नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहुडुछा निठदोवट्ठथं ॥
 नभिरसुर किरीड घिठपायारविंदे, सयय मजिअ
 संती ते जिणिंदे निवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती बट्टए
 देहदिक्खी, विलसइ नुवि मित्ती जायए सुप्पविक्खी ॥
 फुरइ परमतिक्खी होइ संसारत्तिक्खी, जिणजुअपयत्तक्खी
 हीअ चित्तोरुसक्खी ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नूरीदेवंग
 हारं, फुडगणरसत्तावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणि
 ज्ज दंसणत्तेअत्तीया, इवपुणमणि बंधा कास नट्ठोवयारं
 ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेससंती, कणयरय
 पसंगा ढक्कए जाणिमुक्खी ॥ सरत्तसपरिरंत्ता रंत्तनिवा
 णलत्ती, घणथणघुसि एंकु प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुवि
 हनयत्तंगं वट्ठुणिच्चं अणिच्चं, सदसदणजिलप्पा लप्पमेगं
 अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं, वयण
 मवय णिज्जं ते जिणे संत्तरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ
 जोए ताव मोहंधयारं, नमइजय मसणं तावमिच्चत्तणं

त्रय जरक ररकस्सः कुसुमिण दुस्सज्जण रिक्क पीडासु ॥
 संजासु दो सु पंथेः नवसग्गे तहय रयणीसु ॥२०॥ जो
 पढइ जो अ निसुणइः ताणं कइणो य माणहुंगस्स ॥
 पासो पावं पसमेत्तः सयल जुवणाच्चिअ चलणो ॥ २१॥
 इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीय स्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अथ गणधरस्तुति चतुर्थस्मरण प्रारंभः

॥ तं जयतु जए तिठं जमिठ तिठाहि वेण वीरेण
 ॥ सम्मं पवत्तिअं नव सत्तः संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ ना
 सिअ सयलकिलेसा निहय कुलेसा पसठ सुहलेसा ॥
 सिरि वद्धमाण तिठस्स मंगलं दितु ते अरिहा ॥ २ ॥
 निद्वहुकम्मवीआ वीआपरमेष्ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सि
 द्धातिजय पसिद्धा हणंतु पुठ्ठाणि तिठस्म ॥ ३ ॥ आ
 यार मायरंता पंचपयारं सया पयासंता आयरिआ
 तहतिठं निहय कुतिठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसु
 अ वायगा वायगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण
 पडिणीय कए वणिंतु सबस्स संवस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण
 साहुण्णअ साहूणं जाणिअ सब साहज्जा ॥ तिठप्प
 नावगाते हवंतु परमेष्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग

ग्वा सिग्धं, पत्ता हिय इत्थियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि
 आनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलि
 सथायविअलिअ, गइंदकुंजवज्जानोअं ॥ १२ ॥ पणय
 ससंजम पठिव, नहमणिमाणिक पडिअ पडिमस्स ॥
 तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुधंपि न गणंति ॥ १३ ॥
 ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुखाल वहि उठाहं ॥ महु
 पिंग नयणजुअलं, ससज्जिल नवजलहरायारं ॥ १४ ॥
 जीमं महागइंदं, अच्चा सन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे
 तुम्ह चलण जुअलं, सुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥
 समरम्मि तिरक खग्गा, जिघाय पविध उद्धुय कबंधे ॥
 कुंतविणिज्जिन्न करि कलह, सुक्कसिक्कारपत्तरंमि ॥ १६ ॥
 निज्जिय दण्णुधर रिउ नरिंद, निवहा जडा जसं धवली ॥
 पावंति पाव पसमण, पासजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥
 रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गयरण ज
 याइ ॥ पास जिणनाम संकित्तणेण, पसमंति सवाइ
 ॥ १८ ॥ एवं मह । जयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
 अविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय

अथ जगत् ररकस्सः कुसुमिण दुस्सज्जण रिरक पीडासु ॥
 संजासु दो सु पंथेः उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो
 पढइ जो अ निसुणइः ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥
 पासो पावं पसमेनः सयल जुवणाच्चिअ चजणो ॥ २१ ॥
 इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीय स्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अथ गणधरस्तुति चतुर्थस्मरण प्रारंभः

॥ तं जयन्तु जए तिठं जमिठ तिठ्ठाहि वेण वीरेण
 ॥ सम्मं पवत्तिअं अब सत्तः संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ ना
 सिअ सयलकिजेसा निहय कुजेसा पसत्त सुहजेसा ॥
 सिरि वद्धमाण तिठस्स मंगलं दितु ते अरिहा ॥ २ ॥
 निद्वट्ठकम्मवीआ वीआपरमेष्ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सि
 द्धातिजय पसिद्धा हणंतु पुठ्ठाणि तिठस्स ॥ ३ ॥ आ
 यार मायरंता पंचपयारं सया पयासंता आयरिआ
 तहतिठं निहय कुतिठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसु
 अ वायगा वायगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण
 पडिणीय कए वणिंतु सबस्स संवस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण
 साह्णुज्जअ साह्णं जाणिअ सब साहज्जा ॥ तिठ्ठण्य
 आवगाते हवंतु परमेष्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुग

ग्धा सिग्धं, पत्ता हिय इत्थियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलि
 आनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलि
 सघायविअलिअ, गइंदकुंजज्जलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पण्य
 ससंजम पत्तिव, नहमणिमाणिक पडिअ पडिमस्स ॥
 तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुर्धपि न गणंति ॥ १३ ॥
 ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुलाल वट्ठि उठाहं ॥ मह
 पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरायारं ॥ १४ ॥
 जीमं महागइंदं, अच्चा सन्नपि ते नवि गिणंति ॥ जे
 तुम्ह चलण जुअलं, सुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥
 समरम्मि तिरक खग्गा, जिवाय पविअ नुद्धुय कवंथे ॥
 कुंतविणिज्जिन्न करि कलह, मुक्कमिक्कार पनुरंमि ॥ १६ ॥
 निज्जिय दण्णुवर रिनु नरिंद, निवहा जडा जसं धवलं ॥
 पावंति पाव पममण, पामजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥
 रोग जल जलण विमहर, चोरारि मइंद गयण ज
 याइ ॥ पाम जिणनाम मंकित्तणेण, पममंति मवाइ
 ॥ १८ ॥ पव्वं मह ॥ जयहरं, पाम जिणिंदम्म मंथवमुआरं ॥
 जविय जणाणंदमं, कल्लाण परंपग्निहाणं ॥ १९ ॥ राय

यं नाणं. निवाणफत्तं च चणमविहवड ॥ तिठस्स देस
 णं तं. मंगलमुवणेन सिद्धियं ॥ ७ ॥ तिठम्मो सुअ
 धम्मो. समग्ग नवंगि वग्ग कय मम्मो ॥ गुणसुठिअस्स
 संव स्स. मंगलं मम्ममिह दिमत्त ॥ ८ ॥ रम्मो चरि
 त्त धम्मो. मंपाविअ नवमत्त मिवमम्मो ॥ नीसेस
 किलेसहरो. हवत्त मया मयत्त मंवम्म ॥ ९ ॥
 गुणगण गुरुणो गुरुणो. शिवसुह मइणो कुणत्त
 तिठस्स ॥ सिरि वदमाण पट्ट पयडिअस्स. कु
 सलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय पडिवग्का जग्का. गो
 सुह मायंग गयसुह पमुग्का ॥ सिरि वंज मंति सहिआ
 कय नयरक्का सिवं दित्तु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयमिंवा.
 सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा. संति
 सुरा दिसत्त सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी
 न् दित्तु संवस्स मंगलं विज्जलं ॥ अबुत्ता सहिआत्त. वि
 स्सुअ सुयदेवयात्त समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय
 रक्का. जग्का चत्तवीस सुरावी ॥ सुहजावा.
 तावं. तिठस्स सया ॥ १४ ॥ जिणपवय

निरयाः विरहा कुप हान सवहा सवे ॥ वेयावच्च करावि
 अः तिष्ठस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुध
 समग्गः विहिअ ञ्चाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई
 गीयजसोः सपरिवारो सुहं दिसन् ॥ १६ ॥ गिहगुत्त
 खित्त जलथलः वण पवय वासि देव देवीन् ॥ जिण
 सासण छिआणंः पुहाणि सवाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ द
 सदिसिपात्ता सरिक्खवाजयाः नवग्गहा सनरक्कत्ता ॥
 जोइणि राहुग्गहका लपास, कुलिअध पहेहिं ॥ १८ ॥
 सहकाल कंटणहिंः सविठ्ठिवठेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे
 सवठ सुहं दिसंतु सवस्स संवस्स ॥ १९ ॥ ञ्चवणवइ
 वाणमंतरः जोइस वेमाणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद
 सक सहिआः दलंतु पुरिआइं तिष्ठस्स ॥ २० ॥ चक्कं
 जस्सजलंतंः गह्वर पुरजंयणासिअ ॥ २१ ॥ तंतिष्ठस्स

पणय मुणितिलन ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक
पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्धमवहरन विग्धं, जिणवीराणाणुगामि संघ
स्स ॥ सिरि पासजिणो थंनण, पुरठिन निठिआनिठो
॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ चव
सत्तसुहा ॥ सिरि वधमाण जिणति ठ, सुढयंते कुणंतु
सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण वेयावच्च कारिणो
संति ॥ अवहरिअ विग्ध संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा
॥ ३ ॥ सिरि थंनणय ठिअ पाससामि, पय पणम
पणय पाणीणं ॥ निदलिअ दुरिअ विंदो, धरणिंदो
हरन दुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुह पमुक्क जरका, पडिहय
पडिवरक परक जरकाते ॥ कयसुगुण संघ ररका, हवंतु
संपत्ति सिव सुरका ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण
सासण देव यान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया ह
वंतु संघस्स ॥ ६ ॥ सक्काए सा सच्चतर पुरठिन-
वधमाण ॥ सिरि वंन ॥ ररकन

पणय सुणितिल्ल ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक
पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं जिणवीराणाणुगामि संव
त्स ॥ सिरि पासजिणो थंजण पुराठित्त निष्ठिआनिओ
॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा गणवइणो विहिअ जव
सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणति ठ सुठयंते कुणंतु
सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे जिण वेयावच्च कारिणो
संति ॥ अवहरिअ विग्घ संवा हवंतु ते संव संतिकरा
॥ ३ ॥ सिरि थंजणय छिअ पाससामि पय पत्तम
पणय पाणीणं ॥ निद्धजिअ पुरिअ विंदो धरणिंदो
हरत्त पुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुह पमुक्क जरक्का पडिहय
पडिवरक्क परक्क जरक्काते ॥ कयसुगुण संव ररक्का हवंतु
संपत्ति सिव सुरक्का ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का पमुहा जिण
सासण देव यात्त जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेदा ह
वंतु संवत्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सा सच्चत्तर पुराठित्त
वद्धमाण जिण जत्तो ॥ सिरि वंज संति ज

तथापि तव प्रक्तिवशान्मुनीशः कर्तुं स्तवं विगतशक्ति
 रपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंडः ना
 भ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्प
 श्रुतं श्रुतवतां परिहासधामः त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुस्ते
 बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौतिः तच्चा
 रुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन प्रवसं
 ततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरप्ताजाम् ॥
 आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशुः सूर्यांशुभिन्नमिव
 शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं म
 येद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥ चेतो हरि
 ष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति नन्दं
 बिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्व
 त्संकथापि जगतां पुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः
 कुरुते प्रज्ञैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशप्रांजि ॥ ९ ॥
 नात्यद्भुतं नुवनचूषणचूत नाथः, चूतैर्गुणैर्नुवि प्रवं
 तमग्निष्ठुवंतः ॥ तुल्या प्रवंति प्रवतो ननु तेन
 वा; चूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वन्तमनिमेषविलोकनीयं नान्यत्र तोष
 सुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति
 दुग्धसिन्धोः क्लारं जलं जलनिधेरशितुं क इहेत ॥ ११ ॥
 यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं निर्मापितस्त्रिनु
 वनैकजलामभूत ॥ स्तावंत एव खलु तेष्मणवः पृथि
 व्याः यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क
 ते सुरनरोगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितदगवितयोपमा
 नम् ॥ विवं कलंकमजिनं क निशाकरस्य, यद्भासरे न
 वति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमिन्द्रजशशांकक
 लाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिनुवनं तव लंघयन्ति ॥ ये सं
 श्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवारयति संचर
 तो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगना
 भिः नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पान्त
 कालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं
 कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कलत्रं
 जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां च
 लिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रका

॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिद्रुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टी
 करोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नाञ्जोधरोदरनिरुद्धमहा
 प्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥
 नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य
 न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव सुखाजमनलपकांति,
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
 शशिनान्हि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्द्रुदलितेषु तमस्सु
 नाथ ॥ निष्पन्नशालिवन शालिनि जीवलोके, कार्यं
 कियज्जलधरैर्जलप्रारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
 विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नाथ
 केषु ॥ तेजःस्फुरन्माणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं
 तुकाचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं
 हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति
 किं वीक्षितेन प्रवता नुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो
 हरति नाथ प्रवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो
 जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वद्रुपमं जननी प्रसूता ॥
 सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जन

यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः प
 रमं पुमांसं, मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ॥ त्वा
 मेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपद
 स्य मुनींजपन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमर्चित्यमसं
 ख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः
 ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शं
 करोऽसि ज्ञुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिव मा
 र्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोऽसि
 ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः
 क्षितितलामलनृषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
 राय, तुभ्यं नमो जिनजवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को
 विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः स्त्वं संश्रितो निरव
 काशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविबुधाश्रयजातगर्वैः
 स्वज्ञानेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैर
 शोकरुसंश्रितमुन्मयूख, माप्नाति रूपममलं जवतो
 नि ॥ २८ ॥ स्पष्टोऽसत्किरणमस्त तमोवितानं विव

रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासनै मणिमयूख
 शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
 बिंबं वियद्रिलसदं शुलतावितानं, तुंगोदयाद्विशिरसीव
 सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
 विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यन्त शंकशुचि
 निर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥
 उत्रत्रयं तव विज्ञाति शशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञा
 नुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्या
 पयत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निजहेमनवपंकज
 पुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूखाशिखाग्निरामौ ॥ पादौ
 पदानितव यत्र जिनेज धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परि
 कल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इहं यथा तव विभूतिरञ्ज्जिनेज, धर्मो
 पदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिन
 कृतः प्रहतां धकारा, तादृकुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽ
 पि ॥ ३३ ॥ श्रियोतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्त
 भ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताग्रमिजमुद्धतमाप
 तंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदा श्रितानाम् ॥ ३४ ॥

त्रिनेत्रकुङ्जगलपुज्ज्वलशोणिताक्तः मुक्ताफलप्रकरचू
 षितचूमिजागः ॥ वधक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
 नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कटपांत
 कालपवनोद्धतवह्निकल्पः दावानलं ज्वलितमुज्ज्वल
 मुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतः
 त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकंठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतं
 तम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः स्वन्नामना
 गदमनी हृदि यस्यपुंसः ॥ ३७ ॥ वटगतुरंगगजगर्जित
 तन्नीमनादः माजौ बलं बलवतामपि नृपतीनाम् ॥ उद्य
 दिवाकरमयूखशिखापविधं त्वत्कीर्तना तमइवाशु त्रि
 दासुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रत्रिन्नगजशोणितवारिवाहः
 वेगावतारतरणानुरयोधनीमे ॥ युद्धे जयं विजितपुर्ज
 यजेयपक्षाः स्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥
 अञ्जोनिधौ क्षुभितनीषणनक्रचक्रः पाठीनपीठभयदो
 ल्वणवाडवाग्रो ॥ रंगतरंगशिखरस्थितयानपात्राः स्वा
 सं विहाय प्रवतः स्मरणाद्भजन्ति ॥ ४० ॥ उद्धृतनीषण

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४.
एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थकराः ॥

॥ नै श्रीरूपन्न १, अजित २, संजव ३, अग्निं
दन ४, सुमति ५, पद्मप्रन्न ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रन्न ८,
सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२,
विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६,
कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०,
नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४,
एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ नै श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयं
प्रन्न ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेठा
ल ८, पोष्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अम
म १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५,
चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९,
विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३,
नदंकर २४ ॥

॥ एते प्रावितीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

न्तिकरा ज्वंतु मुनयो मुनिप्रवराः रिपु विजयदुर्नि
 क्तकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रहंतुवो नित्यं ॥ ॐ श्रीना
 म्नि १. जितशत्रु २. जितारि ३. संवर ४. मेव ५.
 धर ६. प्रतिष्ठ ७. महसेन नरेश्वर ८. सुग्रीव ९. दृ
 ढरथ १०. विष्णु ११. वसुपुज्य १२. कृतवर्म १३,
 सिंहसेन १४. ज्ञानु १५. विश्वसेन १६, सूर १७, सु
 दर्शन १८. कुंज १९. सुमित्र २०, विजय २१. स
 मुद्रविजय २२. अश्वसेन २३. सिद्धार्थ २४, ॥

॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १. विजया २. सेना ३. सिद्धार्था
 ४. सुमंगला ५. सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७. लक्ष्म
 णा ८, रामा ९. नंदा १०, विष्णु ११, जया १२. श्या
 मा १३. सुयशा १४. सुव्रता १५, अचिरा १६. श्री
 १७. देवी १८. प्रज्ञावती १९, पद्मा २०. वप्रा २१.
 शिवा २२. वामा २३. त्रिशला २४, ॥

॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३. यक्षनाय

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,
एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषज्ञ १, अजित २, संज्ञव ३, अग्निं
दन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रज्ञ ८,
सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२,
विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६,
कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९, सुनिसुव्रत २०,
नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४,
एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयं
प्रज्ञ ४, सर्वानुचूति ५, देवश्रुत ६, नदय ७, पेढा
ल ८, पोष्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अम
म १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५,
चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९,
विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३,
चंद्रकर २४ ॥

॥ एते जावितीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

(१५५)

निकरा भवंतु सुनयो मुनिप्रवराः रिपु विजयदुर्जे
हृकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रहंतुवो नित्यं ॥ ॐ श्रीना
मि १. जितशत्रु २. जितारि ३. संवर ४. मेव ५.
धर ६. प्रतिष्ठ ७. महसेन नरेश्वर ८. सुग्रीव ९. दृ
ढरथ १०. विष्णु ११. वसुपुज्य १२. कृतवर्म १३.
सिंहसेन १४. जानु १५. विश्वसेन १६. सूर १७. सु
दर्शन १८. कुंज १९. सुमित्र २०. विजय २१. स
मुद्रविजय २२. अश्वसेन २३. सिद्धार्थ २४. ॥

॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १. विजया २. सेना ३. सिद्धार्थी
४. सुमंगला ५. सुसीमा ६. पृथिवीमाता ७. लक्ष्म
णा ८. रामा ९. नंदा १०. विष्णु ११. जया १२. श्या
मा १३. सुयशा १४. सुव्रता १५. अचिरा १६. श्री
१७. देवी १८. प्रजावती १९. पद्मा २०. वशा २१.
शिवा २२. वामा २३. त्रिशला २४. ॥

॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १. महायक्ष २. त्रिमुख ३. यक्षनाय

२१ शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४.
एते अतीत चतुर्विंशतितीर्थकराः ॥

॥ नै श्रीरुषज्ञ १, अजित २, संजव ३, अग्निनं
दन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज्ञ ८,
सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२,
विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६,
कुंथु १७, अर, १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०,
नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्धमान २४,
एते वर्त्तमानजिनाः ॥

॥ नै श्रीपद्मनाभ १, सूरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयं
प्रज्ञ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेठा
ल ८, पोष्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अम
म १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५,
चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९,
विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३,
नद्रंकर २४ ॥

॥ एते जावितीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शा

(१५७)

स्र महाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोद्या १३, अबुष्ठा
 १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश वि
 द्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति
 चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु
 पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहा श्रंज सूर्यगारक बुध बृहस्पति शु
 क्रशनिश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरु
 णकुबेरवासवादित्यस्कन्दविना यका ये चान्येऽपि ग्राम
 नगर क्षेत्रदेवतादय स्तेसर्वे प्रीयन्तां २ ॥ अर्हण को
 शकोष्ठा गारा नरपत यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र
 मित्र भ्रातृ कजत्र सुहृत् स्वजन संबंधि बंधुवर्ग सहिताः
 नित्यं चामोद प्रमोद कारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च
 नृमंरुजे आयतन निवासिनां साधु साध्वी श्रावक
 श्राविकाणां, रोगो पमर्ग व्याधि दुःख दौर्मनस्यो प
 शमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पुष्टिरुद्धिबुद्धिमाङ्गल्यो
 त्सवा भवंतु ॥ सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्री
 मते शान्तिनाथाय नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रेलोक्ये

क ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजि
त ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३,
पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षरा
ज १८, कुबेर १९, वरुण २०, षट्कुटि २१, गोमेध २२,
पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ नै चक्रेश्वरी १, अजितबला २, पुरितारी ३,
काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, षट्कुटि
८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२,
विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६,
बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०,
गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका
२४ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ नै क्लीं श्रीं हृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी,
मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामा
नो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ नै रोहिणी १, प्रज्ञा २, व
ज्रशंखजा ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६,
काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वा

(१५८)

स्यामराधीश, सुकुटाभ्यर्चितांहये ॥ १ ॥ शान्तिः शां
तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मेगुरुः ॥ शान्तिरेव
सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट,
दुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादित हितं
संपत्. नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंवपौरज
नपद. राजा धिपराज संनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्या
नां, व्याहरणै व्याहरेष्वांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंवस्य
शांतिर्नवतु, श्रीपौरलोकस्य शांतिर्नवतु ॥ श्रीजन प
दानां शांतिर्नवतु। श्रीराजाधिपानां शांतिर्नवतु। श्रीरा
जसंनिवेशानां शांतिर्नवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्नवतु,
ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्षी श्री श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा॥
एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं
गृहीत्वा, कुंकुम चंदन कर्पूरा गरुधूपवास कुसुमांजलिस
मेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंवसमेतः, शुचिः शुचिवपुःपुष्पव
स्त्र श्रंदनाभरणालंकृत चंदन तिलकं विधाय पुष्पमालां
कंठे कृत्वा, शांतिमुद्रावोपयित्वा शांतिपानीयं मस्तके
दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गा

यंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्-
 कल्याण प्राजोहि जिनाग्निषेके ॥ १ ॥ अहं तिष्ठयस्मा
 या शिवादेवी, तुम्ह नयारि निवासिनी ॥ अम्ह शिवं
 तुह्य शिवं, असुहोवसमं शिवं ऋवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शि
 वमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता ऋवंतु नूतगणाः ॥
 दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी ऋवतु लोकः ॥ २ ॥
 उपसर्गाः कृत्यं यांति, तिष्ठन्ते विघ्नवद्वयः ॥ मनःप्रसन्न
 तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशांतिः
 समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपञ्जरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ क्षी श्री अर्ह अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ क्षी श्री
 अर्ह सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ क्षी श्री अर्ह आचार्य्य
 भ्यो नमोनमः ॥ ॐ क्षी श्री अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो
 नमः ॐ क्षी श्री अर्ह श्री गौतमस्वामिप्रमुखमर्वसाधु
 भ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च नमस्कारः, सर्व पापक्षयं
 करः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं ऋवति मंगलं ॥ २ ॥
 ॐ क्षी श्री जयेविजये, अर्ह परमात्मने नमः ॥ कमल

प्रत्यक्षं च त्रापते जिनपञ्जरं ॥ ३ ॥ एकत्रकोपवासेन
 त्रिकालं यः पठेद्दिदं ॥ मनोजिह्वपितं सर्वं फलं स ज
 नने ध्रुवं ॥ ४ ॥ नृशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभवि
 श्जितः देवताग्रं पवित्रात्मा, पण्मासेर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥
 अर्धं स्थापयेन्मूर्तिं, सिद्धं च कर्तुर्लजाटके ॥ आचार्यं श्रो
 त्रयोग्ये, उपाध्यायं तु ब्राह्मणे ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं सुत
 रगाग्रं, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी
 र्गो र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनप्रेषी, वामपार्श्वे लि
 तो जिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥
 पूर्वांशां श्रीजिनो रक्ते, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षि
 णांशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च ॥ ९ ॥

(१६१)

पार्श्वदेवोयं, तानु चंद्रप्रज्ञो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधी
 रक्तेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासु
 पूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते, दनंतोऽसौ
 स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽप्युदरास्थानि, श्रीशांतिर्नाभिं
 मूलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥
 मत्त्रिसरुपृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादां
 गुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमिश्वरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः
 सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेज
 स्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेषपापेभ्यो, वीत
 रागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे
 शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौरा ग्निसर्पादि, नूतप्रेतजयाश्रिते ॥
 ॥ १९ ॥ अकालमरण प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
 अपुत्रत्वेमहादोषे, मूर्खत्वे रोगपीनिते ॥ २० ॥ नाकि
 नीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्द्धिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववे
 पम्प्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेवमनुष्ठाय-
 यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभ्यते
 सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवा

प्रज्ञसूरींशो, प्रापते जिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकत्रक्तोपवासेन,
 त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोज्ञलिपितं सर्वं, फलं स ज
 नते ध्रुवं ॥ ४ ॥ नृशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविव
 र्जितः देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥
 अर्हतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्जलाटके ॥ आचार्यं श्रो
 त्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुख
 स्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचञ्चनिरोधेन, सुधीः
 सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनध्रेषी, वामपार्श्वे स्थि
 तो जिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥
 पूर्वाशां श्रीजिनो रक्ते, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षि
 णाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमा
 शां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत
 सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवा
 नर्ह, न्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षु
 सकलं कुलं ॥ ११ ॥ रुषजो मस्तकं रक्ते, दजितोपि विलो
 चने ॥ संज्ञवः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनन्दनः ॥ १२ ॥
 नष्टौ श्रीसुमतीरक्षेत्, दन्तान्पद्मप्रज्ञो विभुः ॥ जिह्वां सु

(१६१)

पार्श्वदेवोयं, तावु चंद्रप्रज्ञो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधी
रहेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासु
पूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते, दनंतोऽसौ
स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाज्जिमं
मूलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥
मत्तिसरुपृष्ठिवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादां
गुलीर्नमी रहेत्, श्रीनेमिश्वरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः
सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेज
स्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेऽशेषपापेभ्यो, वीत
रागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे
शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौरा न्निसर्पादि, नूतप्रेतत्रयाश्रिते ॥
॥ १९ ॥ अकालमरण प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
अपुत्रत्वेमहादोषे, मूर्खत्वे रोगपीनिते ॥ २० ॥ नाकि
नीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववे
पम्भ्यः व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेवसमुन्नाय,
यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभ्यते
सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवा

सरं ॥ कमलप्रज्जराजेंद्र, श्रियं स लज्जते नरः ॥ २३ ॥
 प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजरा-
 ख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्ञाख्यां, लक्ष्मीं मनोवां-
 न्तिपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपद्मीयवरेण्यगन्धे, देवप्रज्ञा-
 चार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वार्दीन्द्रचूनामाणिरेपजैनो, जीयाद्
 गुरुः श्रीकमलप्रज्ञाख्यः ॥ २५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीश्रावककी नित्य करणी ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परज्ञात, चारघडी ले
 पिठली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जिम पामे
 जव सायर पार ॥ १ ॥ कवणदेव कवण गुरुधर्म, कवण
 अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवुं चित
 वजे मनमांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्म
 तनीहैडे धर बुद्ध ॥ पणिकमणुं करे रयणी तणुं, पातक
 आलोए आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पञ्चकाण,
 सूधी पाले जिनवर आण ॥ मुणजे गणजे स्तवन सि
 शाय, जिणहुंती निस्तारोथाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य

चनुदे नीम, पालेदया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जु
 हारे देव, द्रव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसालें गुरु
 वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्द्व
 षण सूऊतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ सहा
 मीवत्सल करजे घणुं, सगपण मोहोडुं साहमीतणुं ॥
 दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुवि
 शेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मोटाशुं म करे अ
 जिमान ॥ गुरुने सुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश
 एकाघनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंठा अधिका
 नो परिहार ॥ म जरिश केनी कूनी साख, कूना जनशुं
 कथन म जाख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कही ये वत्रीश, अज
 दय वावीशे विश्वावीश ॥ ते ऋण नवि कीजें किमे,
 काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रीनोजनना
 बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी सावू लोह
 नेगुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म
 करावे रंगण पास, दूषण वणां कह्या उे तास ॥ पाणी
 गलजे वे वे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥

जीवाणीनां करजे यत्, पातक ठंभी करजे पुण्य ॥ ३३ ॥
 णां इंधणचूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ ३४ ॥
 घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धौइश चीरा ॥
 बारैव्रत सूधा पालजे, अतीचार सगला टालजे ॥ ३५ ॥
 कही या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ शीश
 म लेजे अनरथ दंन, मिथ्या मेल म जरजे पिंन ॥ ३६ ॥
 समकित शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने नाखजे ॥
 उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुन्नचित्त
 ॥ ३७ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दही, ऊवाडा मत मेलो
 सही ॥ पांचे तिथि मकरो आरंजन, पालो शीयल
 तजो मन दंन ॥ ३८ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार
 चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप
 जिम नांजे सवला संताप ॥ ३९ ॥ संध्याये आवश्यक
 साचवे, जिनवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण क
 री दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ ४० ॥ करे
 मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जेहवा ॥ समेतशि
 खर आंबू गिरनार, जेटीश कब हुं धन अवतार ॥ ४१ ॥

श्रावकनी करणी ते एह, एहथी थाये जवनो तेह ॥
 आठे कर्म पडे पातला, पाप तणा वूटे आमला ॥ २१ ॥
 वारु जहियें अमर विमान, अनुक्रम पामे शिवपुर धाम ॥
 कहे जिनहर्ष वणे समनेह, करणी दुःखहरणी ते एह ॥ २२ ॥
 इति श्री श्रावकनी करणीनीस ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ अष्ठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाउली वाडियें निद्रा दूर करीनें, पंचपर
 मेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्र
 थम दिवमें पडिलेही राख्या, जे पोसहनानुपगण, ते
 लेई, पोसहशास्त्राये थापनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो
 संयोग हुवे तो गुरुनी पामे आवी, जूमि प्रमाजीं एक
 खमानमण देई, इरियावहि पडिकर्मी पीठें खमानमण
 देई ॥ इच्छा का० ॥ मं० ॥ ज० ॥ पोसह सुहसति पनि
 लेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह, इठें कही खमानमण देई
 सुहसति पनिजेहे पीठें उतो थई, खमानमण देई
 इच्छा का० ॥ मं० ॥ ज० ॥ पोसह मंदिमताठें ?
 गुरु कहे, मं दिस्मावेह, पीठें इठें कही, खमानमण

जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंभी करजे पुण्य ॥ ठां
 णां इंधणचूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होया ॥१३॥
 घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धौइश चीरा ॥
 वारैव्रत सूधा पालजे, अतीचार सगला टालजे ॥१४॥
 कही या पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ शीश
 म लेजे अनरथ दंरु, मिथ्या मेल म जरजे पिंरु ॥१५॥
 समकित शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥
 उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त
 ॥१७॥ तेल तक्र घृत दूधने दही, ऊवाडा मत मेलो
 सही ॥ पांचे तिथि मकरो आरंज, पालो शीयल
 तजो मन दंज ॥१६॥ दिवस चरिम करजे चोविहार
 चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप
 जिम जांजे सघला संताप ॥१८॥ संध्याये आवश्यक
 साचवे, जिनवर चरण शरण जवजवे ॥ चारे शरण क
 री दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥१९॥ करे
 मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जेहवा ॥ समेतशि
 खर आंबू गिरनार, जेटीश कब हुं धन अवतार ॥२०॥

बीजी खमासमण देई मुहपत्ति पडिलेहे. पीठें दोय ख
 मासमणें सामायिक संदिस्सानं? सामायिक ठानं?
 कही खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊजो थको तीन
 नवकार, गुणी तीन करेमि जंते उबरी दोय खमासमणें
 बेसणो संदिस्सानं? बेसणो ठानं? कही. पीठें दोय ख
 मासमणें सिझाय संदिस्सानं? सिझाय करूं? कही खमा
 समण देई ऊजो थको आठ नवकारनो सिझाय करे.
 शीतादि परीसहें दोय खमासमणें. पांगरणं संदिस्सानं ?
 पांगरणं पडिग्यानं? कहे. ए सर्व सामायिकविधि
 पूर्वे कहीं ठे. तिमहीज करवी. पण इतनो वि
 शेष ठे. पहिलां इरियावही पम्किमी ठे. ते माटे
 इहां सामायिक दंमक ऊबख्यां पीठें इरियावही नहीं
 पडिकमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरराय सूधी करी
 कुसुमिण दुस्समिण कानस्सगग करे, पीठें पडिकमणवे
 लासीमसिझाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पडिकमण
 करे, पण इतरो विशेष के चारे थुईए देव बांध्या पीठें
 खमासमण देई कहे ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहु

देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह उअं ?
 गुरु कहे ठाएह. पीठें इहं कही खमासमाण देई उअं
 थई. आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ति देई. मधुर
 स्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् पसाठ
 करी. पोसह दंभक उअरावो ? गुरु कहे उअरावेमो ॥
 पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वोसि
 रामि ॥ तक कहे सो लिखते हैं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पोसहका पञ्चकखाण प्रारंभः ॥

करेमि जंते पोसहं, आहार पोसहं, देसन सवन वा,
 सरीरसकार पोसहं, सवन वंजचेर पोसहं, सवन अवावार
 पोसहं, सवन चनविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
 जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, पुविहंतिविहेणं,
 मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कार वेमि, तस्सजंते,
 पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण कस्तो उ
 चरे ॥ पीठें एक खमासमाणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥
 सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह,

देई ॥ इठाका० ॥ सं० ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिले
हुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीठें इठं कही, मुहपत्ति पडि
लेही दोय खमासमणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही
पडिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही
पडिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह. पीठें इठं क
ही, कंवल वस्त्रादि पणिलेही पोसहशाला प्रमार्जी का
जो विधिथुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही
पडिकमे. इहां आचार दिन करमें कह्यो ते. दोय खमा
समणें इठाका०, ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्सानं ?
वसती पणिलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे.
इत्यादि पण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ॥ ॐ ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इठाका० सं० ज० ॥ सि
झाय संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमास
मणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय करुं ? गुरु
कहे करेह. पीठें इठं कही नवकार एक कथन पूर्वक उ
पदेशमाला प्रमुख सिझाय करी. नवकार एक कही
धर्मध्यान करे. जणे, गुणे, वखाण सुणे. इम करतां

वेलं संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीठें इठं कही,
 खमासमण देई कहे. इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं
 करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इठं कही, तीन खमास
 मणें श्रीआचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २,
 श्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मचूमिहिं कम्मचूमिहिं, इत्या
 दि नमस्कार जणे, जो पडिलेहणवेला नही हुवे, तो
 सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे
 पडिलेहण वेला पडिलेहण करे, ते विधिपूर्वें लिख्यो ठे.
 तो पण संक्षेपें फेर लिखीयें ठे. दोय खमासमणें, इ
 ठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ति
 पडिलेहे. पीठें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदि
 स्सानं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे पीठें गुरुवचनें इठं
 कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहिरी, खमास
 मण देई. इठकार जगवन् पसान करी, पडिलेहण क
 रावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे,
 अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण ख
 मासमण देई. उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण

(१७१)

चेईयाणं करेमि कानुस्सगं वंदणवत्ती० अन्नवु० कही.
 एक नवकारनो कानुस्सगग करे. पारी एक थुईकी
 गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्स० सबजोए अरि० वंदणव०
 अन्नवु० कही एक नव० पारी, दूसरी थुईकी गाथा क
 हे, पीठें पुक्खर वरदी० सुअस्स जग० वंदण० अन्नवु०
 कही एक नवकार० पारी, तीसरी थुई की गा० पीठें सि
 द्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च गराणं० अन्नवु० इत्यादि
 कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कहकर बैठके न
 मोवुणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरे चार थु
 इये देव वांदी वेसे ॥ नमोवुणं कहे. न मोर्हत्तिद्धाचा
 योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे. पीठें ज
 यवीराय कही. नमोवुणं सबे तिविहेण वंदामि पर्यंत क
 हे ॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधि जाणवी ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कही
 ठे, तथा चैत्यवंदन बृहज्जाप्यमें एम कहाँ ठे ॥ नम
 स्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्र
 मणादि करे; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही

पूण पहर दिन चढ्यां. जग्घाडा पोरिसी अथवा. बहु
 पन्निपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही
 पडिकमी दोय खमासमणें ॥ इत्ताका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥
 पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इत्तं कही, मुहपत्ति पडिले
 ही पान जोजन पात्र पन्निजेही राखे. पीठें सिझाय
 ध्यान करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पां
 चे शक्रस्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसैं लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई, तीन वार नमस्कार करी,
 भूमि प्रमार्जी. पुरुष हुवे तो प्रनुजीके दक्षिण पासें
 बेसे, स्त्री हुवे ते वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इत्ता
 का० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इत्तं कही, चै
 त्यवंदन करै ? पीठें नमोबुणं कहे. खमासमण देई इ
 रियावही पन्निमैं. एक लोगस्सनो कानुस्सग्ग करे.
 मुखें लोगस्स कहे. संमासाप्रमा जीं बेसे. चैत्यवं
 दन करके जं किंचि नाम तिठं । इत्यादि
 कही पीठें नमोबुणं कहे. उजो थई अरिहंत

तबो. पीठें तहतति कही: अमुक पञ्चस्काण चउविहार
करयो. एम कही एक नवकार गुणी पञ्चस्काण फासियं,
पालियं. सोहियं. तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जंच न
आराहियं, तस्म मिठामि डुक्कडं कही ॥ चैत्यवंदन करे.
हणमात्र मिज्जाय करी यथा संजवे, अतिथिसंविजाग
करी पाणी पीवे ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे. तो पोरिसी प्रमुख पञ्च
स्काण पारी आहार करे. पीठें आसण बैठी थकोहीज
दिवस चरिम पञ्चस्के. पीठें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवं
दन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥
इति पञ्चस्काण पारणेकी विधि ॥ ॥ ॐ ॥

॥ पीठें जो बहिर्नृमि जावणो हुवे. तो आवत्सही
कही उपयोगी थको. निर्जीव थंमिले जई. अणुजाणह
जत्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर. सूर्य. ग्रामादिकर्ने
पूठि अण देई मज्जमूत्र परिठवे. प्राशुकजर्ने शुद्ध थई
तीन बार वोसिरामि. एहबुं कहिवे करी मज्ज मूत्र वो
सिरावी, पोसहशालायें नित्सही पूर्वक पेमी इरियावही

दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही जा
वंति चेइ याइं गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति
के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबुण
कही, जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदण विधिः ॥

॥ पीठें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी.
इरियावही पम्किमे. पीठें सिझाय ध्यान करे, जो ति
विहार उपवास कियो हुवे. तो पच्चरकाण वेला पूर्ण
हुवां जलपीणेकूं पच्चरकाण पारे ॥

॥ हिवे पच्चरकाण पारवा विधि लि० हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे. फिर एक
खमासमण ॥ इठा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पच्चरकाण
पारवा मुहपत्ति पम्किलेहुं? गुरु कहे, पम्किलेहेह ॥
पीठें इठं कही खमासमण देई. मुहपत्ति पडिलेहे, फेर
एक खमासमण देई, इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पाण
हार अमुक पच्चरकाण पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायबो.
पीठे यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इठाका० ॥
सं० ॥ ज० ॥ पाणहार पारुं? गुरु कहे, आयारो न मो

पडिकमे. खमासमण देई कहे ॥ इठाका० ॥ सं० ॥
 न० ॥ गमणागमण आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह.
 पीठें इठं कही गमणागमण आलोवे ॥ ते इम आवस्स
 ही करी, प्राशुक देशें जई. संनासा पूंजी, थंडिला प
 डिलेही, उवार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पो
 सहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं
 विराहियं, तस्स मिठामि डुकडं ॥ एम कही बेसे, पीठें
 पडिलेहण वेला सीम सिझाय करे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे पाडले पंहु र इरियावही पडिकमीखमासमण
 देई कहे. इठाका० ॥ सं० ॥ न० पडिलेहण करूं ? गुरु
 कहे. करेह. इठं कहीदूजे खमासमणे इठाका० ॥ सं० ॥
 न० ॥ ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह.
 पीठें इठं कही, मुहपत्ति पमिलेही दोय खमासमणें
 अंग पडिलेहण संदिस्सानं ? अंग पडिलेहण
 करूं ? कहे पीठें गुरु वचने, इठं कही मुहपत्ति
 पमिलेही दंनासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी, पोस
 हशाला प्रमार्जे. पीठें काजो शुद्ध करी, उद्धरी, एकांतें

विखरतो परिठवीइरियावही पडिकमी, खमासमण पूर्व
 क कहे ॥ इठकार जगवन् पसान करी पडिलेहणा पडि
 जेहावोजी ॥ पीठें स्थापनाचार्य पडिलेहीस्थापे. गुरु
 समीपे अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई
 इठाका० सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ति पडिलेहं ? गुरु कहे,
 पडिलेहेह. पीठें इठं कही खमासमण देई, मुहपत्ति
 पडिलेहे. पीठें दोय खमासमणें ॥ इठाका० सं० ॥ ज० ॥
 सिझाय संदिस्सानं ? सिझाय करुं ? उक्त रीतें
 कृणमात्र सिझाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो
 गुरु साखें पाणिहार पचखे ॥ उपधानवाही प्रमुख
 आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई पचस्काण करे
 पीठे एक खमासमण देई ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥
 उपधि थंमिजा पडिलेहण संदिस्सानं ? बीजे खमास
 मणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंडिजा पडि
 लेहुं ? गुरुवचनेंइठं कही, दोय खमासमणें ॥ इठाका०
 सं० ॥ ज० ॥ वेसणो संदिस्सानं ? वेसणो ठातुं ? कही
 वेसे. वस्त्र कंवजादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते

मुहपत्तिशुं पडिलेहे. उपवासी तो ते तेमाटे सर्व पात्रो
 कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्र
 मुख जोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेह्यां पीठें
 वस्त्र कंजलादि पडिलेहे. ए विशेष ते ॥ पीठें काल
 वेला सीम सिझाय ध्यानकरे पीठें उच्चार प्रश्रवण २४
 थंमिजां पडिलेहे, जो चउदश हुवे, तो पाखी चउमासी
 पडिकमणो करे, संवत्तरीये संवत्तरी पडिकमणो करे.
 तिहां देवसी पडिकमणो पूर्वे लिख्यो ते तिमहीज करे.
 पण इतरो विशेष ते ॥ इत्ता० देवसियं आलोएमि इ
 त्यादि देवसी आलोयां पीठें “ ठाणे कमणे चंकमणे ”
 इत्यादि पाठ कहे. खुदोवदव कानुत्संग कियां पीठें
 दोय खमासमणें ॥ इत्ताका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिझाय
 संदिस्सानं ? सिझाय करुं ? कही बैठो थको तीन नव
 कार प्रमुख सिझाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्तिकमणविधि पूर्वे लखी हे,
 वहांसैं जान लेनां. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे पडिकमणो हुवा पीठें साधुकी वेया वच्च की

(१७७)

पोरसी सीम सिझाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख
करवी हुवे, तो आसज्ज कह तो थको, नृमि प्रमार्जे थं
मिज स्थानकें जई, देहशंका निवारे, प्रश्रवण वोसरा
वी, स्वथान कें आवे. जगवन् बहु पन्निपुन्ना पोरसी
एम कही खमासमण देई इरियावही पन्निक्कमे. पीठें
राईसंधारा विधि करे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे ठे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥
राई संधारा मुहपत्ति पन्निजेहुं ? गुरु कहे पन्निजेहेह.
पीठें इठं कही, खमासमण देई मुहपत्ति पन्निजेहे. एक
खमासमणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ राई संधारो
संदिस्साजं ? बीजे खमासमणें ॥ इठाका० सं० ॥ ज०
राई संधारो ठाबुं ? पीठें गुरु वचनें इठं कही, चउक्क
साय पडिमल्लुवूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक
जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. नृमि प्रमार्जी. सं
धारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीठें शरीर प्रमार्जी नित्सही नि
त्सही एम कही संधारे बेसी, तीन नवकार, तीन करे

मि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठ पहरी करवो हुवे,
तो जाव अहोरतिं पञ्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीठं
सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदण कुसुमिण पुस्त
मिण काउत्सगग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें
बहुवेळं संदिस्सावे २. अने जो पूर्व पडिक्कमणो गुरु सा
थें करचो हुवे. तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्या.
जे वस्त्र. ते पहरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय
खमासमणें बहुवेळं संदिस्सावे २. तथा जो गुरुसं जूदो
पडिक्कमणो करचो हुवे. तो गुरुपासं आवी पोसह सा
मायिक सर्व विधि करी. आलोयण खामणादि निमित्तें
मुहपत्ति पडिलेही वे वांदणां देई ॥ इत्थाका० ॥ मं० ॥
३० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे. आलोएह. पीठें राई
आलोवे. फेर एक खमासमण देई ॥ इत्थाका० ॥ मं० ॥
३० ॥ अम्रुठिउमि अग्निंतर. राइयं खामेमि ? गुरु कहे.
खामेह. पीठें सर्व पाठ कहे. राई खामे. पडिजां पडिक्क
मणामें नवकारमी पचख्यो थो तेमाटे पीठें गुरु ताखें
पचरकाण उषवामनो करे. पीठें दोय खमासमणें बहु

वेजं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां.
 हवे पडिलेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण आदेश मागवो.
 ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ प
 डिलेहण संदिस्सानं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करूं ?
 कही मुहपत्ति पडिलेहे. पीठें डमहीज दोय खमासमणें
 अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ति पडिलेहे. पीठें
 वली खमासमण देई. इच्छाकार जगवन् पसान करी प
 डिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे. पीठें एक खमास
 मण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उपधि मुहपत्ति
 पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अण पडिलेह्यो राख्यो हुवे,
 तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय ख
 मासमणें सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सि-
 झाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लि
 खी है, तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसही
 तो पाठली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस
 संबंधी चउ पुहरी पोसह लीधो हुवे, ते पाठले पुहर प
 चरकाण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पडिलेहण

(१८३)

संदिस्साजं नही पडिलेहण करुं ? कहे, पण थंमिजा पद
न कहे. अने थंमिजा नही पडिलेहे. यह निकेवल दिन
संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधि ही सो बताई ॥
इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहण विधि ॥ ॐ ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउ पुहरी पोसहनी
विधि कहे ठे ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच
र्यो है- पीठें संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो
जाव थयो. तो पचरकाण कियां पीठें दौय खमासमणें
पोसह मुहपत्ति पमिजेही तीन नवकार गुणी तीन वार
पोसहदंनक उचरे. पीठें सामायिक विधि पुर्वें लिखा
है. तिम करे पण सामायिक ऊचर्यां पीठें दौय खमास
मणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो
संदिस्सावी. पांगरणो संदिस्सावी, पीठें दौय खमास
मणें ॥ इठाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ नही थंमिजा पडिले
हण संदिस्साजं? नही थंमिजा पमिजेहण करुं? गुरु कहे,
करेह. इठं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया ॥

लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तोव्यग्र
 पणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो
 जाव थयां, पाउजे पहर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती
 प्रमार्जी हुवे, तो सख्यो, नही तो वसती प्रमार्जी, का
 जो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडि
 कमें. पीणें चउविहार पचरकाण करी दोय खमासमण
 देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नव
 कार गुणी, तीन वार पोसह दंरुक ऊचरे. तिहां दिवसे
 संरत्ति पज्जुवासामि कहे संध्या हुवे, तो रत्ति पज्जुवासा
 मि कहे, पीणें विहुं खमासमणें सामायिक सुहपत्ति पडि
 लेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर
 खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंतें
 ऊचरे. दोय खमासमण देई सिझाय संदिस्सावी, आठ
 नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई. वेसणो संदिस्सावी
 सीतादिकें वे खमासमण देई, पांगरणं संदिस्सावे, पीणें
 वे खमासमण देई, अंग पमिलेहण संदिस्सावी, सुहप
 त्ति पमिलेहे. फेर वे खमासमण देई, उही थंमिजा पडि

(१८५)

लेहण सांदिस्सावी जो अणपमिलेह्यो उपगरण हुवे, तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्या हुवे, तो पण था नकशून्यता टालवा जणी वली आसण पमिलेही, प मिकमण वेला सीम सिझाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवणना २४, थंमिजा पमिलेही पडिकमणो करे. तथा पाठली रातें वली सामायिक न लेवे. इतना नि केवल रात्रिसंवांधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ ठाणेक्रमणे चंकमणे ॥

॥ ठाणेक्रमणे चंकमणे आनुत्ते अणानुत्ते ॥ हरिअ काय संघट्टे वीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासं वट्टे सबस्सवि देवसिअ, दुच्चितिय दुप्पासिय दुच्चिठिय ॥ इठाकोरेणसांदिस्सह, इठं तस्स मिठामि दुक्कमं ॥ १ संथारानुवट्टणकी, आनुट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी उप्पइयासंवट्टणकी, अचरकुविसयकायकी, सबस्सविरा इअ, दुच्चितिय, दुप्पासिय, दुच्चिठिय, इठाकोरेण सांदिस्सह, इठंतस्स मिठामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ अथ २४ थंमिला पडिलेहण पाठ लि० ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे
 ॥ १ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे
 ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥
 आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे
 मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे
 अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अ
 हियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे
 ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥
 आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे
 मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे
 अहियासे ॥ ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासव
 णे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासव
 णे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे
 अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे
 अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अण
 हियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे

(१८७)

॥ १८ ॥ अणागाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे
 ॥ १९ ॥ अणागाडे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे
 ॥ २० ॥ अणागाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥
 अणागाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाडे
 मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाडे दूरे पासव
 णे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंम्लिपम्लिहण पाठ कया ॥
 ॥ यह चौवीस थंम्लिा कहां कहां करनां ॥
 सो लिखते हैं.

॥ ६ थंडिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३,
 वामपासे ३, पम्लिहे ॥ ६, थंडिला दरवज्जेके भीतर
 पासे दहिणें ३, वामें ३, पम्लिहे ॥ ६ थंडिला दरवज्जेके
 बाहर दोनुं पासे पडिलेहे ॥ ६ थंडिला जिहां उच्चार प्र
 सवणकी जगा होवे ते दोनुं तरफ पडिलेहे ॥ ॥
 इति २४ थंम्लिा पडिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ देव वांदणामें अथवा प्रातःकाल संध्याका
 लके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥ ॥ ॐ ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंरणं पुनसोवन्नदेहं जणाणंदणं केवज्जन ।

॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लात्र अपार ॥ चनुमासे
 रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ नवियणने तारे, देई
 धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक वि
 शेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करियें व्रत पच्चरकाण ॥
 आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल
 थाये, दिन दिन कोडि कळ्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे,
 इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनेकादशीस्तुतिः ॥

॥ अस्य प्रवज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा
 मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलहैकादश्यां स
 हसि लसद्गुदाममहसि, कितौ कळ्याणानां कृपतु वि
 पदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रश्रेण्यागमनगमनैर्चूमिव
 लयं, सदा स्वर्गं त्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिना
 नामप्यापुः कृणमतिसुखं नारकसदः, कितौ० ॥ २ ॥
 जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुं
 णामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां किति
 लुप्तवेयुर्वहुमुदः, कितौ० ॥ ३ ॥ सुरा सेंद्राः सर्वे सकल

जिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथाच ज्योतिष्काखिलन्नवनना
थाः समुदिताः, तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मित
हृदः, हितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनेकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ चतुर्दशीस्तुति ॥ हरिगीतगंद ॥

॥ जेजेकि धपमप धुधुमि धोंधों ध्रसकिधर धपयोरखं
दोंदोंकि दों दों दाग्निदि दाग्निदिकिजमकिजण रणद्रे
एवं ॥ ऊऊऊँकि ऊँऊँ ऊणणरणरण निजकि निजजन
रंजनं, सुरशैल शिखरे नवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिम
ज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि किटति गिग्रुदां धु
धुकि धुट नटपाटवं, गुणगुणण गुणगण रणकि ऐंऐं
गुणणगुणगणगौरवं ॥ ऊऊ ऊँकि ऊँऊँ ऊणण रणरण
निजकि निजजन सज्जना, कलयंति कमलाकलितक
लमल मुकलमीश महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें ठड्ठि
ठड्ठिक ठड्ठिपट्टा ताड्यते, तललोंकि लोंलों त्रैपि
त्रैपिनि त्रैपित्रैपिनि वाद्यते ॥ नै नै कि नै नै थुंगि थुं
गिनिधोंगिधोंगिनि कलखे, जिनमतमनंतं महिम त
नुता नमति सुर नरमुठवे ॥ ३ ॥ पुदांकि पुदां पुपुइदि

(१९२)

पुंदां पुषुइदि दौंदों अंबरे, चाचपट चचपट रणकि ऐं
 डणण में में मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि निधपमगर
 स सस ससस सुरसेवता, जिननाट्यरंगे कुशलमुनि
 शं दिशंतु शासनदेवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकु
 शलसूरिजीकृत पार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ नवपद स्तुतिः ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवग
 ति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ सम
 ता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर
 ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव श्रीपालतणी परि पामे
 सुख सुर संगें जी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पा
 ठक साधु महा गुणवंता जी, दरिसण नाण चरण तप
 उत्तम नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनो ध्यान धरंतां
 लहियें अविचल पद अविनाशी जी, ते सबला जिन
 नायक नमियें जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमा
 स मनोहर तिमवलि चैत्रक मास जगीशें जी, उजवाली
 सातम थी करियें नव आंबिल नव दिवसैं जी ॥ तेर सहस

(१९३)

बलि गुणियें गुणणुं नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर
मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
विमल कमलदल लोयण सुंदर श्रीचकेसरि देवी जी,
नवपद सेवक नविजन केरा विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥
श्रीखरतर गह्व नायक सद्गुरु श्रीजिनभक्ति सुनिंदा
जी, तासु पसायें इणपरि पज्जणे श्री जिनलान्न सुरिंदा
जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गानुं जिनवर वीर, जिनपर्व
पजूसण दाख्या धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासे हुंती
दिन पच्चास, पडिक्कमण संवठरी करियें त्रण उपवास
॥ १ ॥ चनुवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करियें न
लज्जावें नरियें पुण्य नंजार ॥ बलि चैत्य प्रवामें फिरतां
लान्न अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥
पुस्तक पूजावी नव वाचनायें वचाय, श्रीकल्पसूत्र जि
हां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परज्जावन धूप अग
र नरकेव, इमनविण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥

वलि साहमी वल्ल करियें वारंवार, केइ जावना जावे
 केइ तपसी शीलधार ॥ अडदीह पजूसण इम सेवत आ
 णंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिन लाज सुनिंद ॥ ४ ॥
 इति श्रीपर्युषणपर्वस्तुति ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अहोमि
 तं, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोभितं ॥
 शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं
 गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥
 अष्टापदे श्रीआदि जिनवर वीर जिन पावा पुरे, वासु
 पूज्य चंपापुरिय सीधा नेमि रेवय गिरिवरे ॥ समेत
 शिखरें बीस जिणवर सुगति पहुता मुनिवरू, चउबीस
 जिणवर तेह वंदूं सयल संधें सुख करू ॥ २ ॥ इग्यार
 अंग उपांग बारे दश पयना जाणि यें, उ व्हेद अंध
 पसठ अठा चार मूल वखाणियें ॥ अनु योग चार उदार
 नंदी सूत्र जिनमत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य
 पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक

बलि साहमी बल करियें वारंवार, केइ जावना जावे
 केइ तपसी शीलधार ॥ अडदीह पजूसण इम सेवत आ
 णंद, सुयदेवी सांनिध कहे जिन जाज सुदिंद ॥ ४ ॥
 इति श्रीपर्युषणपर्वस्तुति ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अहोनि
 तं, घनसघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंछन शोजितं ॥
 शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं
 गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥
 अष्टापदे श्रीआदि जिनवर वीर जिन पावा पुरे, वासु
 पूज्य वंपापुरिय सीधा नेमि रेवय गिरिवरे ॥ समेत
 शिखरें बीस जिणवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउबीस
 जिणवर तेह वंदूं सयल संधें सुख करू ॥ २ ॥ इग्यार
 अंग उपांग वारे दश पयन्ना जाणि यें, ठ व्वेद ग्रंथ
 पसठ अठा चार मूल वखाणियें ॥ अनु योग चार उदार
 नंदी सूत्र जिनमत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी जाध्य
 पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक

कधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
चंडगीस्सुमतिनो जव्यात्मनः प्राणिनौ याचकेऽवमक
ष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पञ्चतिथीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज
सुणो एक जगगुरु मुज आशाविसराम ॥ पूरव
विदेहें विजय जली पुष्कलावई नाम, जिहां विचरे
जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक
सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धनते महियल चरण
धरे जिहां जिनवर जाण ॥ धन ते जविजन जे रहे प्रनु
ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित माणे उठव
अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रनु सुजस तुह्मीणो सांजल
कान, मिलवाने उलसे मन माहरुं धरुं एक ध्यान ॥
जगति जुगति करवानी ते मुज सवली जोरु, पण प्रनु
लग पुहचीजें तेह नही पग दोड ॥ ३ ॥ आमा इंगर
अति वणा विच वहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये

प्रनुजी एटली दूर ॥ आंखडली उज्जो करे जोयवा सु
 ख जिनराज, पांखडली पाई नही ते विन किम सरे
 काज ॥ ४ ॥ वाटडली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ
 कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं
 शशिहर साथें कहूं संदेशा जेह, पण अजगो थई ऊपरि
 वाडे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रनुजी तुमथी
 एथ अवाय, तो इण भरतना वासी नवि जन पावन
 थाय ॥ साहिवनी तो सुनजर सगले सरिखी होय, पण
 पोतानी प्राप्ति सारूफल प्रतिजोय ॥ ६ ॥ अजगो तुं
 पण माहरे तुमथुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हि
 यडे खिण खिण चित्त ॥ हुं तुं सेवक तुं ठे माहरो आत्म
 राम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥
 साचे दिलथी मुळथुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर
 प्रनु करजो मोपरि महिर अठेह ॥ दूसम काज तणो
 दुःख टालो दीन दयाल, पाजो विरुद संनाजो निज
 सेवकथुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग धक्की पण
 कर अरदास, पण मोहोतानी महिर उतां नवि थाय

(१९८)

राश ॥ केई वसे प्रनुपासैं केई वसे ते दूर, राजमहिरनी
रीतैं सकलने जाणो हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नाय
कलायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज
आत्म नमंग ॥ सहिजें एक पलकजो थाये प्रनु तुज सं
ग, लाज उदयजिन चंचलहे नित प्रेम अमंग ॥ १० ॥
॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ बीजका स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामिसीमंधरा
तुम्ह जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे
घणो, करीय सुपसाय जे वीनबुं ते सुणो ॥ १ ॥
तुम्हशुं कूड अरिहंत शुं राखियें, जिसो अने तिसो
कर जोडि करि जाखियें ॥ अति सबल मुज हिये मोह
माया वणी, एक मन जगति किम करूं त्रिनुवन
धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगडे;
रीश चटको चढे लोज वयरी नडे ॥ नयण रस वयण
रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हियडेनवि वसी
यो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियडे अनेरो धरूं, मूढ

मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंहिज अरिहंत जाणे
 जिसो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥
 कम्मवसि सुखने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरि
 हंत किणनें कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा
 दुःख हरि सुरक करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण
 संयोग आगम वयण पण सुणूं, धर्म न कराव प्रनु पाप
 पोतें घणूं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नही, एह आधा
 र जगजाणजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ धण कणय मायपिय
 पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥
 जय जयो जगगुरु जीव जीव न धरा, तुम्ह सम बड
 नही अवर वाढेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणूं
 सदा सांजळुं, बारवर परषदा मांहि आवी मिळुं ॥
 चित्त जाणूं सदा सामि पाय उज्जळुं, किम करूं ठाम पुं
 रुगिरि वेगळुं ॥ ८ ॥ ज्ञोलिडा जगति तूं चित्त हारे
 कित्ये, पुण्य संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने ना
 म मन वयण तन उल्लस्ये, दूर थी दूकडा जेम ६
 वसे ॥ ९ ॥ जल जलो एणि संसार सहू ए अणे,

सीमंधरा ते सहु तुम पढे ॥ ध्यान करतां सुपन मांहि
 आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥
 साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात
 तुह्म ची कहे ॥ तुह्म पाय जेट्वा अति घणुं टलवलुं, पं
 ख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि
 लेखणी आज्ञा कागल करुं, क्षीरसागर तणा दूध खडि
 या नरुं ॥ तुह्म मिलवा तणा सामि संदेशडा, इंद्र पण
 लखिय न शके अठे एवडा ॥ १२ ॥ आपणे रंग जरि
 वात मुख जेटली, ऊपजे सामि न कहाय मुख तेटली
 ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेश्वरा, लाड ने कोड प्रनु पूर
 सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुत्र नविमोह वशि नेह हुवे जे
 हने, समारियें एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जि
 म कमल नमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥
 ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं, वापडुं पाप
 हिव रहिय करशे किस्सुं ॥ ठाम जिम गरुडवर पंखि
 आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥
 पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुह्म

पाय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रभु पालशुं दुःख
 जंडार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुह्म हुं दास हुं
 तुह्मसेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥
 एवढी माहरी जगति जाणी करी, आपजो बापजी सा
 र केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुचि वृद्धि समृद्धि
 कारण दुरित वारण सुख करो, नवजाय वर श्रीभक्ति ला
 जें थुएयो श्रीसीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु जीवजीवनक
 रो सामि मया घणी, कर जोडि बलि बलि वीनबुं
 प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १९ ॥ इति श्रीसीमंधर
 जीनी स्तुति संपूर्ण ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ पंचमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमं श्रीगुरु पाय, निरमल न्यान उपाय ॥
 पांचमि तप जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउ
 बीसमों जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगडे गह
 गह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान बडो संसार
 न्यान सुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, नाचो
 सदैव्यो ए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविजान, लोकानो

रे ॥ केवल ज्ञान समुं नहि कोई, लोकालोक प्रकाश
 रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पुरो
 उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पासुं, ज्ञाननो पंच
 मो जेद रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनअष्टमीस्त० ॥

॥ अमल कमल जिमधवल विराजे, गाजे गोडी
 पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुरनरमन धरिय उद्वास ॥ १ ॥
 सोजागी साहिब मेरा बे, अरिहां सुग्यानी पास जिणंदा
 बे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मोमन अ
 धिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि ब
 वीय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥ जव दुःख जंजन ज
 नमनरंजन, खंजन नयन शुरंग ॥ श्रवण सुणी गुण
 ताहरा, माहरा विकस्या अंगोअंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ०
 ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, दे वहिलो दीदार ॥ प्रार
 थियां पहिडे नही, साहिबा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥
 सो० ॥ अ० ॥ प्रनु सुखचंद विलोकित हरखित, नाचत
 नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर

॥ ३ ॥ पाच ठते कुण काचनें जी, अजवे पसारे
 हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, वांवल घाले बाथ
 ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूंजी, तो प्रनु तुम
 ची आण ॥ श्रीजिनराज जवो जवें जी, तुहीज देव
 प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ एकादशी वृद्धस्तवनं ॥

॥ समवसरण वेठा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहं
 त ॥ वारै परषदा बैठी जुनी, मागशिर शुदि इग्यारस
 वडी ॥ १ ॥ मखिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा
 ने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी खूवडी ॥ मा० ॥
 ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनुं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक
 अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा० ॥
 ॥ ३ ॥ पांच जस्त ऐखत इमहीज, पांच कल्याणक
 हुवे तिमहीज ॥ पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्या
 णक थाये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथि जे वडी ॥ मा०
 ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परिगिणो, लाज अनंत

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव कहं तिन तिन
 में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरणीशुं राच्यो, काहूको
 चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात
 क चित्त वनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे
 अलख निरंजन तिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर
 तुमही, साहिव तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥
 जाव दयासागर प्रनु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥
 वीर प्रनु सिद्ध थया संव सकल आधारो रे ॥ हिव
 इण अस्तमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥
 ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संव ॥
 साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥
 वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा
 अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल
 थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय ठेदकवीरनो रे, विरह ते
 केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुज्जनो रे,
जव अट्ठी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम
वाये उठाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत
तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार ठे रे
ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले
सव जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि
जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
गणधर आचारिज सुनी रे, सहुने इण परिसिद्ध ॥ ज
व जव आगम संगथी रे, देवचंज पद लीयो रे ॥ वीर
॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ज्यज्ज समोसरथाः जला गुणजरथा रे ॥
सीया साधु अनंतः तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याण
क तिहां थयां सुगते गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती०
॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जलें जराव्या
विंव ॥ ती० ॥ आधु चौमुख अति जलोः त्रिनुवनतिलो
रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेंसर अन्तरजामी, सेव करुं तिन तिन
 में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरणीशुं राच्यो, काहूको
 चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात
 क चित्त वनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे
 अलख निरंजन तिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर
 तुमही, साहिव तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥
 ज्ञाव दयासागर प्रनू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥
 वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव
 इण जस्तमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥
 ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥
 साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अन्नंगो रे ॥
 वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा
 अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल
 थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकवीरनो रे, विरह ते
 केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुज्जनो रे,
 जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम
 वाधे उठहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत
 तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार ठे रे
 ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें
 सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि
 जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
 गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ ज
 व जव आगम संगथी रे, देवचंज पद लीधो रे ॥ वीर
 ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषज समोसरया, जला गुणजया रे ॥
 सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याण
 क तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती०
 ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्या
 विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिनुवनतिलो
 रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणैसर अन्तरजामी, सेव करुं भिन भिन
 में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको
 चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात
 क चित्त धनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे
 अलख निरंजन भिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर
 तुमही, साहिव तीन जुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥
 जाव दयासागर प्रनू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥
 वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव
 इण अरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥
 ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥
 साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥
 वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा
 अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल
 थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय भेदकवीरनो रे, विरह ते
 केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुज्जनो रे,
 जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम
 वाधे उठाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत
 तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार ठे रे
 ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें
 सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि
 जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
 गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ ज
 व जव आगम संगथी रे, देवचंज पद लीधो रे ॥ वीर
 ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रूपज समोसरथा, जला गुणजरथा रे ॥
 सीया साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे, ॥ तीन कल्याण
 क तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती०
 ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जरेतें जराव्या
 विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिनुवनतिलो
 रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं भिन भिन
 में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको
 चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात
 क चित्त धनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे
 अलख निरंजन भिनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर
 तुमही, साहिव तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥
 जाव दयासागर प्रनू रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥
 वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव
 इण भरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥
 ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥
 साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥
 वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहा परहा
 अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल
 थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय ठेदकवीरनो रे, विरह ते
 केम खमाय, जे दीठें सुख ऊपजे रे, ते विण किम

रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुज्जनो रे,
 जव अटवी सठवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यां रे, किम
 बाधे उठाहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पणश्रुत
 तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार ठे रे
 ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें
 सब जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि
 जना रे, जिन पडिमा सुख कंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
 गणधर आचारिज मुनी रे, सहुनें इण परिसिद्ध ॥ ज
 व जव आगम संगथी रे, देवचंज पद लीधो रे ॥ वीर
 ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तव० ॥ ॥ ॐ ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषज समोसरथा, जला गुणजरथा रे ॥
 सीथा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याण
 क तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती०
 ॥ १ ॥ अष्टापदएक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ जस्तें जराव्या
 विंव ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति जलो, त्रिनुवनतिजो
 रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर

पलमें ॥ पास जिणेंसर अन्तरजामी, सेव करं विन विन
में ॥ तुं० ॥ १ ॥ काहूको मनतरुणीशुं राच्यो, काहूको
चित्त धनमें ॥ मेरोमन प्रनु तुमहीशुं राच्यो, ज्युं चात
क चित्त धनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे
अलख निरंजन विनमें ॥ कनक कीर्ति सुख सागर
तुमही, साहिव तीन नुवनमें ॥ तुं० ॥ इति ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥
जाव दयासागर प्रचूर रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥
वीर प्रनु सिद्ध थया संघ सकल आधारो रे ॥ हिव
इण जस्तमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥
॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥
साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥
वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां वाल ज्युं रे, अरहा परहा
अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकूल व्याकुल
थायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय ठेदकवीरनो रे, विरह ते
केम खमाय, जे दीठें सुख उपजे रे, ते विण किम

नी सुणीदेशना । शांतिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्र
 धर राय करावीयो । ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥११॥
 दशरथसुत जगदीपतो । मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी
 श्रीरामचंद्र करावीयो । ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से०
 ॥१२॥ पांनवकहै अम्हेपापीया किमबूटां मोरीमायोजी ।
 कहैकुंतीसेव्रुंजतणी । यात्राकीयां पाप जायोजी ॥ से०
 ॥१३॥ पांचेपांडव संवकरी । सेव्रुंज जेव्यो अपारोजी ।
 काष्टचैत्य बिबलेपना । एबारमो उद्धारोजी । से० ॥१४॥
 मभ्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसे
 व्रुंजैनो संवकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥१५॥
 अछोत्तर सोवरसांगयां । विक्रमनृपथी जिवारोजी । पो
 स्वाडजावड करावीयो । एतेरमो उद्धारोजी । से० ॥१६॥
 संवत बार तिमोत्तरै । श्रीमाली सुविचारोजी । बाहडदे
 सुहतै करावीयो । ए चवदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१७॥
 संवत तेरै इकोत्तरै । देसल हर अधिकारोजी । समरै
 साहकरावीयो । ए पनरमो उद्धारोजी । से० ॥ १८ ॥
 संवत पनर सत्यासीयै । वैशाखवादि सुजवारो जी ।

कर्ममोसी करावीयो । एसोलमो उधारोजी ॥ से० ॥
 ॥ १९ ॥ संप्रतिकालै सोलमो । एवरतैठैउधारोजी ।
 नितनित कीजै वंदना । पामीजै जवपारोजी ॥ से० ॥
 ॥ २० ॥ दूहा । वलिसेत्रुंज महातमकहुं । सांजलो जि
 मठै तेम । सूरिधनेसरइमकहै । महावीरकह्यो एम ॥
 ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी । सेत्रुंजै पुजनीक । जग
 वंतनो वेस वांदतां । लाजहुवैतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुं
 जाऊपरै । चैत्यकरावैजेह । दलपरमाण समोलहै ।
 पल्योपमसुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो । नवो
 नीपावैकोय । जीणोंधार करावतां । आठगुणो फजहो
 इ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागरधरी । त्वात्र करावै नारि ।
 चक्रवर्त्तिनी स्त्रीथई । सिवसुख पामेंसार ॥ ५ ॥
 काती पूनिम सेत्रुंजे । चढिनै करै उपवास । नारकी
 सौसागर समो । करै कर्मनोनास ॥ ६ ॥ कातीपरव
 मोटो कह्यो । जिहां सीधा दशकोनि । ब्रह्म स्त्री वाज
 कहत्या । पापथी नाखैउनि ॥ ७ ॥ सहस्रजाख आ
 वग जणी । भोजन पुन्यविशेष । सेत्रुंज साधु प

भ्रतां । अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ❀ ढाल ॥ ५ ॥
 ॥ ❀ ॥ धन २ अयवंतीसुकुमालनें एहनी ॥ ❀ ॥
 सेत्रुंजैगयां पाप बूटीयै । लीजै आलोयण एमोजी ।
 तप जप कीजै तिहां रही । तीथंकर कह्यो तेमोजी ॥
 ॥ १ ॥ से० । जिणसोनानी चोरीकरी । ए आलोयण
 तासोजी । चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी । एककरै उपवासो
 जी ॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी चोरीकरी । सात आं
 बिल सुध थायोजी । काती सातदिन तपकीयां ।
 स्तनहरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पी
 तल तांबा रजतनी । चोरी कीधी जेणोजी । सातदि
 वस पुरमढकरै । तो बूटै गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से०
 । मोती प्रवाला मूंगीया । जिण चोरया नरनारोजी ।
 आंबिलकरि पूजाकरै । त्रिणटक सुद्ध आचारोजी ॥
 ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया । जे जेटै सिद्ध
 क्षेत्रोजी । सेत्रुंज तलहटीसाधुनै । पडिलाजै सुध
 चित्तोजी ॥ ६ ॥ से० । वस्त्रांनरण जिणैहरया । ते
 बूटै इण मेळोजी । आदिनाथनी पूजाकरै । प्रहज्जुठी

बहुवेजोजी ॥ ७ ॥ से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै ।
 तैसुद्धथायेएमोजी । अधिकोद्रव्य खरचै तिहां । पा
 त्रपोषै बहुप्रेमोजी ॥ ८ ॥ से० ॥ गायत्रैसधोनामही
 । गजनोचोरणहारोजी । द्यैतेवस्तु तीरथै । अरिहंत
 ध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरापार
 का । तिहां लिखै अपणो नामोजी । बूटै ठम्मासीतप
 कीयां । सामायक तिण्णामोजी ॥ १० ॥ से० ॥
 कुंवारी परिव्राजकाः सधव अधव गुरु नारोजी । व्रत
 भ्रांजै तिण्णें कह्यो । ठम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥
 से० ॥ गौ विप्र स्त्री बालक रिषी । एहनोवातक जेहो
 जी । प्रतिमा आगै आलोवतां । बूटै तप करि तेहोजी
 ॥ १२ ॥ से० ॥ ॐ ॥ ढाल ६ कुंमरअलै आवी
 योए ॥ एहनी ॥ ॐ ॥ संप्रतिकालै सोलमोए ।
 एवरतैठैठधार । सेहुंज यात्राकरं ॥ से० ॥ ठहरी
 पालतां चालीयैए । सेहुंज केरी बाट ॥ से० ॥ पालीता
 णें एहुचीयैए । संव मिल्या बहुधाट ॥ २ ॥ से० ॥
 लजित ॥ १ ॥ पेरीयैए । बांजि सत्तानीबाव । से०

तिहां विसरामोलीजियेए । वडनै चौतरै आवि ॥ ३ ॥
 से० ॥ पाली ताणें पाजडीए । चढीयै नठिप्रजात ॥
 से० ॥ सैत्रुंजनदीय सोहामणीए । दूरथकी देखंत ॥
 ॥ ४ ॥ से० ॥ चढीयै हिंगुलाजनें हडैए । कलिकुंड
 नमीयै पास । से० ॥ वारीमांहे पैसीयैए । आणी अंग
 उद्वास ॥ ५ ॥ से० । मरुदेवी द्वंक मनोहरूए । गज
 चढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिनसोलमोए ।
 प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवामै परगनो
 ए । सोमजीसाहमटहार । से० । रूपजी संघवी करावी
 योए । चौमुख मूलउद्धार से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा
 चरचीयैए । जमतीमांहि जलाबिंब । पांचेपांरुवपूजियैए ।
 अदनुतआदिप्रलंब ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतरवसहीखां
 तिसुंए । बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ
 चवरी नमुंए । टालूं अलगनुद्रेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमडु
 वार मांहेनीसरुंए । कुगतिकरुं अतिदूर ॥ से० ॥ आबुं
 आदि नाथदेहरैए । करमकरुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥
 मूलनायक प्रणमुंमुदाए । आदिनाथ जगवंत ॥ से०

देवजहारुं देहरैए । जमतीमांहि जमंत ॥ से० ॥ ११ ॥
 सेहुंजेऊपरि कीजीयैए । पांचेठाम सनात्र । से० । क
 लश अठोत्तरसो करुंए । निरमल नीरसुगात्र ॥ से० ॥
 प्रथम आदीसर आगलेए । पुंरुरीक गणधार ॥ से० ॥
 रायणतलपगजानसुंए । शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥
 ॥ १३ ॥ रायणतलपगजानसुंए । चौमुखप्रतिमाच्यार
 ॥ से० ॥ बीजीचूमि बिंवावलीए । पुंरुरीकगणधार ॥
 से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंमनिहालीयैए । अतिजलीउलका
 जोल ॥ से० ॥ चेजणातलाई सिंधसिलाए । अंगफरनुं
 उछोले ॥ से० १५ ॥ आदिपुरपाजै ऊतरुंए ॥ सिध्व
 रुहुंविसरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करीए । सी
 धावंडितकाम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्राकरी सेहुंज तणी
 ए । सफलकीयो अवतार ॥ से० ॥ कुसलखेमनुं आवी
 योए । संवसहूपरिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेहुंजरात सो
 हामणोए । सांजजज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ वर बैठां ज
 णैजावसुंए । तसुजात्राफलहोइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत
 सोल वयांसीयैए । सावणवदिस्वखकार । से० ॥

ज्ञायो सेतुंजतणोए । नगर नागोर मजार ॥ से० ॥
 ॥ १९ ॥ गिरुवोगठखरतरतणोए । श्रीजिनचंदसुरीस
 । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । सकलचंद सुजगीस
 ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीसजगजाणीयैए । समैसुंदरजव
 जाय । से० । रासरच्यो तिणरूवडोए । सुणतां आणं
 दथाय ॥ से० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसेतुंजरास सं० ॥

॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, प
 णमवि पन्नणिसु सामि साल गोयम गुरुरासो ॥ मण
 णतणु वयणे कंत करवि निसुणहु जो नविया, जिम
 निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबू
 दीव सिरिजरहखित्त खोणी तल मंरुण, मगहदेस सेणि
 यनरेस रिउदल बलखंरुण ॥ धणवर गुवर गामनाम
 जिहां गुणगणसज्जा, विण्ण वसे वसुचूइ तच्च तसु पुहवी
 जज्जा ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइंद नूय नूवलयपसिधो,
 चवंदह विज्जा विवहरूव नारी रस लुधो, विनय विवेक
 विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण

देह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण करचरण जणवि
 पंकजाजपाडियः तेजहि तारा चंद सूरि आकास जमा
 डिय ॥ रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय,
 धीरम मेरु गंजीर सिंधु चंगम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेख
 वि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचियः एकाकी किज
 प्रित्त इव गुण मेल्या संचिय ॥ अहवा निचयपुव जम्म
 जिणवर इण अंचिय, रंजा पत्तमा गवारि गंग रतिहा
 विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय
 जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्रगात्र हीने परव
 रियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहियः
 अणचल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ व
 स्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंभिः खोणीतल मं
 रुणः मगह देस सेणिय नरेसर वरगुबरगाम तिहां, विप्प
 वसे वसजूइः सुंदर तसु पुहवि प्रजाः सयजगुणग शरुव
 निहाण ताणपुत्त विज्ञानिलो, गोयम अतिहि सुजाण
 ॥ ७ ॥ ज्ञास ॥ चरम जिणसर केवलनाणी, चोविहमं प
 इछाजाणी ॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निका
 यहिजुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दी

॥२०॥ इण अनुक्रम गणहररयण थाप्या वीर इग्यार ॥
 तो उपदेसे जुवन गुरु संयमसुं व्रत वार तो ॥ विहुं
 उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो ॥ गोयम
 संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥
 ॥ वस्तु ॥ इंज्रूइ इंज्रूइ चढियो बहुमान, हुंकारो क
 रि कंप तो, समवसरण पहुतो तुरंत तो ॥ जे संसा
 सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो ॥ बोधबीज सं
 जायमनें, गोयम जवहि विरत्त ॥ दिस्क जेई सिरका
 सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुं सु
 विहाण, आज पचेलमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोयम सा
 मि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ समवसरण मजा
 र, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण
 पूढे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजें दीख, तीहां के
 वल ऊपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजै दान
 इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥
 अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥
 जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम

होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सहकारें
 कोयल टहुके, जिम कुसमावन परिमल महके, जिमचं
 दन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिस्थां लहके,
 जिम कणयाचल ते जें जलके, तिम गोयम सोजागनि
 धि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम
 सुरतरुवर कणायवतंसा, जिम महुअर राजीववनें ॥ जि
 म रयणायररयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे,
 तिम गोयम गुरुकेल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जि
 म ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे, पूर
 व दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर
 राजे, नरवड घर जिम मेंगल गाजे, तिम जिनशासन
 मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा जिम
 उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहेए ॥
 जिम नृमीपति नुयवधे चमके, जिम जिनमंदिर वंटा
 रणके, गोयमलवधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि
 कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंठिय काज, कामकुंज
 सह वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे कामी, अष्टमहा

सिद्धि आवे धामी, स्वामी गोयम अणुसरो ए ॥
 ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पन्नीजे, मायावीजो श्र
 वण सुणी जे, श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अ
 रिहंत नमीजे, विनय पहु ज्वझाय थुणीजे, इण मंत्रे
 गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजे.
 देस देसांतर कांय जमीजे, कवण काज आयास करो ॥
 प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समगज ततखिण
 सीजे, नवनिध विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदयसय
 वारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो क
 वित्त उपगारपरो ॥ आदहिमंगल ए पन्नीजे, परव
 महोठव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कट्याण करो ॥
 ॥ ४५ ॥ धन माता जिण ज्यरे धरियो, धन्य पिता जि
 णकुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीरकियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंनार, तसु गुण पुहवीन जप्पइ पार.
 वडजिम साखा विस्तरो ए ॥ गोदलत्वामिनो राम ज
 णीजे, चउविह संव रजियायत कीजे, रिद्धिवृद्धि क
 ट्याण करो ॥ ४६ ॥ हुंहुम चंदन उडो दिवरावो.

होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सहकारें
 कोयल टहुके, जिम कुसमावन परिमल महके, जिमचं
 दन सोगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिस्थां लहके,
 जिम कणयाचल ते जें जलके, तिम गोयम सोजागनि
 धि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम
 सुरतरुवर कणायवतंसा, जिम महुअर राजीववनें ॥ जि
 म रयणायररयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे,
 तिम गोयम गुरुकेल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जि
 म ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमोहे, पूर
 व दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर
 राजे, नखइ घर जिम मंगल गाजे, तिम जिनशासन
 मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा जिम
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहेए ॥
 जिम नृमीपति नुयवधे चमके, जिम जिनमंदिर वंटा
 रणके, गोयमलवधे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि
 कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंजिय काज, कामकुंज
 सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे कामी, अष्टमहा

सिद्धि आवे धामी, स्वामी गोयम अणुसरो ए ॥
 ॥ ४२ ॥ पणवरकर पहिलो पन्नीजें. मायावीजो श्र
 वण सुणी जें, श्रीमिति सोना संजवो ए ॥ देवां धुर अ
 रिहंत नमीजें, विनय पहु उवझाय थुणीजें. उण मंत्रें
 गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजें.
 देस देसांतर कांय जमीजें. कवण काज आयास करो ॥
 प्रह ऊठी गोयम समरीजें. काज समगज ततखिण
 मोजें. नवनिध विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ खदयस्य
 नारोत्तर वरसें. गोयम गणहर केवल दिदमें. कीयो क
 वित्त उपगारपरो ॥ आदहिमंगल ए पन्नीजें. परह
 महोहव पहिलो दीजें. रिद्धि वृद्धि कळ्यास करो ॥
 ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उये धरियो. धन्य पित्त जि
 णकुज अवतरियो. धन्य सुगुरु जिण दीगियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंकार. तह उण इहवीन ज्ञान सार
 योजिम साखा विस्तरो ए ॥ गोपसन्दाहितो गन न
 णीजें. चढविर संद गजियापन कीजें. रिद्धि वृद्धि क
 ल्यास करो ॥ ४६ ॥ हंकार चंदन उजे दिगयो

(२५६)

एक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए ॥
तिहां वेठी गुरु देशना देसी, जविक जीवनां काज सरे
सी, नित नित मंगल उदय करो श्रीसंघसकल आनंद
करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो रास संपूर्णम् ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूखां
जोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत
बसे, लब्धि तणा जंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियं, मन
वांछित दातार ॥ २ ॥ पुंरुरीक गोयम मुहा, गणधर
गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमतां, चवदेसे बावन्न ॥
॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सबजद्धि सं
प णं ॥ वीरस्स पढमसीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥ ४ ॥
सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाजीष्टार्थ दायिने ॥ सर्व लब्धि
निधानाय, गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ इति श्री श्रावकस्य पंच प्रतिक्रमणादि
सूत्राणी समाप्तानिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदादाजी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरखण दो असवारी । इस चाखमें ॥ ❀ ॥

धारा दरशणकी वलिहारी, कुशल गुरु, दरशग दो सु-
खकारी । में तो वारी जाउं वार हजारी ॥ कु० ॥ टेर ॥

मरुमण्डल समियाणा ग्राम में । मंत्रि जिल्लागर भारी ।
जैतसिरी सती कूखे उपना । प्रगज्या जग दिनकारी ॥ कु०

॥ १ ॥ सन् तेरेसै तीसे जनम्या । द्वितिय चंद्र मनुहारी ।
तेरैसे सैताले संजम । तप जप ध्यान संभारी ॥ कु० २ ॥

श्रीजिनचंद सूरि गुरु पट्टे । पाटणमें हितकारी । सूरिपद
ततहत्तर वरपे । कुशल सूरिंद अवतारी ॥ कु० ३ ॥ ग्राम न-

गर पुर पट्टण विचरी । बहु भविकाज सुधारी । समकिन
श्रावक केईव्रत धारक । ज्ञान क्रिया चितधारी ॥ कु० ४ ॥

अहुत रूप अनोपम महिमा । वचन कला उपगारी । सत्य
शील संतोष महागुण । सहजग आनंद कारी ॥ कु० ५ ॥

सन् तेरेसे नयांसी कागुण । दर्श देवपदधारी । कागुण सुद
पूनम दिन संघने । दरशण दियी उपगारी ॥ कु० ६ ॥

ग्राम नगर सह संघने परतिख । परचा दे मन धारी । देश
देशमें चरण थापना । बीनी भक्ति प्रचारी ॥ कु० ७ ॥ तु-

सेवत सह संपदपावे । जस कीरति अविचारी । विरुद

